NOT FOR SALE

कर्म वर्चस्व सिद्धि संन्यास विशेषांक

नवम्बर 2005

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

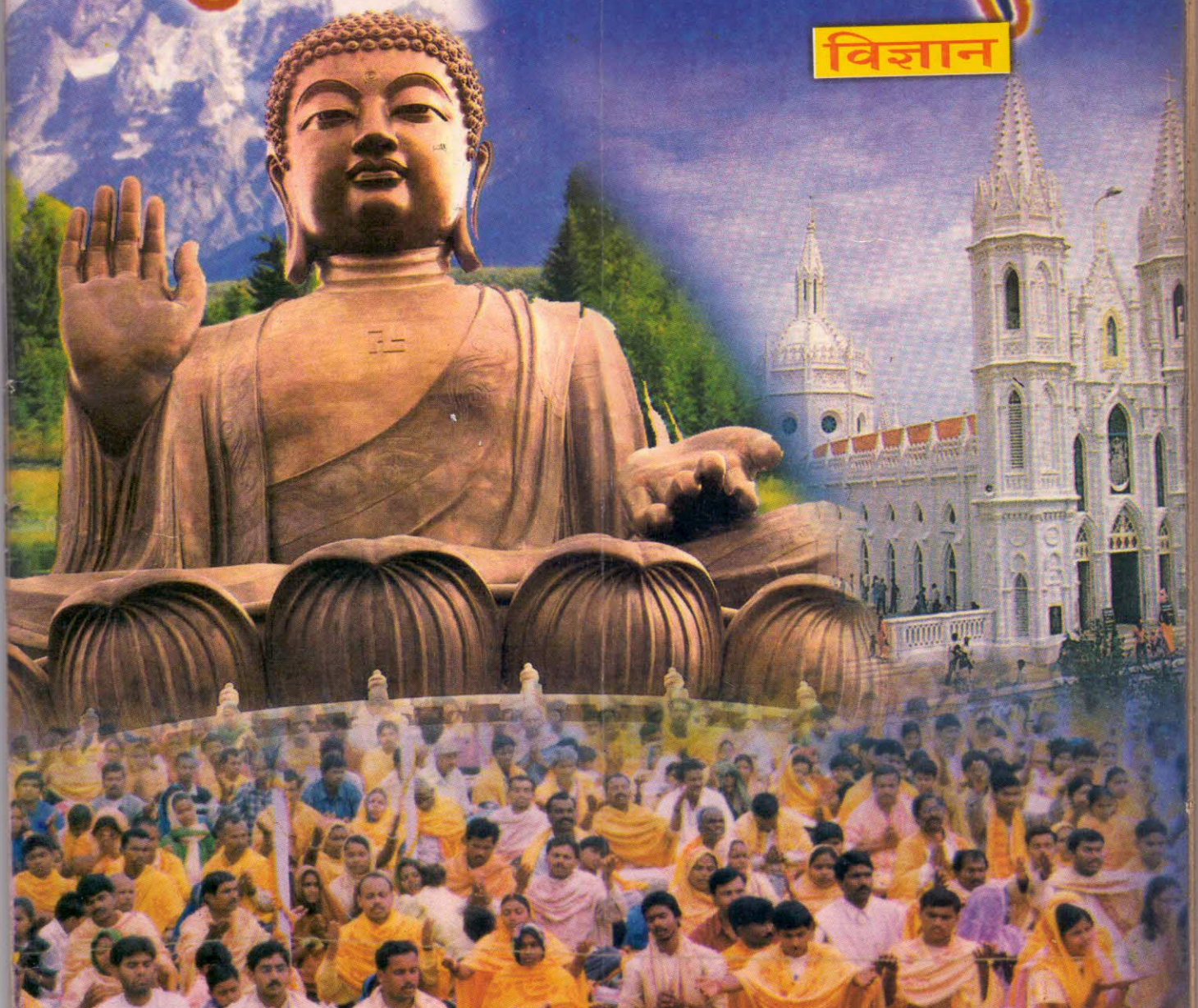

सौन्दर्यवर्धन साधना

भैरव-बटुक-उन्मत्त-महाकाल

भूत-पिशाच तो आपके सेवक हैं

पूर्णमिदः पूर्णमिदं दीक्षा

A Monthly Journal

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

स्वस्थ देह आधार है स्वस्थ मन का
स्वस्थ मन आधार है क्रिया, साधना सिद्धि का

धारण कीजिए

देह सिद्धि गुटिका

जो रसराज पारद से निर्मित असीमित देह बला, देह शुद्धि एवं बल, वीर्य ओज रस की प्रदायक है

रसराज देह सिद्धि का तात्पर्य पारद को इस प्रकार से संस्कारित करना है, कि जिसके सेवन, धारण से यह शरीर समस्त प्रकार की व्याधियों से मुक्त हो सके, वृद्धावस्था समाप्त हो सके और पूरा शरीर दिव्य, चैतन्य, तेजस्वी और लोहे की तरह मजबूत हो सकें।

ससकः सर्वमोहघ्नः कफपित्तविनाशनः।
नैत्ररोगक्षयघ्नश्य लोहपारदअंजनः॥
नागार्जुनेन सदिष्टौरसश्च रसकावुभौ।
श्रेष्ठो सिद्धरसो ख्यातौ देहलौकरौ परम्॥

अर्थात् पारे को अभ्रक चूर्ण में पका कर अम्ल में सुरस रस भावना दी जाय और फिर इसे खल कर कोष्टी यंत्र में अग्नि ताप दिया जाय, लगभग तीन घण्टे तक ऐसा करने पर पारद सूर्य के समान दिव्य और तेजस्वी हो जाता है, ऐसे पारद का नित्य चौथाई रत्ती सेवन किया जाये तो एक महीने में ही पूर्ण रूप से देह सिद्धि हो जाती है और उसका शरीर लोहें की तरह मजबूत सोने की तरह तेजस्वी और अपने आप में दिव्य आभायुक्त बन जाता है। यह विधि तो अत्यन्त जटिल एवं पारद संस्कार में प्रणीत वैद्य द्वारा ही आसवित की जा सकती है। लेकिन साधक शुद्ध पारद निर्मित देह सिद्धि गुटिका अवश्य धारण कर सकता है। यह गुटिका देह के निरन्तर स्पर्श में रहे।

देह सिद्धि गुटिका के लाभ

- देह सिद्धि गुटिका धारण करने से देह की क्रिया शक्ति जाग्रत हो जाती है तथा देह की एक-एक मांसपेशी स्वस्थ एवं जाग्रत हो जाती है।
- देह सिद्ध गुटिका से शरीर का मोटापा-थुलथुला पन गायब होने लगता है।
- देह सिद्ध गुटिका धारण कर नित्य योगाभ्यास किया जाय तो चेहरे की चमक बढ़ने लगती है और प्रभा मंडल का विकास होता है।
- पुरुष देह में चौड़ी छाती, उन्नत भाल, मजबूत भुजाएं, श्रेष्ठ मानी गई है तो स्त्रियों में उन्नत उरोज, पतली कमर पुष्ठ नितम्ब, कदली तने के समान जंघाए श्रेष्ठ मानी गई है और यह संभव है देह सिद्धि गुटिका धारण कर नियमित मंत्र जप, साधना और योग व्यायाम से।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

M 9831146998
Received on 31/12/05
Mr No 36252
Satyadev Panchal
P.41 Princeep Street Kol 72

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

स्तम्भ

गुरुवाणी 44
शिष्य धर्म 46
मैं समय हूं 62
वाराहमिहिर 63
जीवन सरिता 64
नक्षत्रों की वाणी 66
इस मास दिल्ली में 80
एक दृष्टि में 86

वर्ष 25 अंक 11
नवम्बर 2005 पृष्ठ 88

साधना

बटुक भैरव साधना 27
उन्मत्त भैरव साधना 28
काल भैरव साधना 29
कार्तिकेय साधना 30
सौन्दर्योत्तमा साधना 32
साधना-उपकरण-यंत्र 37
तीव्र भद्रकाली साधना 42
मधुमति मंजुल साधना 47
शंशाक चन्द्र सिद्धि अखण्ड सौभाग्वती साधना 50
भूत साधना 55
Surya Sammohan Sadhana 82
Maha Lakshmi Sadhana 83
Brahmastra Sadhana 84
Anand Tandav Sadhana 85

स्तोत्र

भगवती तारा महाविद्या स्तोत्र 75
भगवती तारा महाविद्या कवच 77

विवेचन

स्वर्णिम सूत्र 23
भैरव 25
चातुर्मास प्रव्रत तप 69

दीक्षा

गुरु कृपा प्रदत्त पूर्णमिदः पूर्णमिदं दीक्षा 71

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड़, नई दिल्ली-87
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रतिः 18/-
वार्षिकः 195/-

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोनः 011-27182248, टेली फैक्सः 011-27196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोनः 0291-2432209, टेली फैक्सः 0291-2432010
WWW address – **http:/www.siddhashram.org** E-mail add. – **mtyv@siddhashram.org**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद–विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

सं सं संन्यास सिद्धिः सकल परित्याग हिंसाहिंसः
चिन्त्यमात्मस्वरूपं सतत् निष्ठयाविध्द चतेः परेशं
धर्मानुष्ठान निरतः स्वगत परगतंलाभ नित्यं विरामः
एवं वर्चस्व रूपः भवति च निखिलं जाग्रतः जीवनस्य।

सभी हिंसा एवं अहिंसा से विरक्त, निरन्तर, आत्म एवं परमात्म चिन्तन में निष्ठापूर्वक संलग्न, धर्मानुष्ठान में संलग्न रहते हुए। किसी भी स्वार्थ से परे होने पर संन्यास की सिद्धि होती है। इस प्रकार जीवन में जाग्रत व्यक्तित्व को निखिल वर्चस्व सिद्धि प्राप्त होती है।

☆ अपने भीतर खोजो ☆

जब ईश्वर ने अपनी सारी सृष्टि का सरताज मनुष्य को बनाया, तो उसने तमाम आशीर्वादों की उस पर बौछार कर दी। प्रत्येक मनुष्य को अपनी-अपनी खुशियों का खजाना दिया गया।

अफसोस! मनुष्य ने उस अनुपम उपहार को दुरुपयोग किया। इससे सृजक निराश हो गया। उसने देवताओं की एक सभा बुलाकर उसके समक्ष यह समस्या रखी। मनुष्य को इस उपहार के मूल्य का बोध करवाने के लिये क्या किया जाये?

एक देवता बोला, ''बिल्कुल सरल बात है, आप इसे वापिस ले लें आपने ही यह उपहार दिया है और मनुष्य को दिया उपहार आपका ही है।''

ईश्वर बोले, ''कभी नहीं। उपहार तो दिया जा चुका है और देने वाले को वापिस लेना शोभा नहीं देता।''

दूसरे देवता ने सुझाव दिया, ''चलो इसे ऐसे स्थान पर छुपाते हैं जहां मनुष्य इसे पा न सके।''

''वह स्थान कौन सा है?''

एक बोला, ''समुद्र के तल पर।''

भगवान ने कहा, ''मनुष्य समुद्र की गहराई में गोता लगाकर इसे पा लेगा।''

''चलो इसे पृथ्वी के बिलकुल बीचों-बीच दबा देते हैं।''

भगवान बोले, ''मनुष्य ऐसी मशीनों का अविष्कार कर लेगा, जो भूमि के अन्तरमय भाग में पहुंचकर उसे निकाल लेगा।''

इस प्रकार यह चर्चा चलती रही। ईश्वर एक सुझाव के बाद दूसरा नकारते रहे और अंत में उन्हें स्वयं ही एक हल सूझा।

सर्वज्ञाता बोले, ''इसे मनुष्य के भीतर ही छिपाते हैं। मनुष्य अपने बाहर निरंतर प्रसन्नता ढूँढ़ता रहेगा जबकि यह सदा उसके भीतर विद्यमान होगी।''

केवल वह व्यक्ति जो अपने भीतर गहरे पैठेगा, वही निष्ठापूर्वक प्रसन्नता का खजाना पा सकेगा और वैसा ही हुआ।

यह तो घर है प्रेम का ध्यान धारण्य समाधि का

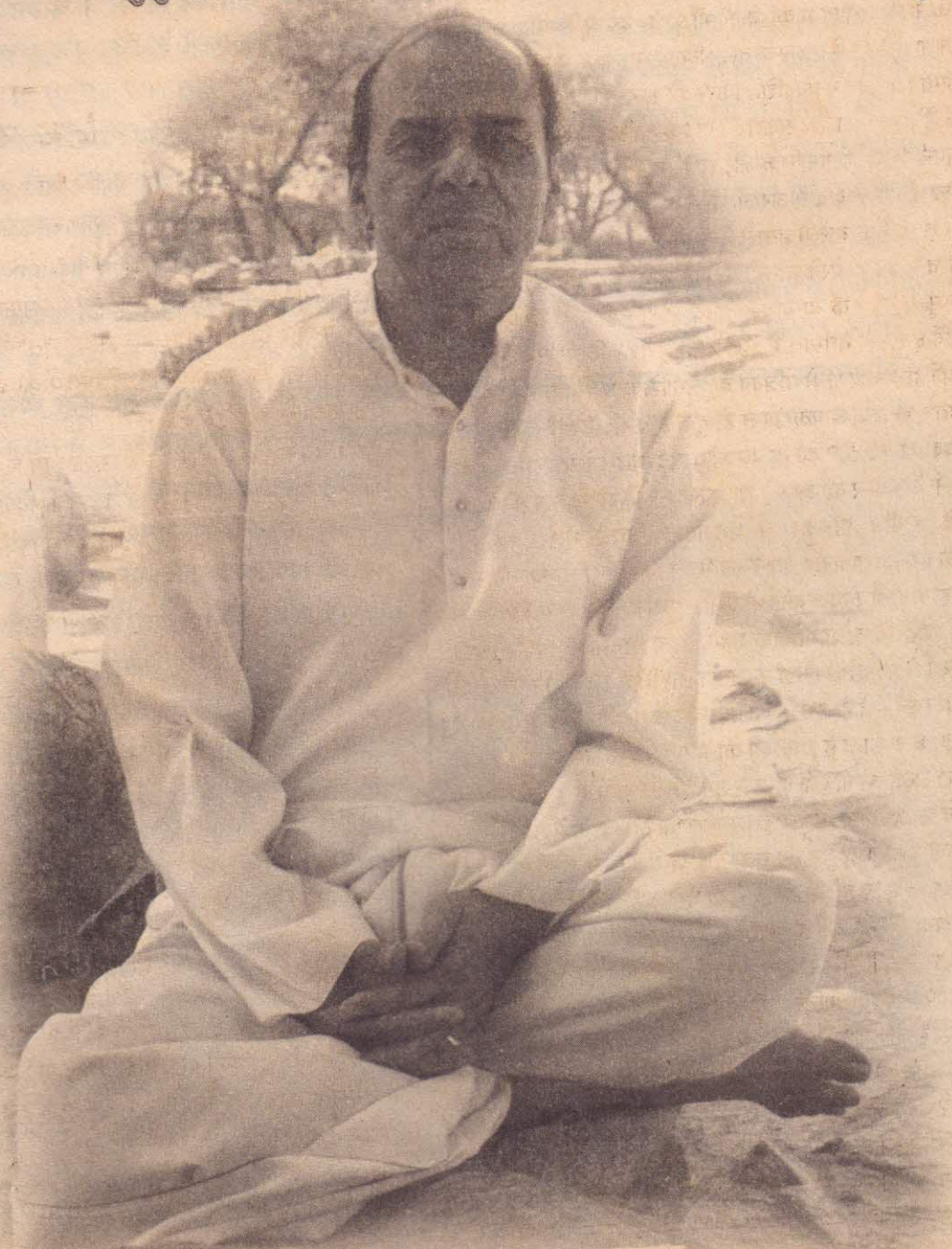

आज मैं आपको हिमालय की उन उपत्यकाओं में सैर कराना चाहता हूं, हिमालय की उन बीहड़ पगडण्डियों पर आगे बढ़ाना चाहता हूं, जो कैलाश की ओर जाती है, जो भगवान शिव से सायुज्य प्राप्त करने की आकांक्षा रखती है।

आज मैं आपको उन नदी, नालों, पठारों और पर्वत की चोटियों पर ले जाना चाहता हूं, जो बर्फ से मंडित विश्व के ताज की तरह अद्वितीय प्रतीत होती हैं... क्योंकि ये पगडण्डियां और ये रास्ते चाहे ऊबड़-खाबड़ हों, चाहे कांटिल हो, चाहे इस रास्ते पर टेढ़े-मेढ़े पत्थर पड़े हुए हो, परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि इन रास्तों का जो समापन है, वह अद्भुत है, पूर्ण आनन्द युक्त है, पूर्णता देने वाला है, और वहां पहुंच कर पूरी यात्रा की थकान अपने आप में समाप्त हो जाती है।

ऐसा लगने लगता है, कि जैसे हमने अपने जीवन की कोई पूंजी प्राप्त कर ली हो, कोई निधि अनुभव कर ली हो, और उस पूंजी को प्राप्त करने के लिए, उस सम्पत्ति को हस्तगत करने के लिए कुछ यंत्रणा, कुछ परिश्रम, कुछ तकलीफ देखनी पड़ती है।

उन रास्तों पर पैर लहूलुहान होते हैं, उसमें थकावट आती है, तो आती है, यदि इस रास्ते पर धूप को सहन करना पड़ता है, तो करना पड़ता है, इसलिए करना पड़ता है कि इस यात्रा का प्रारंभ चाहे कैसा भी रहा हो, मगर इस का समापन अनिर्वचनीय है, अलौकिक है। इस यात्रा को ध्यान, धारणा और समाधि कहा गया है।

जहां जीवन का प्रारंभ ध्यान से होता है, वहां जीवन का समापन समाधि से होता है। ध्यान जीवन का एक अनिवार्य और आवश्यक तत्व है। पहले हम इस बात का विवेचन करें, चिंतन करें कि आखिर इस जीवन का मकसद, मतलब क्या है?

जीवन का तात्पर्य है - वह सब कुछ करना, जो हमारे हाथ में नहीं है, वह सब कुछ हस्तगत करना, जो अखण्ड, आनन्द को देने में सहायक है।

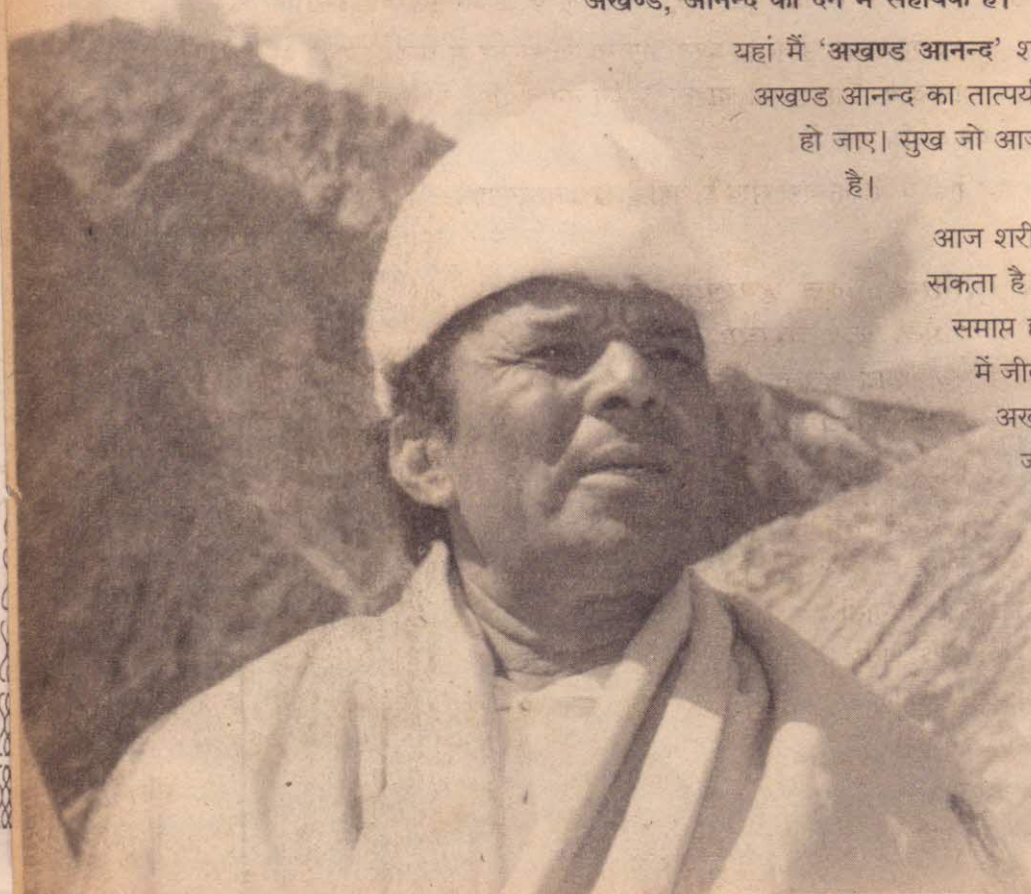

यहां मैं '**अखण्ड आनन्द**' शब्द का प्रयोग कर रहा हूं। अखण्ड आनन्द का तात्पर्य है जो बीच में समाप्त नहीं हो जाए। सुख जो आज है, कल समाप्त हो सकता है।

आज शरीर स्वस्थ है, कल बीमार हो सकता है। आज पैसा है, कल पैसा समाप्त हो सकता है। यह तो टुकड़ों में जीवन जीने की एक प्रक्रिया हुई, अखण्ड जीवन नहीं हुई। अखण्ड जीवन तो केवल आनन्द के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है... और आनन्द का तात्पर्य है, जहां किसी प्रकार का राग, द्वेष, छल, झूठ, असत्य, व्यभिचार, दुःख, चिन्ताएं, परेशानियां और बांधाए नहीं हों।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

-नहीं हों, यह बहुत बड़ी बात है, ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि मानव जीवन इतना जटिल और दुर्बोध हो गया है, इतना कठिन और परिश्रम पूर्ण बन गया है कि पग-पग पर कई बाधाओं और परेशानियों का सामना करना पड़ता है। फिर भी आदमी उस आग से गुजर कर जो कुछ प्राप्त करता है, वह एक बहुत छोटी सी बात होती है।

-चांदी के चंद रुपये, पुत्र और पत्नी, सम्बन्धी, स्वजन, ऐश्वर्य, मकान और वैभव ये सब तो नश्वर हैं, इसलिए नश्वर हैं, क्योंकि ये आप हैं, तब तक हैं, यदि आप नहीं हैं तो फिर इनका भी कोई अस्तित्व नहीं है।

आप जिस दिन जीवन यात्रा समाप्त कर लेंगे, उस दिन आपके पास इस शरीर में से एक मुट्ठी भर राख के अलावा कुछ प्राप्त होगा ही नहीं। आप अपने पूर्वजों को न कुछ दे पाए और न आने वाली पीढ़ियों को एक मुट्ठी भर राख के अलावा कुछ दे पायेंगे।

आपके पास कुछ रहेगा नहीं, क्योंकि आप जो कुछ अनुभव कर रहे हैं, जो कुछ आपने उपार्जित किया है, वह तो क्षण भंगुर है, इसलिए क्षण भंगुर है, क्योंकि आप हैं, तब वह है, यदि आप समाप्त हो जाते हैं, तो वह स्वतः ही आपके लिए समाप्त हो जाते हैं।

यह आपके जीवन का अस्तित्व नहीं है, और आपके जीवन का भाग भी नहीं है... भाग नहीं है, इसलिए इसको आनन्द नहीं कहा जा सकता, इसलिए इसको अखण्ड नहीं कहा जा सकता - और मैंने शब्द प्रयोग किया था **'अखण्ड आनन्द'**।

अखण्ड आनन्द का तात्पर्य है - एक ऐसा आनन्द, जो संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक समान उपयोगी और अनुकूल है। सुख तो प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग हो सकता है, कुछ व्यक्ति धन प्राप्त करने में सुख अनुभव करते हैं, कुछ व्यक्ति अपने शरीर को मजबूत और तन्दुरुस्त बनाये रखने में सुख अनुभव करते हैं; तो कुछ भोग विलास में सुख अनुभव करते हैं और कुछ मार-पीट, छल-कपट में सुख की अनुभूति करते हैं।

सुख तो प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग होता है, परंतु आनन्द तो संसार में प्रत्येक प्राणी का एक जैसा ही होता है। प्रत्येक व्यक्ति उस आनन्द को प्राप्त करना चाहता है, जो तनाव रहित हो, जहां किसी प्रकार का टेन्स नहीं हो, जहां किसी प्रकार की व्याधि नहीं हो।

और सुख की परिभाषा शास्त्रों में की है कि जहां सुख है, वहां दुःख अवश्यम्भावी है। भृर्तहरि ने कहा है कि

भोगे रोगभयं, कुले च्युतिभयं, वित्ते नृपालाद् भयं,
मौने दैन्य भयं, बले रिपु भयं, रूपे जरायाः भयं।
शास्त्रे वादभयं, गुणे खल भयं, काये कृतान्ताद् भयं,
सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयं॥

अगर भोग है, तो रोग की चिन्ता हर क्षण बनी रहती हैं, क्योंकि जहां भोग है, वहां रोग होगा ही। जहां कुल है, जहां समाज है, वहां हर समय आशंका रहती है कि कहीं बदनामी नहीं हो जाए। उस समाज में निश्चिंतता से आदमी नहीं घूम सकता, हर क्षण उसको भय रहता है कि कहीं मेरा कार्य ऐसा नहीं हो जाए, जो अपने-आप में मेरे लिए परेशानी का कारण बन जाए।

- और यदि हम बिल्कुल मौन रहते हैं, ज्यादा नहीं बोलते हैं-तो लोग यह समझते हैं कि यह व्यक्ति विद्वान नहीं है, शास्त्रों का जानकार नहीं है, मूर्ख है।

- इस बात की भी चिन्ता रहती है कि ऐसा नहीं हो जाए कि लोग हमें दैन्य कहने लगें, मूर्ख कहने लगें, इसलिए मौन रहना उससे भी अधिक तकलीफदायक हो जाता है... और यदि बलवान है, शरीर स्वस्थ है, तंदुरुस्त है, तो इस बात की हर समय आशंका रहती है कि कोई बलवान आ करके मुझे पछाड़ नहीं दे, बदनाम नहीं कर दे, गिरा नहीं दे, पराजित नहीं कर दे।

एक प्रकार से देखा जाए, तो प्रत्येक सुख के पीछे एक दुःख लगा हुआ है, और जहां दुःख है, वहां तनाव है, वहां आशंकाऐं हैं, वहां दुश्चिन्तता है, इसलिए सुख तो अपने आप में कोई महत्वपूर्ण वस्तु नहीं है।

इसलिए महत्वपूर्ण वस्तु नहीं है, क्योंकि उसके तीन हेतु हैं-सुख एक मृग हेतु हैं-सुख एक मृग मरीचिका है, जो आज है कल नहीं है। सुख क्षण भंगुर है, कुछ क्षणों के लिए सुख प्राप्त हो सकता है... और वह सुख देने वाली वस्तु ही दुःख का कारण बन सकती है।

जो पत्नी हम लाते है, वह सुख का कारण है, यदि वह कर्कशा निकल जाती है, तो वही दुःख का कारण बन जाती है। जो सम्पत्ति हमने उपार्जित की, वह सुख का कारण तो है, मगर हर समय यह आशंका बनी रहती है कि कोई उसे चुरा नहीं लें, वह स्वतः ही दुःख का कारण भी बन जाती है, इसलिए सुख अपने आप में कोई महत्वपूर्ण, मूल्यवान वस्तु नहीं है।

मगर अखण्ड आनन्द की अनुभूति अपने-आप में महत्वपूर्ण, अनिर्वचनीय और अद्भुत तत्व है। एक ऐसा तत्व है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है। वह चाहता है कि वह तनाव रहित हो, वह चाहता है कि उसके मन में किसी प्रकार की चिन्ताएं नहीं हो, वह चाहता है कि किसी प्रकार का दुःख नहीं हो, वह यह चाहता है कि किसी प्रकार का रोग, भय या कलह की स्थिति नहीं बने।

और साधन जुटाने मात्र से अखण्ड आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता, धन के माध्यम से आनन्द नहीं खरीदा जा सकता, ताकत के माध्यम से आनन्द पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, बुद्धि और चतुराई से हम आनन्द को हस्तगत नहीं कर सकते।

आनन्द ऐसी वस्तु नहीं है, जिसे प्राप्त किया जा सके, आनन्द तो हृदय के अंदर से निकलने वाली ऊर्जा को कहते हैं। हृदय के अंदर से एक रस प्रवाहित होता है, एक ऊर्जा प्रवाहित होती है, एक चैतन्यता प्रवाहित होती है, एक ऐसी स्थिति प्रवाहित होती है, जो अपने-आप में निमग्न कर सकती है, जो मस्त कर देती है, जो बेसुध कर देती है, पागल कर देती है। वह अपने ख्यालों में, अपनी ही मस्ती में झूमता रहता है, और उसे वह सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जो जीवन का आवश्यक तत्व और गुण है।

व्यक्ति का सारा तत्व सारी इच्छाएं और आकांक्षाएं इस बात में है कि उसको सुख, सौभाग्य, धन, यश, मान, पद और प्रतिष्ठा मिले, मगर इसके साथ ही साथ तनाव नहीं हो, इसके साथ ही साथ उसे किसी प्रकार की चिन्ताएं नहीं हो, किसी प्रकार की मन में दुश्चिन्तता नहीं रहे, भय नहीं रहे, आक्रान्तता नहीं रहे।

जब मन प्रसन्न होता है, तब आनन्द का प्रारंभ होता है। जब मन प्रसन्न होता है, तो आनन्द की अनुभूतियां

होती है। जब मन प्रसन्न होता है तब जीवन में एक उद्वेग होता है, एक प्रवाह होता है, उस प्रवाह को, उस उद्वेग को आनन्द कहा गया है।

अगर यह आनन्द जीवन का इतना आवश्यक अंग है, तो यह आनन्द किस प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है, कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

मैंने जैसे बनाया कि यह आनन्द रुपयों के माध्यम से तो नहीं खरीदा जा सकता, ताकत के माध्यम से भी जीता नहीं जा सकता, इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए तो अपने हृदय का मंथन करना पड़ेगा, हृदय में रस प्रवाहित करना पड़ेगा, हृदय में उस रस का प्रवाह देना पड़ेगा, जिसके माध्यम से एक असीम आनन्द, एक तनाव रहित जीवन, अपने आप में चिन्तामुक्त जीवन की स्थिति बन सके... यह चिन्तामुक्त जीवन जीने की कल्पना है, जो क्रिया है, वही अपने-आप में 'ध्यान' की प्रक्रिया है। इसलिए हमारे सारे उपनिषदों में ध्यान को एक महत्वपूर्ण तथ्य माना है।

मानव जीवन दो भागों में बंटा हुआ है, एक उसका बाह्य जीवन है और दूसरा उसका आंतरिक जीवन है। व्यक्ति अपने बाह्य जीवन से ज्यादा परिचित है, अपने समाज से परिचित है, अपनी पत्नी, पुत्र, बंधु, बांधव से परिचित है, अपने पड़ोसियों से परिचित है, अपने रुपयों-पैसों से, अपने व्यापार से, व्यापार की बारीकियों से तो परिचित है, मगर अपने आंतरिक जीवन से बिल्कुल अनभिज्ञ है, अनजान है, कोरा है... क्योंकि उसने कभी कोशिश नहीं की जानने की, कि मेरा आंतरिक जीवन भी मेरे जीवन का एक आवश्यक बिन्दु है। जितनी बाह्य जीवन की आवश्यकता और अनिवार्यता है, उतनी आंतरिक जीवन की भी आवश्यकता और अनिवार्यता है।

मगर उसको इस बात का ज्ञान इसलिए नहीं है, क्योंकि उसको कभी इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी गई। स्कूलों और कॉलेजों में कभी इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी जाती। शिक्षक इस चीज को नहीं दे सकते और यह ज्ञान उनके माता पिता को, परिवार को, स्वजन को, सम्बन्धियों को, पड़ोसियों को, रिश्तेदारों को भी नहीं है, तो वे इसका ज्ञान नहीं दे सकते।

नहीं दे सकते, तो उसको जीवन... आधा जीवन भले ही सफल हो जाए, बाह्य जीवन भले ही उसका सफल हो जाए, मगर आंतरिक जीवन अपने आप में वैसा का वैसा बना रहता है, जैसा वह लेकर आता है।

और जब तक आंतरिक जीवन की पूर्णता प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक जीवन तनाव रहित नहीं बन सकता, आनन्द की अनुभूतियां नहीं हो सकती, मानसरोवार में लहरें नहीं उठ सकती, जीवन में एक प्रवाह नहीं बन सकता, आंखों में एक चमक, एक प्रसन्नता का भाव नहीं बन सकता।

आंखों में एक प्रसन्नता, एक चमक, एक ओज, एक स्फूर्ति, एक क्षमता, एक धैर्य और एक मग्न रहने की प्रक्रिया केवल आनन्द के माध्यम से ही संभव है, और वह आनन्द केवल ध्यान के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

इसलिए जहां बाह्य जीवन में सफलता प्राप्त करना सामाजिक दृष्टि से आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार से अपनी पूर्णता की प्राप्ति के लिए, अपने

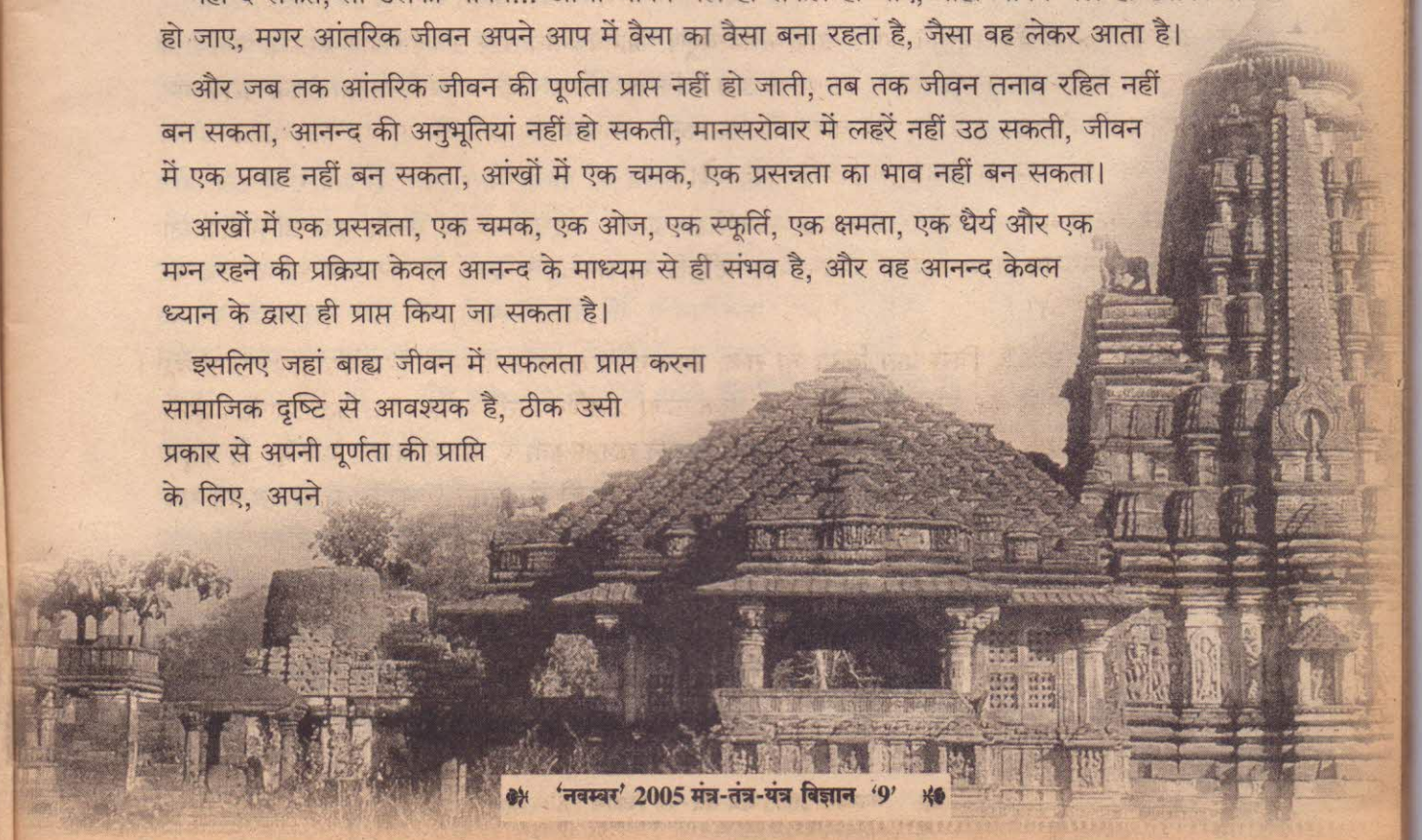

आनन्द की प्राप्ति के लिए, तनाव रहित जीवन जीने के लिए आंतरिक जीवन को समझना और आंतरिक जीवन में प्रवेश करना भी आवश्यक और अनिवार्य है।

आंतरिक जीवन के बारे में हम उतने ही कमजोर और कोरे है, जितने जन्म के समय में थे। इसलिए कि हमारे जीवन में कोई गुरु मिला नहीं, किसी ने हमारा हाथ नहीं पकड़ा, किसी ने रास्ते पर चलते हुए टोका नहीं, किसी ने हमारे कंधे पर हाथ नहीं रखा, किसी का वरद हस्त हमारे सिर पर रहा नहीं, किसी ने हमें समझाया नहीं कि तुम्हारे जीवन का आंतरिक तत्व ज्यादा महत्वपूर्ण, ज्यादा मूल्यवान, ज्यादा सार्थक है, ऐसा किसी ने बताया नहीं।

- और नहीं बताया, तो हम बेतहाशा उन तृष्णाओं के पीछे भागते चले जाते हैं, जिनकी यात्रा मृत्यु और श्मशान पर जाकर समाप्त होती है।

ऐसा जीवन जीने से क्या फायदा है? ऐसे जीवन का अर्थ व उपयोगिता क्या है? ऐसा जीवन में क्या लाभ होगा? वह जीवन तो अपने-आप में नश्वर है, व्यर्थ है? मरने के बाद उस जीवन की कोई उपयोगिता, कोई मूल्य नहीं रह जाता। इसलिए अपने आंतरिक जीवन में प्रवेश करने की क्रिया का एक धर्म है, जीवन एक यथार्थ है, जीवन का एक चिन्तन है।

इसलिऐ आप इस जीवन के जिस पड़ाव पर हैं, जिस पगडण्डी पर हैं, जहां पर आप खड़े हैं, चाहे आप बीस साल की अवस्था में हैं, चाहे आप पचास साल की अवस्था में हैं, चाहे आप पुरुष हैं, चाहे आप स्त्री हैं, चाहे आप अच्छे हैं, चाहे आप बुरें हैं - एक क्षण यहां रूककर सोचना ही पड़ेगा कि ऐसा तो नहीं है कि हम आधा जीवन ही जी रहे हैं? ऐसा तो नहीं है, कि आधा जीवन हमारा कोरा का कोरा ही रह गया है? ऐसा तो नहीं है कि इस आधे जीवन के बारे में हमें कोई ज्ञान है ही नहीं... और यदि ज्ञान नहीं है, तो फिर उस आधे जीवन को जी कर ही क्या लाभ हो जायेगा?

कुछ रुपये आप मरने के बाद अपने बेटों के लिए छोड़ भी जायेंगे, यदि आप बहुत मोटा ताजा शरीर लेकर भी समाप्त हो जायेंगे तो क्या हो जायेगा? यदि चार-छः मकान जोड़कर खड़े हो जायेंगे और मर जायेंगे तो क्या हो जायेगा?

वह तो जीवन का आधा भाग हुआ, हो सकता है उस आधे भाग में सुख की अनुभूतियां हुई होगी, कुछ संतुष्टि मिली होगी, कुछ एहसास हुआ होगा कि मेरे पास सम्पत्ति है, मेरे पास धन है, मेरे पास वैभव है, मेरे पास विलास है, पर वह सब कुछ नहीं है... वह सब कुछ तो जीवन के अंदर उतरने की क्रिया के द्वारा ही संभव है।

इसलिए जहां बाहरी जीवन, बाहरी परिवेश है, बाहरी लोगों से सम्पर्क स्थापित हैं, पड़ोसियों से, सम्बन्धियों से, मित्रों से, ठीक उसी प्रकार से हमें आंतरिक जीवन में अपने अंदर उतरने की प्रक्रिया का भाव होना चाहिए।

हम अंदर उतरने की क्रिया सम्पन्न करें, हम और गहराई के साथ अंदर उतरें, और जितना हम अंदर उतरेंगे, उतनी ही हमें जीवन में पूर्णता प्राप्त हो सकेगी,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

क्योंकि अंदर उतरने की क्रिया का ज्ञान केवल सद्गुरु के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है, अंदर उतरने की क्रिया का ज्ञान केवल चेतना के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है। गुरु ही हाथ पकड़कर समझा सकता है कि तुम्हारे जीवन में ध्यान की प्रक्रिया एक आवश्यक और अनिवार्य तत्व है।

ध्यान का तात्पर्य है कि हम निश्चल, निर्विकार भाव से एक स्थान पर बैठ जाएं, चाहे प्रातःकाल का समय हो, चाहे सायंकाल का समय हो, कोई भी समय हो। हम उस स्थान पर बैठें, जहां किसी प्रकार का शोरगुल नहीं हो। इसके लिए सूर्योदय का समय सबसे ज्यादा उपयुक्त रहता है, क्योंकि उस समय कोलाहल कम होता है, हो-हल्ला कम होता है।

यदि हम उस समय शांत चित्त और निर्विकार भाव से बैठें और धीरे-धीरे अपने नेत्र बंद करके बाहरी समाज से अपने सम्बन्ध तोड़ दें, किसी भी प्रकार का मन में विचार नहीं लायें, धीरे-धीरे अन्दर उतरने की क्रिया करें, और ऐसा अनुभव करें कि मैं अंदर उतर रहा हूं ऐसा विचार करें कि मैं और अंदर जा रहा हूं। हो सकता है कि प्रारंभ में आपको इसमें सफलता नहीं मिले, हो सकता है कि प्रारंभ में आप ऐसा एहसास करें कि ऐसा कुछ हो तो नहीं रहा है, मगर ऐसा नहीं है कि कुछ नहीं हो रहा है, बहुत कुछ हो रहा है, पर तुम्हें पता नहीं पड़ रहा है।

आपका लक्ष्य, आपका उद्देश्य और आपका कार्य केवल शांत भाव से बैठे रहना है। आपको कुछ करना नहीं है, न कुछ सोचना है, न कुछ विचारना है, न कुछ चिन्तन करना है, यह भी नहीं सोचना है कि मैं कुछ ध्यान लगा रहा हूं या नहीं लगा रहा हूं।

आपको तो केवल बाहरी संसार से यथासंभव कटॉफ होकर, पृथक होकर, अगर शांत भाव से बैठे रहना है, दो मिनट, पांच मिनट, दस मिनट, पच्चीस मिनट, चालीस मिनट। जितने ही ज्यादा निष्कम्प भाव से, बिना हिले-डूले, नेत्र बंद करके बैठे रहेंगे, आपका मन अपने आप को नियंत्रित करता रहेगा। अपने आप अंदर उतरने की क्रिया प्रारंभ हो जायेगी, आपको पता भी नहीं चलेगा। आप धीरे-धीरे अभ्यास के माध्यम से एक दिन, दो दिन, चार दिन, दस दिन, पन्द्रह दिन, महीने भर के बाद स्वयं अनुभव करेंगे कि वास्तव में ही कुछ सुखद अनुभूतियां अनुभव होने लगी है। ऐसा लगेगा, जैसे कुछ प्राप्त हो रहा है।

यदि आप निरन्तर पन्द्रह मिनट इस प्रकार से अभ्यास करें, शांत भाव से बैठे रहें, कुछ सोचे नहीं, कुछ चिन्तन नहीं करें, कुछ विचार नहीं करें, किसी प्रकार का मन में आलोड़न-विलोड़न नहीं हो, तर्क-कुतर्क पैदा नहीं हो, केवल आप बैठे रहें... और यह निरन्तर बैठे रहने की क्रिया कुछ दिनों के उपरान्त ध्यान में परिवर्तित हो जायेगी।

और इसका एहसास इस बात से होगा कि उस समय जहां पहले दिन आप आंख बंद करके बैठे, वहां बाहरी शोरगुल आपको सुनाई दिया, आवाज सुनाई दी, पत्नी की आवाज सुनाई दी, पुत्र की आवाज सुनाई दी, हंसने की आवाज सुनाई दी ये सब आवाजें सुनाई दी। मगर तीसवें दिन ऐसा नहीं होगा, तीसवें दिन आप देखेंगे कि आप बैठे हैं और किसी प्रकार की आवाज आपके कानों में नहीं आ रही है।

इसका मतलब हुआ कि आप बाहरी संसार से धीरे-धीरे पृथक हुए, धीरे-धीरे आपने अंदर

प्रवेश किया, और उस स्थान पर जहां इस देह के अंदर प्राण देह है, उस देह तक पहुंचे, जहां उस देह से बाहरी देह का कुछ सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि यह बाहरी देह बाहरी क्रियाकलापों से सम्पर्कित रहती है, बाहरी देह से सम्बन्ध कटॉफ होते ही बाहरी समाज हमारे ऊपर किसी प्रकार का व्याघात उत्पन्न नहीं कर पाता।

इसका मतलब हुआ कि आपने तीस दिन के बाद उस प्राण देह के पास पहुंचने की क्रिया सम्पन्न की, जहां ध्यान के आगे की स्टेज है, जो ध्यान का एक महत्वपूर्ण क्षण है।

और उस प्राण देह के बाद में जब और इसी प्रकार के अभ्यास करते रहेंगे, इसी प्रकार से आप बिल्कुल निर्विकार भाव से बैठे रहेंगे, तो हजारों मील नीचे उतर सकते हैं। यह निर्विकार भाव से बैठे रहना अपने-आप में अंदर उतरने की क्रिया है, अपने-आप में जाने की क्रिया है, अतल गहराइयों में जाने की प्रक्रिया है, क्योंकि शरीर में इतनी गहराई है कि हजारों मील भी उसके सामने बहुत बोने हैं।

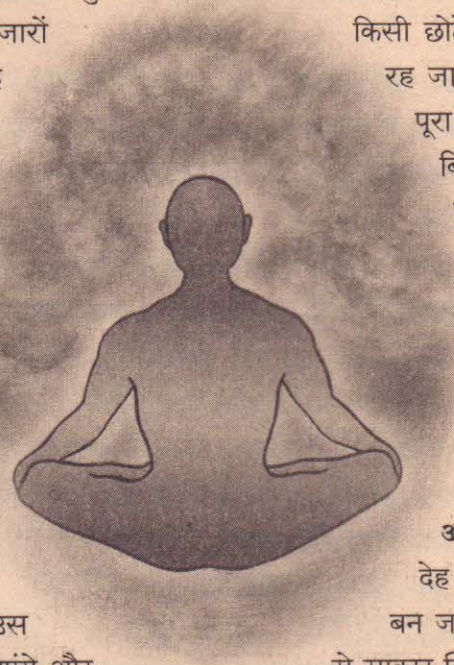

आपका शरीर केवल मात्र चार फीट का, पांच फीट का या छः फीट का ही नहीं है, इस शरीर में तो पचासों मील की गहराई है, उस गहराई से आप धीरे-धीरे उतरते जाएंगे और जितना अधिक अंदर उतरते जायेंगे, उतने ही असीम आनन्द की अनुभूतियां आपको होती रहेगी।

अतः इस प्रक्रिया के लिए किसी प्रकार का चिन्तन, विचार करने की जरूरत नहीं है... अंदर उतरने की क्रिया शांत भाव से बैठे रहने की प्रक्रिया है और जब आप प्राण देह से आगे बढ़ेंगे, तब आपके सामने एक सूक्ष्म देह उपस्थित होगी, वह प्राण देह से भी ज्यादा सूक्ष्म है।

सूक्ष्म देह का तात्पर्य है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से आपका सम्पर्क स्थापित होना।

इस ध्यान योग की प्रक्रिया से जहां आप बाहर से कटॉफ होते है, वही अंदर के सारे ब्रह्माण्ड से आप जुड जाते है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आपके सामने साकार हो जाता है।

आप अपने घर परिवार, बन्धु-बांधव, रिश्तेदारों को देखने लग जाते हैं। आप देखने लग जाते हैं, कि संसार में कहां क्या-क्या घटित हो रहा है, अनेकों दृश्य आपके सामने स्पष्ट होने लग जाते हैं।

एक प्रकार से देखा जाए तो आप स्वयं एक दृष्टा बन जाते हैं, सारी प्रकृति आपके सामने साकार होने लग जाती है, यह सूक्ष्म देह के माध्यम से संभव है, क्योंकि सूक्ष्म देह का तात्पर्य है कि आप प्राण देह से भी नीचे पहुंच चुके हैं, फिर आप एक स्थान विशेष से सम्बन्धित नहीं रह जाते हैं। फिर आप किसी छोटे से शहर से सम्बन्धित नहीं रह जाते, पूरा शहर, पूरा देश और पूरा राष्ट्र, पूरा संसार आपके सामने बिल्कुल खुली किताब की तरह स्पष्ट होता है... और आप अपनी आंखों से देख पाते हैं, उस अन्तर्चक्षु से, उस आत्मचक्षु से... यह सूक्ष्म देह ध्यान की प्रक्रिया का अगला चरण है।

ध्यान की प्रक्रिया का इससे अगला चरण ब्रह्म देह है। ब्रह्म देह का तात्पर्य है, हम स्वयं ब्रह्ममय बन जाते हैं, अपने-आप में उस ब्रह्म से साकार स्थिति स्पष्ट करने लग जाते हैं, जहां समस्त ब्रह्माण्ड एक ब्रह्म का पर्याय है। यह समस्त विश्व नहीं, ऐसे विश्व तो करोड़ों हैं इस ब्रह्माण्ड में।

उस पूरे ब्रह्माण्ड को अपनी आंखों से देखने की प्रक्रिया तब कर पाते हैं जब ध्यान योग के माध्यम से आप ब्रह्म देह तक पहुंच पाते हैं। केवल एक ही देह आपके पास नहीं है, इस देह के अंदर दूसरी, तीसरी और चौथी देह भी है।

उस देह तक पहुंचने पर केवल आप विश्व के किसी कोने में नहीं, अपितु ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में अपनी सूक्ष्म देह के माध्यम से पहुंच सकते

हैं, देख सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं।

इस प्रकार की प्रक्रिया जब आपके सामने स्पष्ट होती है, तब आप विचित्र अनुभूतियों से भर जाते हैं। आपको एहसास होता है कि आप एक मामूली व्यक्ति नहीं हैं, आपको एहसास होता है कि वास्तव में यह ब्रह्म देह एक विशाल आनन्द का सागर है, समुद्र है, जहां आनन्द के अलावा और कुछ है ही नहीं, जहां तनाव नहीं है, जहां किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है, जहां किसी प्रकार की परेशानी और बाधा नहीं है, अपने आप में पूर्ण एकता है, अपने आप में पूर्ण चैतन्यता है, आनन्द की लहरें जहां उठ रही हैं।

आप उस खुमारी में डूब जाते हैं, जो आपके चेहरे पर एक असीम आनन्द की तृप्ति देने लग जाती है। एक मस्ती, एक तृप्ति, एक पूर्णता, एक चैतन्यता जब आपके चेहरे की आभा युक्त बना देती है, तब आप एक अलग प्रकार के व्यक्तित्व बन जाते हैं, ऐसा लगता है, जैसे आप वो हैं ही नहीं, जो थे, ऐसा लगने लग जाता है कि आप बिल्कुल अलग हैं, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को देखने की प्रक्रिया का आपको ज्ञान हो जाता है।

पूरे ब्रह्माण्ड को आप अपनी आंखों से देख सकते हैं, व्याघात उत्पन्न कर सकते हैं, उसमें हस्तक्षेप कर सकते हैं, ब्रह्माण्ड में किसी भी स्थान पर जा सकते हैं, आ सकते हैं, अपनी इस सूक्ष्म देह के माध्यम से... और इस देह को सूक्ष्म देह में परिवर्तित कर सकते हैं और सूक्ष्म देह को इस पूर्ण देह में परिवर्तित कर सकते हैं।

यह बहुत महत्वपूर्ण घटना है। एक ऐसी स्टेज है, जहां आदमी पूर्ण पुरुष बनने की प्रक्रिया आरंभ करता है।

''अहं ब्रह्मास्ति द्वितीयो नास्ति''

ब्रह्माण्ड में दूसरा कुछ है ही नहीं, पूरा ब्रह्माण्ड मेरे अंदर समाहित है, क्योंकि मैं ब्रह्म हूं, और जहां ब्रह्म है, वहां ब्रह्माण्ड है, वहां जीवन की प्रत्येक हलचल है, घटना है... और इस जीवन की नहीं, इस विश्व की नहीं, इस सूर्य लोक, चन्द्र लोक, नक्षत्र लोक और इन्द्र लोक जितने भी लोक हैं, उन सबकी हलचल, उन सबकी घटनायें मेरे अंदर समाहित हैं। मैं उन सबको देख सकता हूं, वहां पहुंच सकता हूं, वहां से वापिस आ सकता हूं। जो ध्यान योग प्रक्रिया में जाता है, वह इस स्थिति को प्राप्त करता है... और जब इस स्थिति को प्राप्त करता है, तो उसे असीम आनन्द की अनुभूति होती है।

इस ध्यान योग के बाद स्थिति बनती है 'धारणा की'। धारणा का मतलब है - जो कुछ हमने किया है, वह बना रह सके। जैसा अभी मैंने आपको बताया कि सुख तो क्षण भंगुर है, आता है और चला जाता है। अगर धन से आपको सुख अनुभव होता है, तो जब तक धन प्राप्त होता है, तब तक तो आप सुखी हैं, मगर जिस दिन आपका धन चला जाता है, आप उस सुख से वंचित हो जाते हैं, वह टिका नहीं रहता, वह स्थायी नहीं होता, आनन्द भी स्थायी नहीं रह सकता, यदि आप में धारणा शक्ति नहीं है।

इसलिए योगियों ने, शास्त्रों ने, पुराणों ने, वेदों ने, उपनिषदों ने इस बात को स्पष्ट किया है कि ध्यान का अगला चरण, ध्यान की अगली प्रक्रिया धारणा को अपने-आप में सुदृढ़ करना है, क्योंकि धारणा शक्ति के माध्यम से हम जीवन के प्रत्येक क्षण उस विश्व और उस ब्रह्माण्ड से एकाकार बने रह सकते हैं और हजारों-लाखों वर्षों की आयु प्राप्त कर सकते हैं।

यदि हमारे पूर्वजों के पास हजारों वर्षों की आयु थी, यदि वे इच्छा मृत्यु को प्राप्त हो सकते थे, तो हम भी इच्छा मृत्यु को प्राप्त कर सकते हैं। हम चाहें तभी मृत्यु प्राप्त हो, मृत्यु हमें दबोच नहीं सके, मृत्यु हम पर आक्रमण नहीं कर सके, मृत्यु हम पर हमला नहीं कर

सके। ऐसी स्टेज तब आ सकती है, जब हम धारणा शक्ति को प्राप्त कर लेते हैं।

धारणा शक्ति की प्राप्ति के लिए यह जरूरी है कि आप अपने जीवन में उस ध्यान प्रक्रिया के माध्यम से आगे बढ़ें। इसलिए उपनिषदों में ***'धारणा इति गुरुः'*** **गुरु को ही धारणा शक्ति कहा गया है।**

क्योंकि गुरु ही अपनी विशेष तेजस्विता के प्रभाव से आपके शरीर में धारणा शक्ति को बढ़ा सकता है। आप जो सूक्ष्म देह और प्राण देह प्राप्त करने के आकांक्षी है, और जो ब्रह्म देह आपके पास होती है, उस ब्रह्म देह को निरन्तर ब्रह्म देह बनाये रखने के लिए गुरु की यहां नितान्त अनिवार्यता है, आवश्यकता है।

गुरु आपको उस मंत्र को, उस चेतना को दे सकता है, उस तपस्या के अंश को दे सकता है, जिसके माध्यम से आप उस ब्रह्म देह को यथावत् बनाये रख सकें, ब्रह्म देह के बाद वापिस आप उसी मूल स्वरूप में आ सकते हैं। सांसारिक क्रियाकलाप सम्पन्न कर सकते हैं और उसके बाद वापिस ब्रह्म देह में पहुंच सकते हैं।

इसलिए ब्रह्म देह में पहुंचने के बाद गुरु का निरन्तर चिन्तन, ध्यान, मनन प्रक्रिया और गुरु की सान्निध्यता बहुत अधिक आवश्यक है।

अभी मैंने आपको बताया कि ***"धारणा इति गुरुः"*** धारणा को गुरु कहा जाता है, अर्थात् गुरु के माध्यम से ही धारणा शक्ति पुष्ट और प्रबल होती है, क्योंकि धारणा शक्ति के लिए जरूरी है कि एक बहुत बड़े नलके से आपके छोटे नलके में जल प्रवाहित हो, जहां ज्ञान का विशाल भण्डार भरा हुआ है, उस ज्ञान के भण्डार में से आपके पास प्रवाहित हो।

सूर्य के माध्यम से दीपक की लौ लगे, वसन्त के माध्यम से आप में सुगन्ध का झौंका प्रवाहित हो... और यह वसन्त, यह सूर्य गुरु ही हो सकता है, जहां ज्ञान का असीम भण्डार है, जहां साधना की पूर्णता है, उच्चता है, श्रेष्ठता है, दिव्यता है और परिपूर्णता है।

इसलिए जब ध्यान के माध्यम से आप उस स्थिति में पहुंचते है, तब यह जरूरी है कि आपके सामने वह गुरु हो, जो इस प्रक्रिया में अपने-आप में पूर्ण सम्पन्न हो, जिसकी कुण्डनिली जाग्रत हो, जो क्रिया योग में दक्ष हो, जो सिद्धाश्रम में पूर्णता प्राप्त कर सका हो, जो तुम्हें ज्ञानश्चेतना दे सके, जो तुम्हारी उंगली पकड़ के इस धारणा शक्ति में पूर्णता और प्रबलता प्रवाहित कर सके।

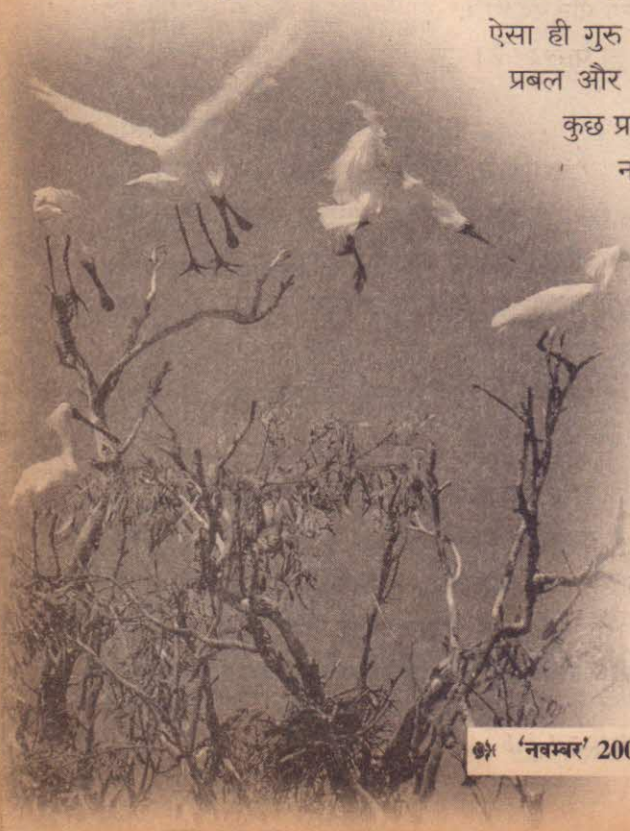

ऐसा ही गुरु अपनी ज्ञानश्चेतना के माध्यम से आपकी धारणा शक्ति को प्रबल और पुष्ट बनायेगा, जिससे आपने जो कुछ अनुभव किया है, जो कुछ प्राप्त किया है, वह ज्यों का त्यों बना रह सके, उसमें विश्रृंखलता नहीं आए, न्यूनता नहीं आये, किसी प्रकार की कमी नहीं आये... और यह कमी तब तक नहीं आ सकती, जब तक आप बराबर उस क्रिया और प्रक्रिया को चालू रखते हैं, परन्तु यदि आपने उस समय उस क्रिया को बंद कर दिया तो फिर ध्यान शक्ति में न्यूनता आ जायेगी।

आप ब्रह्म देह से वापिस इस स्थूल देह तक पहुंच जायेंगे, परन्तु आप धारणा शक्ति में पहुंच गए हैं, तो फिर आप जहां पहुंचे हैं, वहां से वापिस निकलने का रास्ता नहीं रहेगा, फिर आप में न्यूनता नहीं आ सकती, जो कुछ आपने प्राप्त कर लिया, वह तो रहेगा ही। निरन्तर आगे बढ़ने की प्रक्रिया होगी, पीछे हटने की प्रक्रिया नहीं होगी।

और इस दूसरे चरण में, इस धारणा में जो आपने ध्यान

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

प्रक्रिया सम्पन्न की है, उस ध्यान प्रक्रिया का मानसिक एकाग्रता के साथ गुरु चिन्तन हो, गुरु पूजन हो, और सबसे बड़ी बात यह कि गुरु में एकाग्रता हो, गुरु में पूर्णरूप से समर्पण होने की प्रक्रिया हो... और पूर्णरूप से समर्पण होने की प्रक्रिया के लिए जरूरी है कि आप पूर्णरूप से मन और मस्तिष्क से समर्पित हो, फिर आपका कुछ अस्तित्व नहीं रहे।

इस स्टेज पर, इस स्थिति में आने के बाद कुछ भी भान नहीं रहे। आप अपने-आप में कुछ हैं ही नहीं, किसी प्रकार का अस्तित्व आपका नहीं है, जो कुछ है, वह गुरु में विसर्जित कर दिया, लीन कर दिया... जो दे दिया, तो फिर आपके पास कुछ रहा नहीं... और यह देने की प्रक्रिया धारणा शक्ति है, अपने-आप में समर्पण करने की प्रक्रिया धारणा शक्ति है।

मगर यह समर्पण शब्दों के माध्यम से नहीं हो सकता, यह समर्पण हाथ जोड़ने के माध्यम से भी नहीं हो सकता। यदि आप समझते हैं, कि गुरु की आरती उतारने से या अगरबत्ती लगाने से ही समर्पण हो जाता है, तो गलत है।

समर्पण का तात्पर्य है कि गुरु जो आज्ञा दे, उसका बिना नानूच किये पालन किया जाये, क्योंकि गुरु अपने स्वार्थ के लिए कभी आज्ञा नहीं देगा। गुरु तो बहुत दूर की देखता है, वह देखता है इसको जीवन की पगडण्डी पर कहां खड़ा करना है, और जहां खड़ा करना है, उसके लिए आज कौन सी आज्ञा देनी है।

हो सकता है वह परीक्षा ले, हो सकता है वह आगे बढ़ाएं, आप नहीं समझ सकते कि यह आगे बढ़ाने की प्रक्रिया है या परीक्षा लेने की प्रक्रिया है। आपका मन्तव्य, चिन्तन केवल इतना है कि जो कुछ आज्ञा दी जाए, उसको पूरा करना है, वह चाहे आपके हितों के विपरीत हो, वह चाहे आपके हितों के अनुकूल हो।

आपका हित और अहित, आपका जीवन और अजीवन, अस्तित्व और अस्तित्वहीनता यहां कुछ नहीं है, आप हैं ही नहीं। जहां समर्पण है, वहां धारणा शक्ति है, जहां गुरु आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करने की प्रक्रिया है, वहां धारणा शक्ति है, जहां उनका अनुगामी बनने की प्रक्रिया है, वहां धारणा शक्ति है।

जहां आपके पास तर्क आया, जहां आपने झूठ और छल का सहारा लिया, आश्रय लिया, जहां आपने पाखण्ड किया, जहां केवल हाथ जोड़कर, मन में कुछ और चिंतन किया, आपने यह प्रदर्शन किया कि मैं गुरु की भक्ति पूर्णरूप में करता हूं, पच्चीस लोग खड़े हों आप जोरों से तालियां पीट रहे हों या आरती कर रहे हो भोग लगा रहे हों और दक्षिणा दे रहे हों... यह सब तो दिखावा है, यह सब तो पाखंण्ड है। गुरु इस बात को समझता है, वह

मन ही मन मुस्कराते हुए इस बात का अनुभव करता है कि यह सब कुछ गलत है, मगर वह लीला को बराबर देखता रहता है, उस क्रिया को बराबर देखता रहता है, यह आपकी धारणा शक्ति नहीं है।

धारणा शक्ति का तात्पर्य है कि आपके आंसुओं से उनके पद प्रक्षालित हों। उनके चरणों में आप सिर रखकर, आंसुओं से उनके चरणों को धोयें, अपने-आप को पूर्ण विसर्जित करें। आपका हृदय गद्‌गद् हो, गला भर जाए, रुंधे हुए गले से जो कुछ शब्द निकले गुरुदेव शब्द ही निकले, तभी पूर्णता होगी।

धारणा शक्ति का तात्पर्य है - आप में हर क्षण यह इच्छा हो कि मैं दौड़कर गुरु के पास जाऊं। यह अलग बात है कि यह आपकी पराजय हो और आप नहीं पहुंच सकें। यह अलग बात है कि आपका शरीर साथ नहीं दे और आप नहीं जा सकें। यह अलग बात है कि ऐसी सामाजिक परिस्थितियां हो और आप नहीं आ सकें... नहीं जा सकें, यह अलग चीज है, मगर आपकी उत्कंठा, आपकी तीव्रता, आपकी इच्छा, आपकी भावना अत्यन्त तीव्र हो, आपके मानस में हर क्षण एक छटपटाहट बनी रहे कि मुझे हर हालत में गुरु के पास पहुंचना है... और यदि मैं नहीं पहुंचता हूं, तो एक छटपटाहट, एक बेचैनी, एक अभाव अनुभव हो।

यह अनुभव होना ही धारणा शक्ति को प्रबल बनाती है, तब एहसास होता है कि जीवन का यह भाग एक महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि कोई मेरा है, जिसके पास मुझे जाना है, कोई मेरा है... जिसको प्राप्त करना ही जीवन का लक्ष्य है, उद्देश्य है।

कोई मेरा है, जिसके हाथों में अपना हाथ देकर मैं निश्चित हूं। कोई ऐसा व्यक्तित्व है, जिसके चरणों में बैठकर एक असीम सुख की अनुभूति होती है। कोई व्यक्तित्व ऐसा है, जिसके पास बैठकर अपने दुःख और दर्द को पूरी तरह से कह सकता हूं... और कह देता हूं, तो अपने आप को हल्का कर लेता हूं, अपने मन का बोझ दूर कर लेता हं, अपने आप को पूर्णरूप से विसर्जित कर लेता हूं।

क्योंकि जो कुछ मेरा तर्क-कुतर्क हुआ, जो मेरा कुछ विचार हुआ वह मैंने उनके सामने व्यक्त कर दिया, मगर उसके साथ आपके प्राणों के सम्बन्ध बनने चाहिए, देह के सम्बन्ध नहीं।

देह के सम्बन्ध तो एक सामान्य व्यक्ति के साथ भी बन सकते हैं, पत्नी के साथ भी बन जाते हैं, पुत्र के साथ भी बन जाते हैं। हम हर समय चिंता भी रखते है कि पुत्र बाहर गया है, तो सकुशल वापिस लौटे। हम इस बात की भी चिंता रखते हैं कि उसकी तबीयत ठीक रहे, स्वास्थ्य ठीक रहे... ये देहगत सम्बन्ध हैं।

देहगत सम्बन्ध गुरु से होना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। प्राणगत सम्बन्ध हों... और प्राणगत सम्बन्ध का तात्पर्य है कि आप हजारों मील दूर बैठें हों, यहां गुरु के पांव में कांटा चुभे और दर्द का आपको एहसास हो, तो समझना चाहिए कि प्राणगत सम्बन्ध हैं। यदि यहां गुरु की तबीयत ठीक नहीं है और आपका जी बैचेन होता हो, बड़ी छटपटाहट महसूस होती हो, ऐसा लग रहा हो, जैसे कुछ खो गया है, कुछ खालीपन सा है, कुछ गड़बड़ है, कुछ ऐसा है जो ठीक नहीं है, अगर ऐसी छटपटाहट, ऐसी वेदना होती है और मालूम नहीं होता कि वेदना क्यों है, किस कारण से है... हजारों मील दूर बैठकर यह जो सम्बन्ध और साहचर्य बन जाता है, यही धारणा है।

आपके मन में हमेशा उत्कंठा और आकांक्षा रहती है कि मैं गुरु के पास पहुंचू... और गुरु जिस तरीके से भी खुश हो, प्रसन्न हो, उस तरीके से मुझे खुश और प्रसन्न करना है।

वे मुझे किस प्रकार उपयोग करते हैं, यह उनकी इच्छा पर निर्भर है, यह उनकी इच्छा पर निर्भर है कि वे मुझसे क्या काम लेना चाहते हैं। मैंने तो अपने-आप को उनको समर्पित कर दिया है, अब वे जिस प्रकार से चाहें मेरा उपयोग करें, वे उपयोग करें और हम अपना उपयोग करने दें, इसको धारणा शक्ति कहा गया है। इसको जीवन की पूर्णता कहा गया है, इसको जीवन का आनन्द कहा गया है।

धारणा शक्ति का तात्पर्य है, गुरु की पूर्ण शक्ति आपके साथ रहे... और गुरु की पूर्ण शक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई तो नहीं देगी, मगर आपके पीछे बराबर वह शक्ति, वह ताकत बनी रहती है।

एक मामूली सा पुलिस वाला बड़े से बड़े गुण्डों को थप्पड़ मारकर रोक लेता है और वे गुण्डे थरथराने लग जाते है। इसका मतलब यह नहीं कि पुलिस ताकतवर है उन गुण्डों से, इसका तात्पर्य है कि पुलित के पीछे राज्य का, गर्वमेंट का प्रभाव है, पूरा फोर्स है, उस फोर्स की वजह से उस पुलिस में ताकत है।

ठीक उसी प्रकार से आप चाहे दुबले-पतले हों, पर आपके पीछे एक फोर्स है, जो दिखाई नहीं देती, मगर उसकी वजह से आप में पूरी ताकत, पूरी क्षमता आती है, वह ताकत, वह क्षमता गुरु की दी हुई है, जिसको आप अनुभव करते हुए निरन्तर धारणा शक्ति में पूर्णता प्राप्त करते रहते हैं।

ध्यान और धारणा के बाद तीसरी स्थिति 'समाधि अवस्था' की होती है। जहां आप गुरु के चरणों में बैठ गए, जहां आपने अपने-आप को गुरु के चरणों में विसर्जित कर दिया, जहां आप इस बात के लिए कृतकृत्य होते हुए कि गुरु ने आपको आज्ञा दी, आपको कोई काम सौंपा, आपकी सेवाओं का उपयोग किया, और आप ने बिना किसी हिचकिचाहट के, उस आज्ञा का पालन किया, चाहे वह आज्ञा आपके हित में रही या अहित में रही, वह चाहे आपके लिए नुकसान दायक रही या लाभदायक रही, वह अलग बात है, मगर आप ने उन आज्ञाओं का पालन किया, उनके लिए उपयोगी बनें, यह धारणा शक्ति है... और इस धारणा शक्ति के आगे की स्थिति **'समाधि अवस्था'** है।

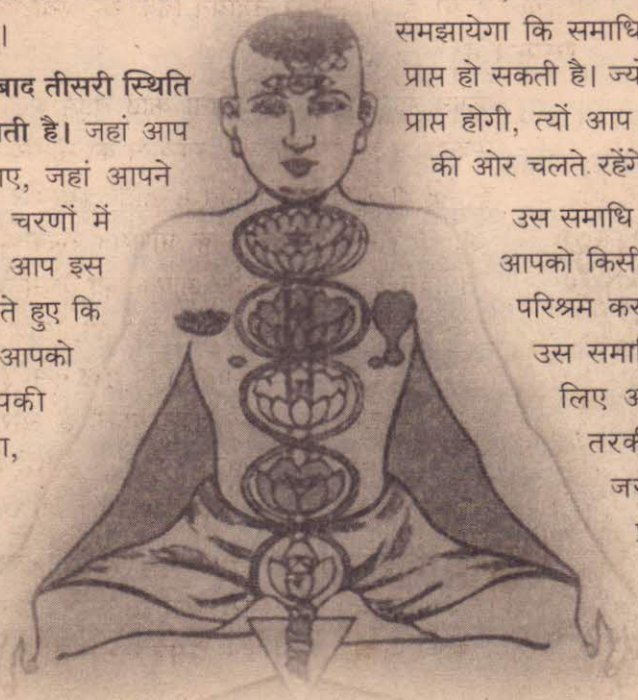

समाधि अवस्था का तात्पर्य है - आप समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर सके, जो पूरे ब्रह्माण्ड में विचरित हैं, वे चाहे अणिमादि सिद्धियां हो, वह चाहे महाकाली हो, महालक्ष्मी हो, महासरस्वती हो, बगला हो, छिन्नमस्ता हो, धूमावती हो, वे चाहे इन्द्र हो, विष्णु हो, रुद्र हो, कार्तिकेय हो, और चाहे किसी प्रकार की देवी हो, देवता हो, भूत हो, प्रेत हो, पिशाच हो, राक्षस हों, गन्धर्व हों, किन्नर हों उन सबको हस्तगत कर लेने की क्रिया समाधि अवस्था में ही आ सकती है।

समाधि का तात्पर्य है - आप स्वयं पूर्णरूप से ब्रह्मा बन जाते हैं। ब्रह्म की सामीप्यता नहीं, अपने-आप को पूर्णरूप से ब्रह्ममय करने की प्रक्रिया समाधि अवस्था है... और समाधि का तात्पर्य है, अपने-आप में पूर्ण निश्चिंत होकर डूब जाने की प्रक्रिया।

यह क्रिया गुरु अपने-आप आपको सिखाएगा, मार्ग दर्शन करेगा, वह आपको दीक्षा देगा, वह आपको समझायेगा कि समाधि अवस्था आपको कैसे प्राप्त हो सकती है। ज्यों गुरु की शक्ति आपको प्राप्त होगी, त्यों आप स्वतः समाधि अवस्था की ओर चलते रहेंगे।

उस समाधि अवस्था में जाने के लिए आपको किसी प्रकार का प्रयत्न और परिश्रम करने की जरूरत नहीं है। उस समाधि अवस्था में जाने के लिए आपको कोई युक्ति या तरकीब हाथ में लेने की जरूरत नहीं है, न प्राणायाम की जरूरत है न भस्त्रिका की जरूरत है।

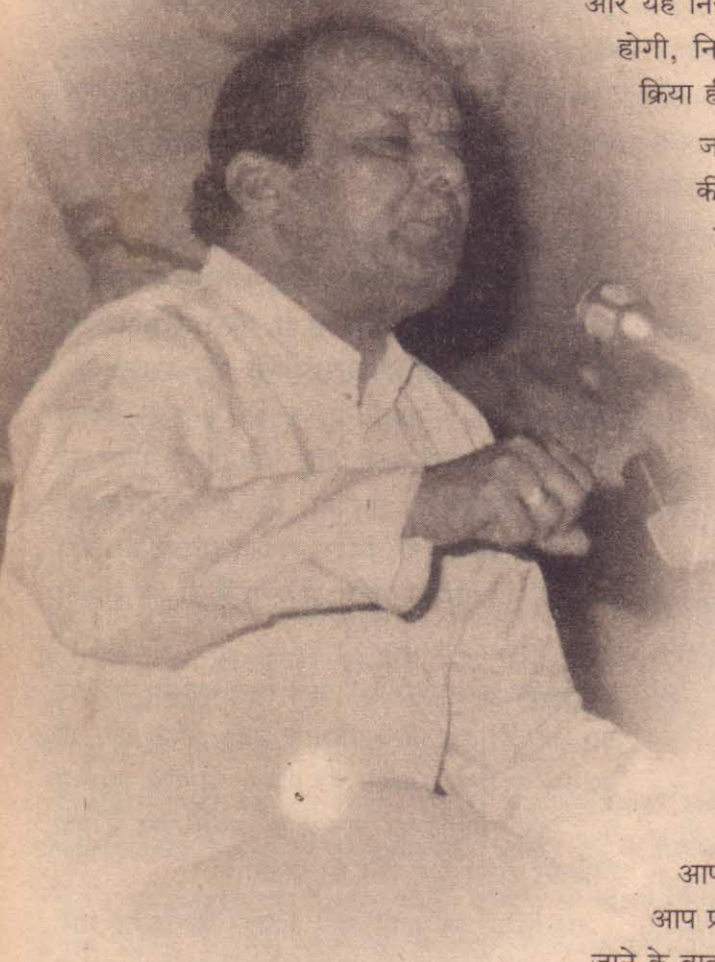

आप तो उस एक शक्ति के सहारे निरन्तर आगे बढ़ते रहेंगे, और यह निरन्तर आगे बढ़ने की क्रिया समाधि अवस्था में होगी, निरन्तर आगे बढ़ने की क्रिया ब्रह्ममय होने की क्रिया ही होगी, आप अपने-आप आगे बढ़ेंगे।

जहां आप आगे बढ़ते रहेंगे, वहीं सुख और सौभाग्य की अनुभूतियां होंगी, आपके चेहरे पर एक विशेष प्रकार का आभामण्डल स्थापित होगा, ऐसा लगेगा जैसे आपके चेहरे पर एक भव्यता है। आपके ललाट पर खड़ी लकीरें इस बात का परिचायक होगी कि वास्तव में ही आपने समाधि अवस्था को प्राप्त किया है। एक सामान्य मनुष्य की जो ललाट की लकीरें होती हैं, वे बाएं से दाएं की ओर होती हैं या दाहिने से बायीं की ओर होती हैं, मगर जो उच्चकोटि के योगी है, जो उच्चकोटि की स्थिति प्राप्त करने वाला है, उसकी नाक से आगे लगाकर के ऊपर सहस्रार तक जो लकीरें जाती है, वे अपने-आप में इस बात का परिचायक हैं कि आपका आभामण्डल पूर्णता प्राप्त किये हुए है।

आप इस समाधि अवस्था को प्राप्त किये हुए हैं, आप स्वयं अपने-आप में ब्रह्म हैं, ऐसी स्थिति जब आप प्राप्त कर लेते हैं, तो फिर उस समाधि अवस्था में जाने के बाद आप कई दिनों की समाधि प्राप्त कर सकते हैं, इस समाज से कट कर।

उस समय आप सांसारिक कार्य करते रहते हैं, मगर फिर भी आप निर्विकल्प रहते हैं। निर्विचार रहते हैं। सब कुछ निर्वाह करते हुए भी आप किसी के नहीं है, और सबके हैं, ऐसी स्टेज होने पर, आपके चेहरे पर एक विशेष प्रकार का तेल बिम्ब, प्रतिबिम्ब होता है।

ऐसा लगता है, जैसे यह व्यक्ति अत्यन्त भव्य और अद्वितीय है, सुदर्शन है, बार-बार आपको देखने की इच्छा होगी। आप यदि किसी को कुछ कहेंगे भी, तो उसको एक पुष्प के समान अनुभव होगा, वह एक चुम्बक की तरह ही आपके पास खिंचा हुआ चला आएगा, आपके सान्निध्य में रहेगा, आपकी सायुज्यता में रहेगा, फिर हरदम उसकी इच्छा, आकांक्षा रहती है कि चाहे आप कुछ कहें या नहीं कहें, मगर आपके पास बैठने से ही उसको एक विशेष अनुभूति, सुख और तृप्ति का भान होगा।

ऐसी स्थिति बनने पर आप कई-कई महीनों की समाधि लगा सकते हैं। जिस समय चाहें जिस प्रकार से चाहें किसी भी लोक में उस सूक्ष्म देह के माध्यम से जा सकते हैं, आ सकते हैं... वह चाहे ब्रह्म लोक हो, चाहे विष्णु लोक हो, चाहे रुद्र लोक हो, चाहे कैलाश हो, चाहे मानसरोवर हो, चाहे कोई घाटी हो, चाहे नक्षत्र मण्डल हो, आपके लिए वह सब कुछ सहज सुलभ है।

यह ऊपरी देह तो यहीं रहेगी। ऊपरी देह तो इसी प्रकार करती रहेगी। बाहरी व्यक्ति भी आपकी ऊपरी देह

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

को ही देखेंगे, जबकि सूक्ष्म देह से आप उस समय कहीं अन्यत्र विचरण कर रहे होंगे। सूक्ष्म देह उस समय किसी और स्टेज पर होगी और उस स्टेज पर खड़े होकर आप वहां की स्थिति को देख सकेंगे, अनुभव कर सकेंगे, अपने जीवन को देख सकेंगे, और सबसे बड़ी बात इस जीवन में आप जो कुछ करना चाहते हैं, जो कुछ देना चाहते हैं, उस प्रकार से आप इस मनुष्य जाति को बहुत कुछ प्रदान कर सकेंगे। यह स्टेज, यह स्थिति पूर्णता की स्टेज है। इस स्टेज को यदि हम कलाओं में कहें, तो यह दस कलाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

यद्यपि इसके आगे की क्रियाएं भी हैं, मगर वे तो गुरु के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती हैं कि हम एकादश कला को प्राप्त करें, बारहवीं कला को प्राप्त करें, तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं कला को प्राप्त करें। सही अर्थों में हम पुरुष बन सकें, पुरुषोत्तम बन सकें, सही अर्थों में पूर्ण चैतन्य बन सकें, ब्रह्म बन सकें... फिर हम गृहस्थ में रहते हुए भी पूर्ण योगी बने रह सकते हैं और पूर्ण योगी रहते हुए भी पूर्ण गृहस्थ रह सकते हैं।

यह स्टेज, यह स्थिति जीवन की पूर्णता की परिचायक है, और ऐसी स्टेज आने पर वह व्यक्ति अखण्ड आनन्द में निमग्न रह सकता है, फिर उसको राग, द्वेष, दुःख, भय, कष्ट और पीड़ाएं व्याप्त होती ही नहीं या उसके जीवन में आती ही नहीं, क्योंकि वह प्रकृति में हस्तक्षेप कर जो कुछ प्राप्त करना चाहता है, वह प्राप्त कर लेता है, विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है, उसको किसी प्रकार की चिन्ता व्याप्त नहीं होती।

यद्यपि उसके जीवन में चिन्ताएं आती हैं, यद्यपि उसके जीवन में बाधाएं परेशानियां आती है, दुःख और कष्ट आते हैं, अभाव और पीड़ाएं आती हैं, आलोचनाएं होती हैं, गालियां मिलती हैं, पर उसके चित्त पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

वह इस बात की चिन्ता ही नहीं करता कि कोई उसे गालियां दे रहा है, वह तो अपने ख्यालों में, अपनी ही मस्ती में आगे बढ़ता रहता है, और पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता बन जाता है। ऐसा ज्ञाता बन जाता है कि सारे वेद, पुराण उसको कंठस्थ हो जाते हैं।

वह जहां भी जिस प्रकार का उदाहरण देना चाहे, दे सकता है। गीता पर भाष्य लिख सकता है, घण्टों बोल सकता है महाभारत पर, रामायण पर, उपनिषदों पर, विश्वामित्र पर, विज्ञान पर, चेतना पर... जिस पर भी बोलना चाहे।

व्यक्ति घण्टों तर्क के साथ बोल सके... वह समाधि अवस्था के बाद ही संभव है। चेहरे पर एक विशेष प्रकार का ओज प्रतिबिम्ब होता है, यह समाधि अवस्था के बाद ही संभव है, और यह धारणा शक्ति के बाद गुरु के बताये हुए रास्ते से निरन्तर आगे बढ़ने की प्रक्रिया है।

आप कुछ नहीं करे, आपको कुछ करने की जरूरत ही नहीं है, अपने-आप गुरु की शक्ति आपको आगे बढ़ाती रहेगी... आगे बढ़ाती रहेगी और वह सब कुछ आप प्राप्त करते रहेंगे, जो आपके जीवन में अनिवार्य और आवश्यक है।

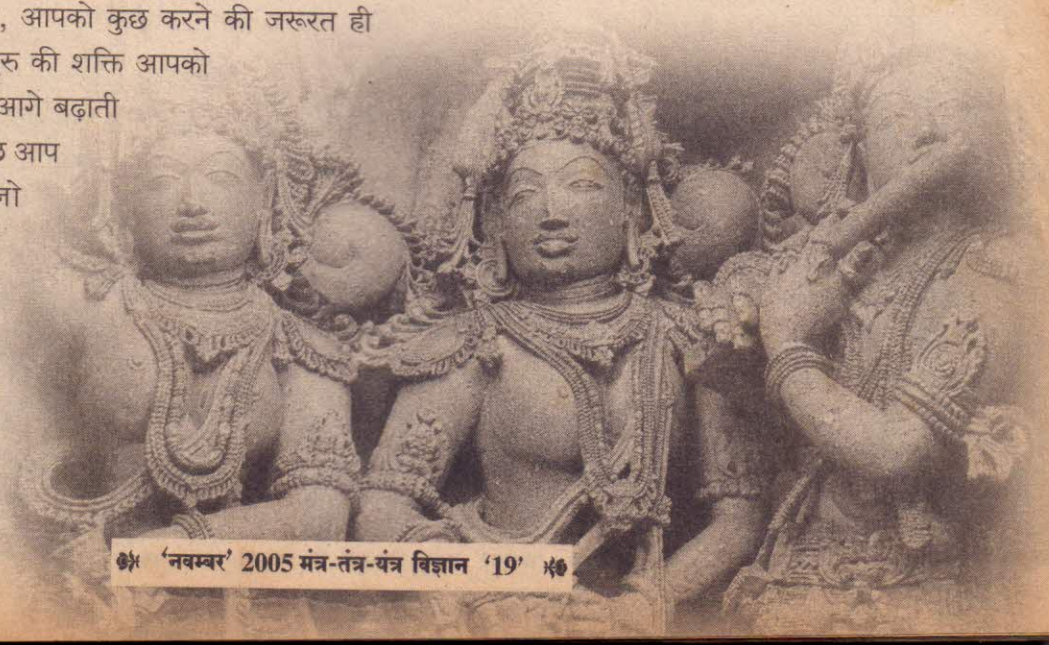

ऐसी स्टेज, ऐसी स्थिति जब आपके जीवन में प्राप्त होती है,

अनुभव होती है, तब आप सही अर्थों में पूर्ण व्यक्तित्व बनते हैं, तब आप सही अर्थों में पूरे ब्रह्माण्ड का एक भाग बनते हैं, एक चैतन्य पुरुष बनते हैं, जिसको महापुरुष कहा जाता है, जो एक विशिष्ट मानव की संज्ञा से विभूषित होता है, जिसको ब्रह्म कहा जाता है, जिसको अखण्डानन्द कहा जाता है, जिसको जीवन की परिकल्पना कहा जाता है।

इसलिए शास्त्रों में ध्यान, धारणा और समाधि को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है, क्योंकि यह आंतरिक जीवन की परिपूर्णता है। इस आंतरिक जीवन के माध्यम से ही व्यक्ति उन समस्त सत्यों को अनुभव कर सकता है, जिन सत्यों के माध्यम से वह जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सके। इन सत्यों के माध्यम से वह आनन्द की अनुभूतियां प्राप्त कर सके, इन सत्यों के माध्यम से उसे वह सब कुछ प्राप्त हो सके, जो उसके जीवन की आकांक्षा है। फिर उसके जीवन में भूख-प्यास, दुःख, दर्द, बेचैनी, छटपटाहट कुछ भी व्याप्त नहीं होती।

वह जिस प्रकार से चाहे प्रकृति को अपने अनुकूल बना लेता है, प्रकृति का दोहन कर सकता है, और प्रकृति से लाभ उठा सकता है।

मैं यहां पर इस समाधि अवस्था को प्राप्त करने की प्रक्रिया के लिए या ध्यान, धारणा और समाधि तीनों अवस्थाओं को एक साथ प्राप्त करने की प्रक्रिया के लिए उस मंत्र का उच्चारण कर रहा हूं जो मंत्र अपने-आप में एक अद्वितीय मंत्र हैं, और निरन्तर इस मंत्र को सुनने से भी स्वतः ध्यान की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, स्वतः धारणा शक्ति बलवती हो जाती है, स्वतः समाधि अवस्था में आदमी पहुंच जाता है, इसके लिए किसी प्रकार का प्रयत्न करने की जरूरत नहीं है।

इसलिए जब आप ध्यानावस्था में जाने की कोशिश करें, तो इस मंत्र को बार-बार सुनें, इस मंत्र को सौ बार सुनें, हजार बार सुनें और अपने-आप, आप अपने अंदर उतरते रहेंगे, गहराई में उतरते रहेंगे, वह सब कुछ प्राप्त करते रहेंगे, जो जीवन का अभीप्सित है। उस गोपनीय, विशिष्ट और अद्वितीय मंत्र को मैं आपके सामने उच्चरित कर रहा हूं, जो आपके लिए पहली बार स्पष्ट हो रहा है, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।

मंत्र

ॐ परं वै प्रतन्त पूर्वाः सःसतां सदीर्घा सःऽधौ सचैतन्यम् सपरिपूर्णताम्।
परिपूर्णताम् पूर्णताम् वां पूर्वाः समाधि र्वैः सतः सा शतः सा शतः सहस्रमयि॥

उपरोक्त मंत्र मैंने आपके सामने स्पष्ट किया, जिसके माध्यम से एक सामान्य व्यक्ति भी ध्यानावस्था में जा सके। यदि इस मंत्र को इसकी मूल ध्वनि में किसी कैसेट पर बार-बार रिपीट कर लें और उस कैसेट को बजाते रहे, तो यह मंत्र बार-बार आपके कानों के माध्यम से आपके हृदय में प्रवेश करता रहेगा।

हृदय के उन तन्तुओं को, उन स्थितियों को जाग्रत करता रहेगा, जिसके माध्यम से आदमी की ध्यान

शक्ति मजबूत होती है, जहां अन्दर उतरने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है, अंदर उतर कर वह उस सूक्ष्म देह को प्राप्त कर सकता है, ब्रह्म देह को प्राप्त कर सकता है, जिससे समस्त ब्रह्माण्ड में उसकी गति बन सके, समस्त ब्रह्माण्ड में वह गतिशील हो सके।

- और इसी मंत्र का निरन्तर उच्चारण करने से उसकी धारणा शक्ति में प्रबलता और पुष्टता आती है। यदि उसके जीवन में गुरु सुलभ नहीं होते, तो गुरु सुलभ हो जाते हैं, और जब गुरु सुलभ होते हैं, तो उनकी कृपा प्राप्त होती है, उनकी कृपा प्राप्त होने के साथ-साथ व्यक्ति की धारणा शक्ति में वृद्धि होती है।

इस मंत्र का निरन्तर श्रवण करने से जहां ध्यान और धारणा में परिपूर्णता आती है, वहां साथ ही साथ उसको समाधि अवस्था भी प्राप्त होने लग जाती है, वह अपने-आप में पूर्ण ब्रह्ममय हो जाता है।

वह अपने-आप में पूर्ण ब्रह्ममय होता हुआ, समस्त चैतन्यता को प्राप्त करता हुआ, जितने लोक हैं, ब्रह्माण्ड के प्रत्येक लोक में जा सकता है, वहां जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकता है, और सही अर्थों में वह अखण्ड आनन्द की अनुभूतियों को प्राप्त कर सकता है।

इसलिए इस प्रवचन में मैंने आपके सामने उन क्रियाओं को स्पष्ट किया है, जिन्हें ध्यान, धारणा और समाधि कहा जाता है, जिनको जीवन की पूर्णता कहा जाता है, जो अपने-आप में '**अहं ब्रह्मास्मि**' का सूत्र है, सूक्ष्मता है।

मैंने उस गोपनीय मंत्र को आपके सामने उच्चारण किया, जिस मंत्र का नित्य प्रातः श्रवण करना आपके लिए जरूरी है ही। इसलिए मूल मंत्र को आप सुनें, निरन्तर सुनते रहें, तब यह एहसास करने लगेंगे कि वास्तव में पहले की अपेक्षा बहुत तेजी के साथ अग्रसर होते हुए आप ध्यान शक्ति प्राप्त कर रहे हैं।

बहुत तेजी के साथ बढ़ते हुए आप धारणा शक्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मैं आपको पूर्णरूप से आशीर्वाद देता हूं कि आप अपने जीवन में महामानव बनें, पूर्ण चैतन्य बनते हुए उस समाधि अवस्था को प्राप्त करें और ब्रह्माण्ड का एक भाग बनें। मैं आपको ऐसा ही आशीर्वाद दे रहा हूं।

- सद्गुरुदेव स्वामी
निखिलेश्वरानन्द
परमहंस।

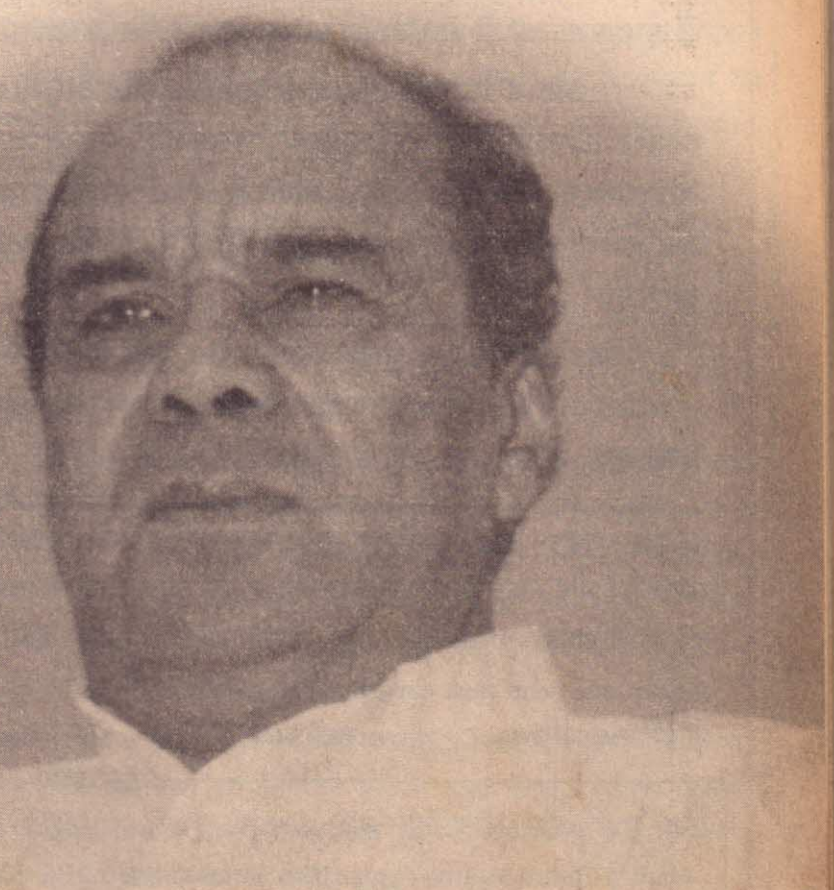

विज्ञापन

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

भाग्योदय यंत्र

जिसे प्राप्त करना तभी संभव है, जब जीवन के पुण्य एकत्र होकर पुञ्जीभूत हों। इस यंत्र को प्राप्त करना अजगर की तरह सोये भाग्य को नींद से जगाने जैसा है।

यह प्रायः देखा गया है, कि बेहद प्रयास के बाद भी व्यक्ति अपने किसी विशेष लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है। यह लक्ष्य व्यापार में वृद्धि का हो सकता है, नौकरी में पदोन्नति का हो सकता है, परीक्षा में सफलता का हो सकता है, साधनाओं में सिद्धि का हो सकता है।

... आपके प्रयासों के बाद भी सफलता यदि अछूती रह जाती है, तो इसका कारण पूर्व जन्म कृत दोषों में छिपा होता है। कर्म अवश्य ही प्रधान है, परन्तु भाग्य को भी नकारा नहीं जा सकता है। भाग्य यदि साथ दे, तो व्यक्ति अल्प प्रयासों से अपना अभीष्ट प्राप्त कर सकता है, नवरात्रि में सिद्ध किए गए इस भाग्योदय यंत्र का प्रभाव इतना तीव्र होता है, कि व्यक्ति अपनी सफलता पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह पाता।

किसी भी दिवस प्रातः काल ५ से ६ बजे के मध्य 'भाग्योदय यंत्र' को अपने पूजा स्थान में स्थापित करें तथा मंत्र '*ॐ ह्रीं भाग्योदयं ह्रीं ॐ*' का १०८ बार उच्चारण करें। पूरे माह तक नित्य ऐसा करें, तत्पश्चात यंत्र को किसी मंदिर में चढ़ा दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- **Annual Subscription 195/- + 45/- postage**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर **342001**, *(राजस्थान)*

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 **टेलीफैक्स** (Telefax) - 0291-2432010

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सौभाग्य आपके द्वारा खड़ा है

अपनाइये इन स्वर्णिम सूत्रों को

कहते हैं 'ब्रह्माण्ड माण्डो धरा विधाता लिखे ललाट पट्टे' अर्थात् ब्रह्मा संसार में मनुष्यों की रचना करते हैं, और विधाता विष्णु व्यक्ति के ललाट पर उसके भाग्य का लेखन कर देते हैं। तो क्या व्यक्ति अपने जीवन में अपने भाग्य को परिवर्तित नहीं कर सकता है? क्या भाग्य सूत्र व्यक्ति स्वयं नहीं रच सकता है। यदि मनुष्य चेतनायुक्त है और उसे श्रेष्ठ गुरु का सान्निध्य है, तो वह अपनी जीवन लेखनी से अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है।

प्रस्तुत है कुछ ऐसे महान सूत्र जो हर शिष्य को अपनाने ही चाहिए, अपना जीवन धर्म बनाकर स्वयं लिखें अपना भाग्य -

नीतिकारों ने कहा है कि जीवन किस प्रकार से जीया जाए जिससे जीवन में सौभाग्य की स्थिति बन सके मनुष्य के स्वयं के हाथ में वह कुंजी हो, जिनके द्वारा वह सौभाग्य का द्वार खोल सकता है। ऐसे सिद्धांतों को जीवन में अपना कर मनुष्य स्वयं अपना नव निर्माण कर सकता है और ये सिद्धांत यदि जीवन सिद्धांत बन जाए, ऐसा निरन्तर प्रयास होना चाहिए।

प्रथम सूत्र - चरित्र सुप्त अवस्था से जाग्रत अवस्था में लाता है चरित्र के द्वारा ही तीव्र बलवती भावना हमें क्रियाशील बनाती है और अनुशासन हमें किसी मार्ग पर आगे निरन्तर चलाता रहता है इसीलिए जीवन में सबसे पहले **चरित्र, चरित्र के साथ क्रियाशीलता और उसके साथ स्वअनुशासन।**

द्वितीय सूत्र - अत्यन्त बुद्धिमान गुणी व्यक्ति की सभी प्रशंसा कर सकते है, धनी व्यक्ति को आश्चर्य से देखते है, शक्तिशाली व्यक्ति को देखकर भय या डर उत्पन्न हो सकता है लेकिन विश्वास आप केवल चरित्रवान पर ही कर सकते है। **आप का सच्चा मित्र वही हो सकता है जो चरित्र का खरा हो।**

तृतीय सूत्र - ध्यान रहे जब आप उन कार्यों को करने के लिए अनुशासित और क्रियाशील करते है जिन्हें उसी समय करना आवश्यक है तो निश्चय ही एक समय ऐसा आता है जब आप उन कार्यों को सम्पन्न कर सकते है, जिन्हें आप सम्पन्न करना चाहते हैं। अनुशासन द्वारा कार्य की आवश्यकता देखते हुए क्रियाशील हो जाने से धीरे-धीरे व्यक्ति महान् कार्य भी सम्पन्न कर सकता है।

चतुर्थ सूत्र - यह ध्रुव सत्य है कि जिनके जीवन में **निश्चित दिशा, निश्चित लक्ष्य** होता है वे ही अपने जीवन में बहुत तेजी से बहुत आगे आ सकते है, और अपने जीवन में सभी क्षेत्रों में ज्यादा प्राप्त कर सकते है। लक्ष्यहीन जीवन, दिशाहीन जीवन पशु के समान जीवन है।

पांचवा सूत्र - आपकी विचार धारा का आपकी क्रियाशक्ति पर सीधा प्रभाव पड़ता है अतः आपकी विचार धारा ठोस एवं सही विचारों से ही अन्तर निहित होनी चाहिए। विचार धारा पल-पल बदलती है तो क्रियाशक्ति भी छिन्न-भिन्न होती है और क्रियाशक्ति नहीं है तो जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता है।

विद्या अर्थात् ज्ञान ऐसा धन है जिसे कोई आपसे छिन नहीं सकता, यह देते रहने पर भी वृद्धि करता है। **अतः निरन्तर प्रयत्न कर अधिक ज्ञान अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास अवश्य करते रहना चाहिए।**

अपने बारे में दूसरों से राय जानने के बजाय आप अपने

बारे में जो राय रखते है वह महत्वपूर्ण है और वही बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण है जो आप अपने आप से करना चाहते हैं।

छठा सूत्र - सज्जनों के साथ मित्रता की इच्छा पराये गुणों से प्रेम, गुरुजनों के प्रति विनम्रता, विद्या के प्रति अनुराग, स्व पत्नी से प्रीति, लोक निन्दा से भय, शिव और शक्ति की भक्ति, इन्द्रिय दमन की शक्ति और दुष्टों की संगति का त्याग सर्वोतम गुण माने गए है।

सातवां सूत्र - जिनके साथ आप अपना लक्ष्य निश्चित करते है वे आपके जीवन में मुख्य भूमिका निभाते हैं कि आप जीवन में अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते है या नहीं। अतः आपके सहयोगी, मित्र कैसे है, **आपके आर्दश कैसे है** इन पर बार-बार विचार कर ही निश्चित करना चाहिए।

आठवां सूत्र - तपते हुए लोहे पर पड़ने जल तत्काल नष्ट हो जाता है। वही जल कमल के पत्तों पर गिरकर मोती जैसा चमकता है, और वही जल स्वाति नक्षत्र में सीपी के मुंह में गिर कर मोती बन जाता है। अतः व्यक्ति में अधम, मध्यम और उत्तम गुण संसर्ग से ही अर्थात मित्रता से ही उत्पन्न होते है। **जैसे मित्र रहेंगे वैसे ही आप बन जाएगें।**

नौवां सूत्र - कार्य विशेष की स्थिति में लगा हुआ व्यक्ति **क्षणिक दुःख और सुख की परवाह नहीं करता** जैसी भी स्थिति है वह उसे लक्ष्य प्राप्त के मार्ग में आने वाली क्रियाएं समझता है और व्यथित नहीं होता है वही व्यक्ति जीवन में लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

दसवां सूत्र - मनुष्य शरीर में रहने वाला आलस्य ही उसका प्रमुख शत्रु है, और पुरुषार्थ के बराबर उसका कोई मित्र नहीं है क्योंकि **पुरुषार्थ** के रहने पर मनुष्य कभी दुःखी नहीं रह सकता।

ग्यारहवां सूत्र - कर्म को बार-बार नमस्कार है, क्योंकि कर्म ही ब्रह्माण्ड रुपी पात्र में ब्रह्मा को कुम्हार के समान नियुक्त किया, कर्म ने ही विष्णु को दशावतार धारण करने रूपी घोर संकट में डाला, कर्म ने ही रुद्र को खप्पर हाथ में देखर भिक्षा के लिए बाध्य किया। कर्म ने ही सूर्य को रोज आकाश में भ्रमण करने का कार्य सौंपा, उस कर्म को महान् ही कहा जा सकता है।

बारहवां सूत्र - जो भाग्यहीन अभागा मनुष्य इस कर्म प्रधान संसार में जन्म लेकर भी अकर्मण्य रहता है उसका तो परमात्मा भी भाग्योदय नहीं कर सकते है।

जीवन में ये सिद्धांत कोई कठिन सिद्धांत नहीं है ऐसे नीति वाक्य भी नहीं है जिनकी पालना नहीं की जा सके। जिससे जीवन में कर्म है, लक्ष्य है, क्रियाशलीता है, बुद्धि है, वही व्यक्ति अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकता है इसीलिए कहा गया है कि हाथों की प्रसन्नसा दान में है, **सिर की शोभा गुरुजनों के चरणों में प्रणाम और नमन में है, मुख की शोभा सत्य भाषण में, भुजाओं की शोभा बल प्रदर्शन में, हृदय और मन की शोभा स्वच्छता में, कानों की शोभा श्रेष्ठ शास्त्रों को सुनने में है।**

जीवन में दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलना कोई महान् कार्य नहीं है यह तो प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में है। उसने जीवन के प्रति अनुराग, जीवन के प्रति प्रेम, जीवन में एक ईष्ट, एक ही गुरु को मानते हुए निरन्तर क्रियाशीलता में है। जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने के लिए इसी अनुशासन और निष्ठा के साथ जीवन संग्राम में प्रबल क्रियमाण कर्म करें, तो इसी जीवन में स्वर्ग प्राप्त हो सकता है जीवन का वास्तविक आनन्ददायक स्वरूप प्राप्त हो सकता है।

शिवस्वरूप भैरव आपके साथ

जो हैं बटुक, उन्मत्त और महाकाल स्वरूप में

तो काहे का डर इस जगत में

सिद्ध कीजिए भैरव

और बल, साहस, वीरता, अभय, पराक्रम, अमृत्यु, स्वास्थ्य को अपने साथ ले लीजिए

☆ ☆

भैरव देव के सम्बन्ध में इतना अधिक साधना साहित्य लिखा है, कि सामान्य साधक यह निश्चित नहीं कर सकता कि उसे किस प्रकार साधना करनी चाहिए, भैरव देव का मूल स्वरूप क्या है, और उनकी शक्तियां कितनी प्रबल है, और भैरव की साधना कर किस प्रकार शक्ति प्राप्त करनी चाहिए?

किसी भी शुभ कार्य में, चाहे वह यज्ञ हो, विवाह हो, वास्तु-स्थापना साधना हो, गृह प्रवेश हो अथवा अन्य कोई मांगलिक कार्य हो, भैरव की स्थापना एवं पूजा अवश्य ही की जाती है, क्योंकि भैरव ऐसे समर्थ रक्षक देव हैं, जो कि सब प्रकार के विघ्नों को, बाधाओं को रोक सकते हैं, और कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाता है, छोटे-छोटे गांवों में भैरव का स्थान, जिसे 'भैरव चबूतरा' कहा जाता है, देखा जा सकता है। अशिक्षित व्यक्ति भी अपने पूर्वजों से प्राप्त मान्यता-धारणा के आधार पर भैरव-पूजा अवश्य करता है, इसके पीछे सिद्ध ठोस आधार है, तभी यह भैरव पूजा परम्परा चली आ रही है, हिन्दू विवाह में विवाह के पश्चात् **'जात्रा'** का विधान है, और सर्वप्रथम 'भैरव यात्रा' ही सम्पन्न की जाती है, भैरव के विभिन्न स्वरूप हैं, और अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग स्वरूपों की पूजा सम्पन्न की जाती है।

भैरव व्याख्या

भैरव, शिव के अंश है और उनका स्वरूप चार भुजा, खड्ग, नरमुण्ड, खप्पर और त्रिशूल धारण किये हुए गले में शिव के समान मुण्ड माला, रुद्राक्ष माला, सर्पों की माला, शरीर पर भस्म, व्याघ्रचर्म धारण किये हुए, मस्तक पर सिन्दूर का त्रिपुण्ड, ऐसा ही प्रबल स्वरूप है, जो कि दुष्ट व्यक्तियों को पीड़ा देने वाला, और अपने भक्तों साधकों के हर प्रकार के संकट दूर कर, उन्हें अपने आश्रय में अभय प्रदान कर, बल, तेज, यश, सौभाग्य, प्रदान करने में पूर्ण समर्थ देव हैं, भैरव-शिव समान ऐसे देव हैं, जो कि साधक किसी भी रीति से उनकी पूजा-साधना करे - प्रसन्न होकर अपने भक्त को पूर्णता प्रदान करते हैं, भैरव सभी प्रकार की योगिनियों, भूत-प्रेत, पिशाच के अधिपति है, भैरव के विभिन्न चरित्रों, विभिन्न पूजा विधानों, स्वरूपों के सम्बन्ध में शिवपुराण, लिंग पुराण इत्यादि में विस्तृत रूप से दिया गया है, भैरव का सुप्रसिद्ध मन्दिर एवं सिद्ध पीठ महातीर्थ काशी में स्थित महाकाल भैरव मन्दिर है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रंथों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय सर्वप्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति

समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक है।

कलियुग में बगलामुखी, छिन्नमस्ता या अन्य महादेवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी है, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली है, परन्तु '**भैरव साधना**' कलियुग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है। अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों हाथ मिलता है, इसीलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना तुरन्त फल रूप से महत्वपूर्ण मानी गई है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी प्रकार का यज्ञ कार्य हो तो, यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्वप्रथम आवश्यक है, किसी भी प्रकार की पूजा हो उसमें सबसे पहले गणपति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाएं आबद्ध हो जाती है, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती है, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग-पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी है, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे है, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाय या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसीलिए आज के युग में अन्य सभी साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

दुःख की अंधियारी काली रात इतनी अधिक लम्बी भी न हो, कि सुख के सूर्योदय की आशा ही खत्म हो जाय, दुःख जीवन के अंग हो सकते हैं – लेकिन सुखों का सूर्य भी जीवन में जगमगाना ही चाहिए।

- सद्गुरुदेव

'**देव्योपनिषद्**' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका सारा मूल तथ्य निम्न प्रकार से है -

1. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने के लिए।
2. जीवन की बाधाएं और परेशानियों को दूर करने के लिए।
3. जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।
4. शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने के लिए।
5. आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।
6. जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।
7. शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।
8. जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जो की समाप्ति के लिए।
9. राज्य से आने वाली बाधाओं या अकारण भय से मुक्ति के लिए।
10. जेल से छूटने के लिए मुकदमों में शत्रुओं को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।
11. चोर भय, दुष्ट भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।
12. समस्त प्रकार के उपद्रवों से रक्षा के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो, आदि के लिए भी 'भैरव साधना' अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इसीलिए तो शास्त्रों में कहा गया है कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते है, वे अपने जीवन में भैरव साधना अवश्य ही करते हैं। जो वास्तव में ही जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, वे भैरव साधना अवश्य करते हैं। जो अपने जीवन में यह चाहते हैं कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आवे वे निश्चय ही भैरव साधना सम्पन्न करते हैं। जिन्हें अपने बच्चे प्रिय है, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फटकने नहीं देना चाहते, वे अवश्य ही भैरव साधना सम्पन्न करते हैं।

उच्च कोटि के योगी, संन्यासी तो भैरव साधना करते ही है,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

जो श्रेष्ठ बिजनेस मेन या व्यापारी है, वे भी अपने पण्डितों से भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। जो राजनीति में रूचि रखते है, और अपने शत्रुओं पर विजय पाना चाहते हैं, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से भैरव साधना सम्पन्न करवाते हैं। मेरा यह अनुभव रहा है कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक है और महत्वपूर्ण है।

भैरव के विभिन्न स्वरूपों की साधना अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न की जाती है, प्रत्येक साधना का विशेष उद्देश्य, विशेष विधान और विशेष फल होता है, इस लेख में भैरव के तीनों स्वरूपों का वर्णन दिया जा रहा है। **दरिद्रता, रोग नाश, राज्य बाधा निवारण, संतान प्राप्ति, शत्रु स्तम्भन, परिवार रक्षा, अकारण मृत्यु निवारण के लिए श्रेष्ठ साधनाएं हैं।**

आपद उद्धारक बटुक भैरव साधना

'शक्ति संगम तंत्र' के **'काली खण्ड'** में भैरव की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है कि **'आपद'** नामक राक्षस कठोर तपस्या कर अजेय बन गया था, जिसके कारण सभी देवता त्रस्त हो गये और वे सभी एकत्र होकर इस आपत्ति से बचने के बारे में उपाय सोचने लगे। अकस्मात उन सभी की देह से एक-एक तेजोधरा निकली और उसका युग्म रूप पंचवर्षीय बटुक के रूप में प्रादुर्भाव हुआ। इस बटुक ने **'आपद'** नाम के राक्षस को मारकर देवताओं को संकट मुक्त किया, इसी कारण इन्हें आपदुद्धारक बटुक भैरव कहा गया है।

साधना के लाभ

1. जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रव, अड़चन और बाधाओं का इस साधना से समापन होता है।
2. जीवन के नित्य के कष्टों और परेशानियों को दूर करने के लिए भी यह साधना अनुकूल सिद्ध मानी गई है।
3. मानसिक तनावों और घर के लड़ाई-झगड़े, गृह क्लेश आदि को निर्मूल करने के लिए यह साधना उपयुक्त है।
4. आने वाली किसी बाधा या विपत्ति को पहले से ही हटा देने के लिए यह साधना एक श्रेष्ठ उपाय है।
5. राज्य से आने वाली हर प्रकार की बाधाओं या मुकदमें में विजय प्राप्त करने के लिए यह श्रेष्ठ साधना है।
6. इस साधना से साधक की सम्पत्ति को चोर-लुटेरों से भय नहीं रह जाता, चोर उस ओर नजर भी नहीं करते।

साधना विधान

इस साधना को **किसी भी षष्ठी अथवा बुधवार** को प्रारम्भ करें। अपने सामने काले तिल की ढेरी पर **'बटुक भैरव यंत्र'** को स्थापित करें। धूप, दीप जलाकर यंत्र का सिन्दूर से पूजन करें। दोनों हाथ जोड़कर बटुक भैरव का ध्यान करें -

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं,
काम प्रदान वर कपाल त्रिशूल दण्डान्।
भक्तार्ति नाश करणे दधतं करेषु,
तं कोस्तुभा भरण भूषित दिव्य देहम्॥

फिर अपने दायें हाथ में अक्षत के कुछ दानें लेकर अपनी

समस्या, बाधा, कष्ट, अड़चन आदि को स्पष्ट रूप से बोल कर उसके निवारण की प्रार्थना करें। फिर अक्षत को अपने सिर पर से घुमाकर आसन के चारों ओर बिखेर दें। इसके पश्चात् **'बटुक भैरव माला'** से निम्न मंत्र का एक सप्ताह तक नित्य रात्रि 11 माला जप करें -

बटुक भैरव मंत्र

॥ॐ ह्रीं बटुकाय आपद उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्री ॐ स्वाहा॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र व माला को जल में विसर्जित कर दें। शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री पैकेट - 270/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

उन्मत्त भैरव साधना

कश्मीर में अमरनाथ के दर्शन करने के बाद साधक उन्मत्त भैरव के भी दर्शन करते हैं, यह प्रसिद्ध भैरव पीठ में से एक पीठ है, शंकराचार्य ने स्वयं इस पीठ की स्थापना कर इस मूर्ति का प्राण संजीवन किया था। अमरनाथ मन्दिर के दक्षिण में लगभग आधा किलोमीटर आगे उन्मत्त भैरव की पीठ है। इस पीठ से सम्बन्धित सैकड़ों-हजारों चमत्कारिक कथाएं भारत में विख्यात हैं। कहते हैं कि यदि साधक श्रद्धा के साथ नंगे पांव इस पीठ तक पैदल जाकर उन्मत्त भैरव को भोग लगाता है, तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। इस भैरव मन्दिर के पीछे के भाग में गर्म पानी का स्रोत है, इस पानी में नहाने से रोग दूर हो जाते है। उन्मत्त भैरव का स्वरूप ही रोग हर्ता और कल्याणकारी होता है।

भैरव स्तोत्र

यं यं यं यक्षरूपं दश दिशि
विदितं भूमिकम्पायमानं।
सं सं संहारमूर्ति शिर मुकुट
जटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्॥
दं दं दं दीर्घकायं विकृत नख
मुखं ऊर्ध्वरोमं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत
सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

पूर्व आदि दशों दिशाओं में व्याप्त होकर भूमि को कंपायमान करने वाले, यक्ष-स्वरूप, संहारकारक, अपने शिर पर मुकुट पहने हुए, जटाधारी, चन्द्रमा के समान मुख मण्डल वाले, विशाल काय, विकृत नख और मुख वाले, बड़े-बड़े रोम होने से भयावह तथा समस्त पापों का नाश करने वाले क्षेत्रपाल भैरव को सतत् प्रणाम करता हुं।

साधना के लाभ

1. इस साधना को करने से दीर्घकाल से ठीक न हो रही बीमारियों पर भी नियंत्रण प्राप्त होता है, तथा शीघ्र ही रोग का निवारण होता है।
2. श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति के लिए भी इस साधना को बहुत से व्यक्तियों द्वारा सफलता पूर्वक आजमाया गया है।

साधना विधान

इस साधना को **अमावस्या अथवा किसी भी सोमवार की रात्रि से** प्रारम्भ करना चाहिये। साधक सफ़ेद धोती पहन कर तेल का एक दीपक प्रज्ज्वलित कर ले। दीपक के सामने किसी ताम्र पात्र में **'उन्मत्त भैरव यंत्र'** (ताबीज) को स्थापित करें। ताबीज के सामने अक्षत की एक ढेरी बनाकर उसपर **'शुभ्र स्फटिक मणि'** स्थापित करें। दोनों हाथ ज़ोड़कर भैरव ध्यान सम्पन्न करें-

आद्यो भैरव भीषणो निगदितः श्रीकालराजः क्रमाद,
श्री संहारक भैरवोऽप्यथ रु रुश्चोन्मत्तको भैरवः।
क्रोधश्चण्ड उन्मत्त भैरव वरः श्री भूत नाथस्तनो,
ह्यष्टौ भैरव मूर्तयः प्रतिदिनं दद्युः सदा मंगलम्॥

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि - **"मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक अपने लिये उन्मत्त भैरव की साधना में प्रयुक्त हो रहा हूं, शिव के अवतार भगवान शिव मेरे रोगों का शमन करें। (अथवा श्रेष्ठ सन्तान प्राप्ति का वरदान दें)"** ऐसा बोलकर जल को भूमि पर छोड़ दें और ताबीज व मणि पर काजल एवं सिन्दूर से तिलक करें। फिर **'सफेद हकीक माला'** से दो सप्ताह तक निम्न मंत्र का नित्य 5 माला जप करें -

उन्मत्त भैरव मंत्र

॥ॐ उं उन्मत्ताय भ्रं भ्रं भैरवाय नमः॥

दो सप्ताह बाद माला व मणि को जल में विसर्जित कर दें तथा ताबीज को सफेद धागे में पिरोकर रोगी के गले (यदि रोग मुक्ति के लिये प्रयोग किया गया हो) या मां (यदि संतान प्राप्ति के लिए प्रयोग किया गया हो) के गले में धारण करा दें।

एक माह धारण करने के बाद जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 390/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

काल भैरव साधना

भैरव का नाम भले ही डरावना और तीक्ष्ण लगता हो, परन्तु आपने साधक के लिए तो भैरव अत्यन्त सौम्य और रक्षा करने वाले देव है। जिस प्रकार हमारे बॉडी गार्ड लम्बे डील डौल वाले भयानक और बन्दूक या शस्त्र साथ में रखकर चलने वाले होते हैं, पर उससे हमें भय नहीं लगता। ठीक उसी प्रकार उनकी वजह से भैरव भी हमारे जीवन के बॉडी गार्ड की तरह हैं, वे हमें किसी प्रकार से तकलीफ नहीं देते अपितु हमारी रक्षा करते हैं और हमारे लिये अनुकूल स्थितियां पैदा करते है। यह साधना सरल और सौम्य साधना है, जिसे पुरुष या स्त्री कोई भी बिना किसी अड़चन के सम्पन्न कर सकता है। मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में आज भी काल भैरव का मन्दिर है, जिसे '**चमत्कारों का मन्दिर**' कहा जाता है। तंत्र अनुभूतियों की सैकड़ों सत्य घटनाएं इससे जुड़ी हुई हैं।

साधना के लाभ

1. तांत्रिक ग्रंथों में इसे शत्रु स्तम्भन की श्रेष्ठ साधना के रूप में एकमत से स्वीकार किया गया है।
2. यदि शत्रुओं के कारण अपने प्राणों को संकट हो अथवा परिवार के सदस्यों या बाल-बच्चों को शत्रुओं से भय हो, तो यह साधना एक प्रकार से आत्म रक्षा कवच प्रदान करती है। शत्रु की बुद्धि स्वतः ही भ्रष्ट हो जाती है और वह परेशान करने की सोचना ही बन्द कर देता है।
3. यदि आप ऐसी जगह कार्य करते हैं, जहां हर क्षण मृत्यु का खतरा बना रहता हो, एक्सीडेण्ट, दुर्घटना, आगजनी, गोली-बन्दूक, शस्त्र से या किसी भी प्रकार की अकाल मृत्यु का भय हो, तो 'काल भैरव साधना' अत्यन्त उपयुक्त सिद्ध होती है। वस्तुतः यह काल को टालने की साधना है।
4. स्त्रियां इस साधना को अपने बच्चों एवं सुहाग की दीर्घायु एवं प्राणरक्षा के लिये भी सम्पन्न कर सकती हैं।

साधना विधान

कालाष्टमी की रात्रि कालचक्र को अपने अधीन करने की रात्रि है, काली और काल भैरव दोनों की संयुक्त सिद्धि रात्रि है। **इस साधना को 23 दिसम्बर 2005 'कालाष्टमी' या किसी भी अष्टमी की रात्रि को प्रारम्भ करना चाहिये।** साधक लाल (अथवा पीली) धोती धारण कर लें। स्त्रियां लाल साड़ी धारण कर सकती हैं। इसके बाद लाल रंग के आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर लें। अपने सामने एक थाली में कुंकुम या सिन्दूर से '**ॐ भं भैरवाय नमः**' लिख दें। फिर थाली के मध्य '**काल भैरव यंत्र**' और '**महामृत्युंजय गुटिका**' को स्थापित कर दें। लोहे की कुछ कीलें अपने पास पहले से ही मंगा कर रख लें। यदि आपके परिवार में सात सदस्य हैं, तो उन सबकी रक्षा के लिये सात कीलें पर्याप्त होगी।

प्रत्येक कील को मौली के टुकड़े से बांध दें। बांधते समय भी '**ॐ भं भैरवाय नमः**' का जप करें। फिर उन कीलों को अपने परिवार के जिन सदस्यों की रक्षा की कामना आपको करनी है, उनमें से प्रत्येक का नाम एक-एक कर बोलें और साथ ही एक एक कील यंत्र पर चढ़ाते जाएं। यह अपने लिये आत्म रक्षा बंध या कवच प्राप्त करने का प्रयोग है। फिर भैरव के निम्न स्तोत्र मंत्र का मात्र 108 बार उच्चारण करें -

यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि विदितं भूमि कम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ति शिर मुकुट जटाशेखरं चन्द्र बिम्बम्।
दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुखं ऊर्ध्वरोमं करालं।
पं पं पं पाप नाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥

दायें हाथ की मुट्ठी में काली सरसों लेकर निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करें -

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप काल भैरव! मेरी बैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट कट। ॐ काल भैरव, बटुक भैरव, भूत भैरव, महा भैरव, महा भय विनाशनं देवता। सर्व सिद्धिर्भवत्।

फिर अपने सिर पर से सरसों को तीन बार घुमाकर सरसों के दानों को एक कागज में लपेट कर रख दें। इसके बाद निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप करें -

काल भैरव मंत्र

॥ॐ भैरवाय वं वं वं ह्रां क्ष्रों नमः॥

यह केवल एक दिन का प्रयोग है। जप के बाद साधक आसन से उठ जाये, और भैरव के सामने जो भोग रखा है उसे तथा सरसों के दानों, यंत्र व गुटिका को साथ लेकर किसी चौराहे पर रख आएं। लोहे की कीलें किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें, यह शत्रु बाधा निवारण का विशिष्ट प्रयोग है।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

भगवान कार्तिकेय के छः मुख प्रतीक हैं

ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य के

इसलिए सम्पन्न करें

कार्तिकेय साधना

भगवान गणपति के अग्रज भ्राता कार्तिकेय शिव के वीर्य पुत्र है और जहां कार्तिकेय की पूजा की जाती है वहां शिव गुण अपने आप ही आ जाते हैं। इसलिए योग्य संतान प्राप्ति तथा भोग एवं सुख की कामना पूर्ति के लिए कार्तिकेय पूजा सम्पन्न की जाती हैं

पूरे भारत वर्ष में देवता पूजन का विधान विशेष रूप से है, इसमें कुछ पूजाएं ही ऐसी है, जिन्हें उत्तर भारत में भी उतनी ही मान्यता है जितनी दक्षिण भारत में गणपति की पूजा के बारे में सामान्य साधक भी जानता है, शिव की पूजा भी करता है लेकिन ये दोनों ही पूजाएं अधूरी ही है, ये पूजाएं कार्तिकेय पूजन के साथ ही सम्पन्न की जानी चाहिए।

कार्तिकेय रहस्य

कार्तिकेय, भगवान शंकर के ज्येष्ठ पुत्र हैं और देवताओं के रक्षक, रक्षा, विजय, संहार, पराक्रम के देव एवं शीघ्र प्रसन्न होने वाले, निश्चित सिद्धि प्रदाता माने जाते हैं, कशमीर में, दक्षिण भारत में विशेष मन्दिर तथा तीर्थ स्थान है, दक्षिण में इन्हें प्रधान देव माना गया है, भगवान सुब्रमण्यम के नाम से इनकी विशेष पूजा-साधना की जाती है, जिस प्रकार उत्तर भारत में **'गणेशाय नमः'** अथवा किसी भी कार्य से पहले गणेश पूजा का विधान है। उसी प्रकार पूरे दक्षिण भारत में क्षेत्र में **'श्री मुरुगन नमः'** जन-जन में व्याप्त है, इनके अन्य नाम हैं - **स्कन्द, षडानन, षड्मुख, शक्तिधर, आग्नेय, कुमार** इत्यादि प्रमुख है, शिव और पार्वती के एकमात्र पुत्र, श्री गणेश तो योगपुत्र है।

'शारदा तिलक' तथा **'श्री तत्व निधि'** ग्रन्थों में इनकी उपासना का विस्तृत वर्णन दिया गया है, **कार्तिकेय के मुरुगुन नाम में 'मुरुगु' शब्द का तात्पर्य है, सौन्दर्य, ताजगी, सौरभ, माधुर्य, दिव्यता तथा आनन्द और सुब्रह्मण्य का तात्पर्य है** ज्ञान, लक्ष्मी, शत्रुनाश, मृत्युजंय, निरोगता और इन सब तत्वों की प्राप्ति कार्तिकेय साधना से होती है, कार्तिकेय के छःमुख - **ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान** और **वैराग्य** के प्रतीक हैं, और यह सिद्ध बात है कि जहां सुब्रमण्यम अर्थात् कार्तिकेय की पूजा होती है, वहां ज्ञान है, वर प्राप्ति है, ग्रह रक्षा है, धर्म और वेद है, बल है, दुष्टों का नाश है, शक्ति है।

कार्तिकेय साधना विधान

गृहस्थ लोगों के लिए ही कार्तिकेय पूजा का विशेष विधान है, क्योंकि कार्तिकेय रक्षाकारक देव हैं, गृहस्थ को ही धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, का वर आवश्यक है, गृहस्थ को ही शुत्रबाधा से रक्षा, निरोगता, और श्री अर्थात् लक्ष्मी और प्रसिद्धि आवश्यक है, और सबसे बड़ी बात यह है कि कार्तिकेय साधना अत्यन्त सरल है।

कार्तिकेय साधना हेतु **षष्ठी तिथि** उत्तम मानी गई है, इसके अतिरिक्त उत्तरा तथा कृतिका नक्षत्र, **'स्कन्द'** नक्षत्र माने गये है, पूरे परिवार के साथ यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

कार्तिकेय पूजा में सर्वप्रथम तो गणेश पूजा की जाती है, पूरे पूजन के पश्चात् भी गणेश का पूजन पुनः किया जाता है, क्योंकि श्री गणेश, कार्तिकेय के लघु भ्राता है।

इस साधना हेतु ताम्रपात्र में शुद्ध जल, तेल, चंदन, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर), तुलसी पत्र तथा विभूति आवश्यक है, कार्तिकेय नैवेद्य में शहद तथा पीसा हुआ बाजरा विशेष रूप से अर्पित किया जाता है।

साधना क्रम में एक विशेष पीठ बना कर उस पर **'कार्तिकेय यंत्र'** स्थापित करें, इसके साथ एक ओर अग्नि दीप अर्थात् तेल का दीपक, दूसरी ओर भाले के आकार का शूल तथा लाल रंग के कपड़े से बनाई हुई पताका (ध्वज) अवश्य स्थापित करना चाहिए, यह शूल शक्ति का प्रतीक है, कार्तिकेय का मूल अस्त्र है, तथा पताका विजय का प्रतीक है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सर्वप्रथम पूजा स्थान में एक और गणपति स्थापित कर गणपति का पूजन करें, फिर **कार्तिकेय यंत्र** के चारों ओर चावल की आठ ढेरी बना कर आठ सुपारी रखें, और क्रमशः **इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर** और **ईशान** की स्थापना कर, प्रत्येक को हाथ जो कर नमस्कार कर कुंकुम तथा पुष्प अर्पित करें, तत्पश्चात् कार्तिकेय **आयुधों, शूल, पताका तथा दीप** का पूजन करें, इसके पश्चात् **भगवान सुब्रमण्यम** का ध्यान करते हुए उनके रक्त वर्णीय अर्थात् लाल वस्त्र, लाल शोभा एवं रक्त मुख का ध्यान करते हुए आह्वान करें, सर्वप्रथम शुद्ध जल यंत्र के सामने पात्र में अर्पित करें, फिर तेल अर्पित करें, यंत्र पर भस्म लगाएं तथा एक-दूसरे पात्र में यंत्र रखकर **कार्तिकेय बीज मंत्र** का जप करते हुए पंचामृत चढ़ाएं।

कार्तिकेय बीजमंत्र

//ॐ मुरुगुवै नमः //

'स्फटिक माला' से एक माला बीज मंत्र का जप करते हुए निरन्तर पंचामृत को यंत्र पर अर्पित करते रहें, इस पंचामृत को परिवार के सभी सदस्यों को ग्रहण करना चाहिए, पूजन का यह पंचामृत सर्व रोगनाशक है।

शरीर से निर्बल, निरन्तर बीमार रहने वाले व्यक्ति द्वारा यदि सात दिन निरन्तर पूजन कर यह पंचामृत ग्रहण किया जाय तो उसका रोग चाहे वह शारीरिक हो अथवा मानसिक शांत हो ही जाता है।

पूजन के पश्चात् लाल रंग की पुष्प माला तथा पुष्प कार्तिकेय देव को अर्पित करें, और पात्र में रखा जल पूरे घर में थोड़ा-थोड़ा अवश्य छिड़कें, विजय पताका अपने घर के ऊपर लगानी चाहिए, इससे कभी भी घर पर शत्रु प्रभाव अथवा तांत्रिक क्रिया दोष नहीं पड़ता।

भगवान कार्तिकेय इच्छा शक्ति क्रिया शक्ति तथा ज्ञान शक्ति के शुद्ध स्वरूप है, कार्तिकेय शिव और शक्ति के मिलन का विशुद्ध रूप है, जहां कार्तिकेय है वहीं शिव भी है और शक्ति भी है।

पूजन के पश्चात् आठ छोटे बालकों को कार्तिकेय कुमार का स्वरूप मानते हुए भोजन कराना चाहिए। कार्तिकेय पूजा साधना से संतान, विजय, आयु, शक्ति, निर्भयता, लक्ष्मी, यश इत्यादि की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है, इसीलिए इनका स्वरूप सम्पूर्ण प्रसन्न अत्यन्त पुण्यमय एवं समस्त मंगल प्रदान करने वाला है।

साधना सामग्री - 330/-

कार्त्तिकेय जन्म की कथा

पुराणों में वर्णित यह कथा विचित्र तथा कल्पना युक्त हैं, लेकिन यह सत्य है कि पौराणिक कथाऐं जीवन से सम्बन्धित है और जीवन की क्रियाओं भोग, गर्भधारण, उत्पत्ति इत्यादि का विस्तृत वर्णन है। भगवान कार्तिकेय के सम्बन्ध में यह कथा आती है कि एक युग में पार्वती द्वारा घोर तपस्या करने पर भगवान शिव ने वरदान दिया, पार्वती ने कहा कि - 'मैं जन्म-जन्म से शिव की अर्द्धांगिनी हूं और इस जन्म में भी शिव पत्नी बनना चाहती हूं।' भगवान शिव की इच्छानुसार सप्त ऋषियों ने हिमाचल पुत्री पार्वती और शिव का विवाह सम्पन्न कराया तथा शिव पार्वती कैलाश पर्वत पर निवास करने लगे। सांसारिक जगत से दूर शिव और पार्वती प्रेम में रत रहते थे। बहुत काल बीत जाने पर भी जब गर्भ धारण की स्थिति नहीं बनी तो देवताओं में चिंता होने लगी और विचार करने लगे कि किस प्रकार गर्भ की स्थिति बने। देवताओं ने विचार कर यह निश्चय किया कि शिव पार्वती रमण के पश्चात् यदि अग्नि देव उनके समक्ष उपस्थित हो जाते है तो श्रेष्ठ स्थिति बन सकती है। देवताओं की इच्छानुसार अग्निदेव रमण के समय कैलाश पर्वत पहुंचे लेकिन छोड़ा जल्दी पहुंच जाने के कारण भगवान शिव स्खलित हो गये और उनका वीर्य गंगा में गिरा। जिसे पत्तों ने धारण कर लिया, यह स्थिति देखकर ब्रह्मा ने इसके छः भागों को जोड़कर बालक की रचना की और उसे षड़ानन कार्तिकेय नाम दिया। बालक छोटा ही था कि एक दिन माता पार्वती और भगवान शिव गंगा किनारे भ्रमण कर रहे थे तब बालक को देखकर मां पार्वती के स्तनों में मातृत्व जाग्रत होकर दुग्धधारा बहने लगी और मां पार्वती ने अपने पुत्र को गोद में लेकर दुध पिलाया और उसे बड़ा किया, भगवान शिव को भी अपने त्रिनेत्र से यह ज्ञात हुआ कि यह बालक मेरा ही अंश है, इस पर उन्होंने वरदान दिया कि - 'बड़ा होकर यह बालक असीम पराक्रमी बनेगा।'। कार्त्तिकेय बड़े होकर अपने पराक्रम के आधार पर देवताओं के सेनापति बने तथा पूरे संसार में भगवान शिव के प्रथम पुत्र के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। भगवान शिव की शक्ति, तपस्या, पराक्रम के साथ मां पार्वती का सौन्दर्य, सौरभ, माधुर्यता कार्तिकेय में प्रकट हुई। इसी कारण विवाहिक स्त्रियां श्रेष्ठ संताप प्राप्ति के लिये कार्त्तिकेय की साधना करते है तथा पुरुष शिव प्राप्ति के साथ-साथ बल, वीर्य, पराक्रम के लिये भगवान कार्तिकेय की साधना करते है। इसी कारण पूरे दक्षिण भारत में शिव के साथ ''मृगुन कार्तिकेय'' की विशेष मान्यता है।

भौतिक जीवन का आधार
सौन्दर्य प्राप्ति ही है
और

सौन्दर्य प्राप्ति के लिये कृत्रिम साधनों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है। इसके लिये सम्पन्न कीजिये

कामदेव प्रणीत

सौन्दर्योत्तमा साधना

मन की शुद्धता निरन्तर मंत्र जप से प्राप्त होती है, लेकिन आज के युग में तन भी सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक एवं प्रभाव युक्त होना ही चाहिए। सुन्दरता तो पुरुष और स्त्री दोनों के जीवन का आभूषण है। अपने देह के रूप, सौन्दर्य की कमियों को दूर कर अपूर्व कांति, सौन्दर्य प्राप्त करने के लिये सम्पन्न कीजिये, इस साधना को

ऋषि लोम प्रतिदिन की तरह आज भी संध्या अर्चना कर रहे थे, किन्तु आज उनका हृदय कुछ व्यक्ति था, उनके शांत निस्पृह मुख-मण्डल पर कुछ अवसाद की झलक मिल रही थी, वे संध्या करने बैठे पर मन स्थिर न होने के कारण उठ गये, आश्रम में चहल कदमी करने लगे। किसी में इतना साहस न था, कि कोई उनके समीप जाकर उनसे उनकी व्याथा का कारण पूछने का साहस कर पाता। उनकी तेजस्विता, प्रखरता शनैः शनै प्रचण्ड स्वरूप धारण कर रही थी। आश्रम में रहने वाले ही नहीं अपितु वहां के वृक्ष, पशु, पक्षी तक भी स्थिर थे, किसी में भी किञ्चित मात्र चंचलता दिखाई नहीं दे रही थी।

कोई भी समझ नहीं पा रहा था, कि वह क्या करें? किस प्रकार से महर्षि के हृदय को टटोले? - किसी में साहस नहीं था। अर्द्धरात्रि व्यतीत हो चुकी थी, किन्तु महर्षि लोम के मुख पर अभी तक चिन्ता का भाव था।

आश्रम का प्रत्येक प्राणी स्तब्ध था, महर्षि लोम में अचानक यह परिवर्तन किस प्रकार से आया, उनके शांत निर्विकार मुख पर आज उनके हृदय का भाव स्पष्ट रूप से दिख रहा था। क्रोध पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर चुके थे लेकिन आज क्या घटित हो गया था, कि क्रोध उन पर पुनः प्रभावी होता स्पष्ट दिख रहा था, यद्यपि वे स्वयं में अति संयमित थे, परन्तु क्रोध उनसे युद्ध कर उन पर विजय प्राप्त करता हुआ प्रतीत हो रहा था।

शांत निस्तब्ध वातावरण... आश्रम में चम्पा, बेला तथा जंगली पुष्पों की मिश्रित सुगन्ध व्याप्त हो रही थी। चन्द्रमा की शीतल किरणें भी इस अवसर पर दग्ध प्रतीत हो रही थी। हृदय में अनेक विचारों का आलोड़न-विलोड़न चल रहा था, ऐसा प्रतीत हो रहा था, कि आज वे कुछ निर्णय ले लेंगे। कार्तिक मास होने के कारण वातावरण में शीत का प्रभाव भी व्याप्त होने लगा, लेकिन इस सुगन्धित तथा चित्त को शांत करने वाले वातावरण में भी महर्षि लोम का चित्त शांत होने में असक्षम लग रहा था।

मध्य रात्रि होने के कारण आश्रम के शेष व्यक्ति भी अपनी-अपनी साधनाओं को समाप्त कर धीरे-धीरे अपनी कुटिया की ओर बढ़ चले थे, वातावरण में अब तक जो कुछ एक-एक लोगों की वजह से हलचल थी, वह भी शांत हो चुकी थी, बाह्य वातावरण तो पूर्णरूप से शांत था, लेकिन आंतरिक उपद्रव था कि समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रहा था, रात्रि

की निस्तब्धता में किसी का रुदन सुनाई दे रहा था। महर्षि लोम जानते थे कि कौन रो रहा है, लेकिन शायद वे भी उपयुक्त समय की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि योगी का प्रत्येक कार्य निश्चित समय में ही होता है। धीरे-धीरे रात्रि व्यतीत होती जा रही थी। हिचकियां थमती थी, तो कभी रुक न पाने के कारण सुनाई दे जा रही थी। उसका दर्द स्पष्ट रूप से एहसास हो रहा था।

आकाश में तारों के समूह भी धीरे-धीरे अपने आपको समेटने लगे थे, धरा अपने स्वामी के आगमन की तैयारी करने लगी। महर्षि लोम के हृदय में मंथन तीव्र गति से चल रहा था, कि उन्होंने अपने आपको कुछ निश्चय किया, फिर प्रातः स्नान कर साधना आदि कर्म सम्पन्न किया।

पुनः वे अपनी पुत्री के समक्ष जा खड़े हुए, जिसके नेत्र रात भर रोने के कारण सूज गये थे। उनको देखते ही उनके मानस में वह दृश्य कौंध उठा, जिसके कारण उनकी पुत्री तारा को अपमान सहन करना पड़ा, एक प्रकार से यह तारा का अपमान नहीं अपितु उनका अपमान था, उनको तप, उनके ज्ञान, उनकी विद्वता, तेजस्विता, प्रखरता को चुनौती दी गई थी। यह उनके तप परीक्षण का समय था।

तारा प्रायः जब पुष्प लेने वन की ओर दूर निकल गई, तो किसी ने उसका उपहास उड़ाते हुए कहा - महर्षि लोम स्वयं तो इतने तेजस्वी हैं, लेकिन उनकी पुत्री तारा नारी गुणों से युक्त होते हुए भी एक साधारण स्त्री के समान है, उनके रूप में किसी को भी आकर्षित करने की क्षमता नहीं है।

तभी किसी अन्य व्यक्ति की आवाज आई - उससे ज्यादा सौन्दर्ययुक्त तो ये जंगली घास-फूस ही दिखाई देते हैं।

वे वाक्य तारा के हृदय को कचोट उठे, यद्यपि आन्तरिक गुणों में वह सर्वश्रेष्ठ थी, लेकिन ब्राह्य सौन्दर्य में वह अत्यन्त साधारण थी। परन्तु आज से पूर्व कभी उसने इसे अपनी न्यूनता नहीं समझी, अपितु इसके विपरीत वह शास्त्रों, वेदों का अध्ययन करती रही, उसकी तपस्या का तेज उसके चेहरे से स्पष्ट दिखाई देता, आज फिर भी न जाने क्यों उसके हृदय को चोट पहुंची और वह फूट-फूट कर रोई।

महर्षि लोम ने उसे समझाया, लेकिन संतान के मोह के कारण वे भी उसकी व्यथा को अनुभव कर चिन्तित हो गये। उन्होंने उसे उसके आन्तरिक गुणों की श्रेष्ठता का व्याख्यान कर उसे सांत्वना देने का प्रयास किया। लेकिन उसके हृदय में तो अब बाह्य सौन्दर्य को प्राप्त करने की भी इच्छा जाग्रत हो चुकी थी...

आज कल सौन्दर्य प्राप्ति के लिये कृत्रिम साधनों का उपयोग विशेष रूप से हो रहा है इससे बाह्य देह, त्वचा इत्यादि बहुत खराब हो जाती है। स्थिति तो यह है कि बिना मेकअप किसी स्त्री को देख लें तो पहचान भी नहीं पायें, लेकिन हमारे ऋषियों ने इस प्रकार की कोई धारणा नहीं की थी उन्होंने तो साधना-मंत्र के माध्यम से शरीर के दोष मिटाकर सौन्दर्य प्राप्ति का मार्ग बताया, जो कि स्थाई है।

प्रस्तुत साधना में ऋषि लोम और तारा की कथा तो एक छोटा सा भाग है। ऐसे हजारों उदाहरण हमारे इतिहास में मिल जाते हैं। विचार करें कि हमारे पूर्वज स्त्री-पुरुष इतने अधिक सुन्दर और आकर्षक क्यों होते थे? प्राचीन साहित्य में स्त्री-पुरुषों का शारीरिक विवेचन ही यह स्पष्ट करता है कि साधना और सौन्दर्य पर अनुसंधान के क्षेत्र में हम बहुत आगे थे। अब समय आ गया है कि पश्चिमी संस्कृति का लबादा हटाकर आर्य संस्कृति को पुनः स्थापित किया जाये।

तारा ने उठकर जब अपने पिता महर्षि लोम को प्रणाम किया, तो वे चैतन्य हुए और उन्होंने तारा को अपनी कुटिया में आने को कहकर वहां से लौट पड़े। कुछ समय पश्चात् जब तारा उपस्थित हुई, तो महर्षि लोम ने कहा -

यद्यपि तुम नारीत्व के श्रेष्ठतम गुणों से सुशोभित हो, लेकिन आज तुम्हारी व्यथा यह स्पष्ट हो रही है, कि स्त्री की पूर्णता तभी है, जब वह आन्तरिक और बाह्य रूप में सौन्दर्ययुक्त हो। आज मैं तुम्हें बाह्य सौन्दर्य की प्राप्ति मंत्र द्वारा नहीं, अपितु तंत्र के द्वारा कराऊंगा।

तंत्र शास्त्र के अनुसार सौन्दर्य प्राप्ति के लिए तुम्हें यह साधना सम्पन्न करनी है। यदि तुमने इस साधना को पूर्णता के साथ आत्मसात कर लिया, तो तुम स्वतः ही रूप, लावण्य, यौवन से युक्त अद्वितीय सौन्दर्य की स्वामिनी बन जाओगी।

तंत्र के क्षेत्र का यह सौन्दर्य प्रयोग अद्वितीय है। अतः तुम

बिना विलम्ब किये इस साधना को सम्पन्न कर लो, इस प्रयोग के माध्यम से किसी भी आयु वर्ग की स्त्री हो या पुरुष यह सौन्दर्य प्राप्त करने का अधिकारी बन ही जाता है। हां इस प्रयोग को सम्पन्न करने से पूर्व तुम्हें मुझे गुरु रूप में स्वीकार कर मेरी शिष्या बनना पड़ेगा तथा अपने हृदय में मेरे प्रति पूर्ण विश्वास तथा श्रद्धा भाव रखकर, मेरे कथनासुसार साधना सम्पन्न करनी पड़ेगी।

तारा ने इस साधना को अपने गुरु के सान्निध्य में पूर्णता के साथ सम्पन्न किया और कुछ ही दिनों पश्चात् साधना के प्रभाव से उसके सौन्दर्य में निरन्तर वृद्धि होती रही। उसके मुख का गौर वर्ण चन्द्रमा को भी लजाने वाला हो गया। उसके नेत्रों को देखकर लगता, कि वे कमल दल का परिहास उड़ा रहे हैं। उसकी कान्ति स्वर्णिम आभा युक्त हो गई। बाल उसकी जंघाओं को स्पर्श करने लगे। वह साक्षात अप्सरा लगने लगी। कोई भी उसे देखकर ठिठक जाता। यहां तक कि उसके सौन्दर्यकर्षण से वहां के पशु-पक्षी आदि भी मुग्ध होने लगे थे।

अब तारा स्वयं में पूर्णता का एहसास कर रही थी। उसके चेहरे का लावण्य देखकर वह कल्पना में प्रतिबिम्बित किसी अद्वितीय सौन्दर्य साम्राज्ञी के रूप में दृष्टिगोचर होती थी, सौन्दर्य की पूर्णता को वह प्राप्त कर चुकी थी। उसके पूर्ण सौन्दर्ययुक्त होने की बात जब उसके पति को ज्ञात हुई, तो वह स्वयं उसे अपने घर वापिस लाने के लिए महर्षि लोम के पास पहुंचा तथा अपने कृत्य के लिए क्षमा याचना करने लगा (तारा को उसके पति ने सौन्दर्य न्यूनता के कारण ही अपने घर से निकाल दिया था।) महर्षि लोम ने तारा से पूछकर उसे उसके घर भेजने का निर्णय लिया, जिससे वह फिर किसी के द्वारा अपमानित न हो।

आप भी किसी शुभ मुहूर्त में अथवा सिद्धि योग में सौन्दर्योत्तमा प्रयोग को सम्पन्न कर साधक अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं। अतः तंत्र के क्षेत्र में सौन्दर्य के श्रेष्ठतम प्रयोगों में प्रमुख स्थान यह प्रयोग, जिसे महर्षि ने तारा को सम्पन्न करवाया था, यहां सौन्दर्य की इच्छा रखने वाले साधकों के लिए प्रस्तुत हैं।

साधना विधान

1. इस प्रयोग में आवश्यक सामग्री **'सौन्दर्योत्तमा यंत्र'** तथा **'सौन्दर्य माला'** है।
2. इस साधना को किसी भी सिद्धि योग में अथवा विशेष दिवस पर सम्पन्न कर सकते हैं अथवा किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ कर सकते हैं।
3. साधक गुलाबी वस्त्र धारण करें।
4. लाल रंग के वस्त्र पर कुंकुम से *'क्रीं'* लिख कर यंत्र को स्थापित करें।
5. यंत्र का पूजन केसर, अक्षत तथा पुष्प से करें।
6. सौन्दर्य माला से निम्न मंत्र का 5 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ क्रीं कृष्णाय सौन्दर्याय क्रीं ॐ नमः॥

7. मंत्र जप समाप्त होने पर यंत्र को पूरे शरीर से स्पर्श करा लें।
8. ऐसा पांच दिन तक नित्य करें।
9. पांच दिन बाद यंत्र तथा माला को नदी में या समुद्र में प्रवाहित कर दे।

साधना सामग्री - 300/-

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291–2432209 या टेलीफैक्स : 0291–2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

की प्राप्ति होती है।

2. इस प्रकार का यंत्र धारण करने से व्यक्ति के पराक्रम में वृद्धि होती है और शत्रुभय समाप्त हो जाता है।
3. जिसके गले में इस प्रकार का यंत्र पहना हुआ हो तो उसे किसी प्रकार का राज्य भय नहीं होता है और निरन्तर राज्य में उन्नति होती रहती है।
4. जो इस प्रकार का यंत्र धारण करता है उसके घर में पारिवारिक कलह समाप्त हो जाती है और घर में पूर्ण सुख शांति और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
5. जो स्त्री अपने पति की निरन्तर उन्नति चाहती है, उसको चाहिये कि वह इस प्रकार का यंत्र अपने गले में धारण करें।

विधुत लक्ष्मी यंत्र - 175/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गुणनिधि यंत्र

भगवान गणपति की साधना श्रेष्ठतम साधनाओं में मानी जाती है। **महर्षि विश्वामित्र, भगवत्पाद शंकराचार्य तथा गुरु गोरखनाथ** ने भी अपने जीवन में गणपति की साधनाएं सम्पन्न की थी।

1. गुणनिधि यंत्र वास्तव में नवनिधि यंत्र ही है जिसका स्थापन मात्र ही पर्याप्त कहा गया है।
2. गुणनिधि यंत्र की दुकान अथवा फैक्टरी में रखने पर अनावश्यक विघ्न, बाधाओं, उपद्रवों से पूर्ण मुक्ति मिलती है।
3. यही एक मात्र ऐसा यंत्र है जिसकी स्थापना से जमा पूंजी में निरन्तर वृद्धि होती ही रहती है।
4. गुणनिधि यंत्र की यह भी विशेषता है कि यह अन्य यंत्रों के विपरीत केवल साधक के जीवनकाल से सम्बन्धित न होकर पीढ़ियों तक के लिए लाभदायक होता है।
5. गुणनिधि यंत्र ही वह यंत्र है जिसके ऊपर भूगर्भ साधना सफलतापूर्वक सम्पन्न की जा सकती है।

गुणनिधि यंत्र - 240/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इन्द्रेश

मंत्रः *//ॐ श्रीं इन्द्राक्षी क्लीं ॐ//*

1. दीपावली की रात्रि में यदि मन की इच्छा बोल कर इन्द्रेश अग्नि में समर्पित कर दें, तो शीघ्र कामना पूर्ण होती है।
2. यदि किसी पर अभिचार या तांत्रिक प्रयोग हुआ हो, तो इन्द्रेश को उपरोक्त मंत्र 11 बार पढ़ते हुए शरीर के ऊपर घुमाना चाहिए, फिर उसे दक्षिण दिशा में गाड़ देना चाहिए। विपरीत प्रभाव समाप्त हो जायेगा।
3. यदि इन्द्रेश को मस्तक पर धारण कर उपरोक्त मंत्र का 42 बार उच्चारण नित्य सात दिन तक किया जाय, तो व्यक्ति अद्वितीय, आभायुक्त एवं आकर्षक हो जाता है। सात दिन बाद इन्द्रेश को नदी के जल में विसर्जित कर दें।
4. यदि दुकान की बिक्री कम हो गई हो या गिरती ही जा रही हो, तो इन्द्रेश पर मुट्ठी भर उड़द के दानें चढ़ा कर उसके समक्ष उपरोक्त मंत्र का 75 बार उच्चारण करें। फिर उन उड़द के दानों को दक्षिण दिशा में फेंक दें। यह प्रयोग एक सप्ताह तक करें, फिर इन्द्रेश को किसी जलाशय में विसर्जित कर दें। ऐसा करने पर कुछ दिन के भीतर-भीतर दुकान की बिक्री बढ़ने लगती है।
5. यदि व्यापार में निरन्तर घाटा होता ही जा रहा हो, तो अपनी फैक्टरी, कार्यालय या व्यापारिक प्रतिष्ठान के चारों ओर चारों दिशाओं में एक-एक इन्द्रेश उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण कर गाड़ दें। फिर उस स्थान पर दो-दो फूल रख दें। ऐसा करने से व्यापार बढ़ता रहता है।
6. पूरे वर्ष भर अजेय और ताकतवान बने रहने के लिए, जिससे शत्रु आप पर हावी न हो सकें, इन्द्रेश को किसी मिट्टी के पात्र में चावल भर कर उस पर रख दें, फिर उस पर उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए सिन्दूर की नौ बिन्दियां ग्यारह दिन तक लगाएं, ग्यारह दिन बाद इन्द्रेश को पात्र सहित नदी में प्रवाहित कर दे।

इन्द्रेश - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सूर्याभ

मंत्रः *//ॐ शं शौं शं फट्//*

1. यदि सूर्याभ को गले में धारण किया जाय, तो सहजता से ध्यान की स्थिति प्राप्त होती है।
2. यदि दीपावली को उपरोक्त मंत्र 51 बार बोल कर सूर्याभ को शत्रु के घर में फेंक दिया जाय, तो प्रबल से प्रबल शत्रु भी 15 दिनों के अंदर पैरों में आ गिरता है।
3. यदि सूर्याभ को बालक के गले में दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र 63 बार पढ़ते हुए धारण करा दिया जाय, तो बालक कुशाग्र बुद्धि एवं वाक् चातुर्य युक्त होता है।

4. घर की तिजोरी भरी रहे, घर में अन्न, धन आदि बना रहे, इसके लिए दीपावली की रात्रि को सूर्याभ लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रखें।

5. सूर्याभ के समक्ष दीपावली के दिन उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार जप कर उसे अपने सिर पर से घुमा कर नदी में प्रवाहित करने से व्यक्तित्व निखरता है।

6. गुरु सिद्धि प्राप्त करनी हो, तो दीपावली की रात्रि को उपरोक्त मंत्र सूर्याभ के समक्ष 81 बार बोलकर, इसे गले में धारण कर लें, गुरु किसी न किसी रूप में अवश्य ही दर्शन देंगे।

सूर्याभ - 100/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अरुणज

मंत्र: *॥ॐ क्रीं क्रीं श्रौं श्रौं फट्॥*

1. यदि अरुणज को अशोक वृक्ष के पत्ते पर रख कर उसका पूजन कर उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण किया जाय, तो छाती से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाते हैं। यह प्रयोग पूरे शुक्ल पक्ष तक करें। फिर अरुणज को नदी में प्रवाहित कर दें।

2. अरुणज को दाहिने हाथ में लेकर अपने मस्तक पर, जहां शिखा बांधी जाती है, वहां रखकर उपरोक्त मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें, इसी प्रकार दोनों नेत्र, मुंह, गला, हृदय तथा पूरे देह पर घुमाते हुए करें, फिर अरुणज को किसी नदी, तालाब या जलाशय में प्रवाहित कर दें। इससे व्यक्ति का भाग्योदय होता है और वह निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

3. यदि घर में हमेशा कलह का वातावरण बना रहता हो, तो अरुणज के सामने 101 बार उपरोक्त मंत्र बोल कर, फिर उसे परिवार के हर सदस्य के सिर पर से घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। ऐसा करने से पारिवारिक शांति और प्रेम बना रहता है।

4. यदि व्यक्ति को बहुत अधिक क्रोध आता हो, तो सात दिन तक अरुणज पर त्राटक करते हुए प्रतिदिन उपरोक्त मंत्र का 21 बार उच्चारण करें, सात दिन के बाद उसे नदी में प्रवाहित कर दें, क्रोध संयत होगा।

5. सम्पूर्ण कार्तिक मास में अरुणज को अपने पूजा स्थान में स्थापित रखने से गृह दोष का निवारण होता है।

6. नित्य महालक्ष्मी पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् 'अरुणज' पर लाल पुष्प चढ़ाते हुए यदि कोई स्त्री सौन्दर्य प्राप्ति की कामना कर उपरोक्त मंत्र का 51 बार उच्चारण करती है, तो उसकी कामना पूर्ण होती है। अगले दिन अरुणज को किसी नारायण मंदिर में चढ़ा दें।

अरुणज - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

त्रिलोचन

मंत्र: *॥ॐ शं शां शौं ॐ॥*

1. यदि राज्य बाधा आ रही हो, तो पीत वस्त्र पर कुंकुम से त्रिभुज बनाएं, त्रिभुज के मध्य में अपना नाम लिखें, अपने नाम के ऊपर त्रिलोचन को स्थापित कर उस पर 51 चावल के दानें चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का जप करें। मंत्र जप के बाद चावल के दानों को पक्षियों को खिला दें। यह प्रयोग नौ दिन का है, नौ दिन पश्चात् त्रिलोचन को नदी में प्रवाहित करें।

2. व्यापारिक शत्रु यदि आप पर हावी हो रहा हो तथा आपकी प्रत्येक कोशिश असफल होती जा रही हो, तो अर्द्धरात्रि को त्रिलोचन के समक्ष उपरोक्त मंत्र का 101 बार उच्चारण कर उसे अग्नि में समर्पित कर दें।

ये यंत्र, सामग्री ऐसी है जिसके लिये न किसी मुहूर्त की आवश्यकता है और न ही लम्बे-चौड़े विधि विधान की, बस आप सामग्री को स्थापित कर दीजिये एवं जो आवश्यक मंत्र जप है उसे सम्पन्न कर दीजीये और फिर इसका प्रभाव अपने घर, परिवार, व्यापार, कार्यक्षेत्र में देखिये। इस बात की पूर्ण आवश्यकता है कि ये सभी सामग्रियां मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिये। इनका यदि प्रति दिन पूजन नहीं कर सकें, तो सिर्फ स्थापित रहने पर भी पूर्ण प्रभाव प्रदायक हैं।

3. त्रिलोचन के समक्ष एक माह तक नित्य 31 बार उपरोक्त मंत्र का जप करने से शत्रु बाधा से मुक्ति मिलती है। इसे दिनांक 29.11.05 से आरम्भ कर 6.12.05 तक सम्पन्न करें। 6.12.05 त्रिलोचन को निर्जन स्थान पर फेंक दें।

4. त्रिलोचन के समक्ष उपरोक्त मंत्र का 65 बार उच्चारण कर यदि इस पर 65 केसर की बिन्दियां लगाई जायें, तो प्रयोग करने वाले का शरीर कामदेव/रति के समान आकर्षक हो जाता है। यह प्रयोग तीन दिन का है, तीन दिन बाद त्रिलोचन को नदी में प्रवाहित कर दें।

5. उपरोक्त मंत्र का 19 बार जप कर त्रिलोचन को रोगी के सिर पर सात बार घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देने से रोग से मुक्ति प्राप्त होती है।

त्रिलोचन - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

कमललोचन

मंत्रः *//ॐ रुं मुक्तायं रुं ॐ//*

1. यदि एक कमललोचन को रोगी के तकिये के नीचे रख दिया जाय, तो वह कितना ही विक्षिप्त क्यों न हो, पन्द्रह दिन के भीतर-भीतर स्वस्थ होने लग जाता है।

2. दिनांक 3.12.05 को किसी सफेद रंग के वस्त्र पर कुंकुम से चतुर्दल कमल बना कर उसके मध्य में अपना नाम लिखें, कमल के प्रत्येक दल पर भी कुंकुम की बिन्दी लगायें। अपने नाम के ऊपर कमल लोचन रख कर उपरोक्त मंत्र का 41 बार जप करें। यह प्रयोग दिनांक 3.12.05 तक नित्य करें। इस प्रयोग से व्यक्ति को जिन कारणों से दुर्भाग्य का सामना करना पड़ रहा है, वे समाप्त होंगे।

3. कमल लोचन को धन त्रयोदशी से गोवर्धन पूजा के मध्य किसी भी दिन श्रेष्ठ समय देख कर इसे यदि अपनी दुकान के सामने उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए जमीन में दबा दें, तो दुकान की ओर ग्राहक स्वतः ही आकर्षित होने लगेंगे। इसके अलावा यह प्रयोग मार्गशीर्ष पूर्णिमा दिनांक 15.12.05 को भी सम्पन्न कर सकते हैं।

4. नेत्रों में तीव्र सम्मोहन क्षमता प्राप्त करने के लिए कमल लोचन अशोक के पत्ते पर स्थापित कर उसका पूजन करें। घी से उपरोक्त मंत्र की ग्यारह आहुति देकर कमललोचन की आहुति दें। अगले दिन हवन की राख को नदी में प्रवाहित कर दें तथा त्राटक का अभ्यास निरन्तर करें, शीघ्र सफलता प्राप्त होगी।

5. प्रेमी अथवा प्रेमिका को लिखकर श्वेत वस्त्र में बांधकर कमललोचन को यदि मंत्र जप के पश्चात् रात्रि को जलाशय में विसर्जित कर दिया जाय, तो प्रेमी/प्रेमिका वशीभूत होते हैं।

कमललोचन - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

क्रीं चक्र

मंत्रः *//ॐ क्रौं क्रीं ॐ//*

1. यदि शत्रुओं ने जीना हराम कर दिया है और खुद को व परिवार वालों की जान पर बन आई है, तो एक कागज पर शत्रुओं के नाम लिख कर, उसके ऊपर **'क्रीं चक्र'** को पांच काली मिर्च के दानों के साथ रख कर उपरोक्त मंत्र को 21 बार उच्चरित कर अग्नि में समर्पित कर दें, शत्रु स्वतः ही निर्बल हो जायेंगे।

2. यदि किसी प्रकार की ऊपरी बाधा घर में हो, तो उपरोक्त मंत्र को 48 बार **'क्रीं चक्र'** के आगे उच्चरित कर उसे अग्नि में अर्पित करें। फिर उस राख को किसी नदी में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से ऊपरी बाधा खत्म हो जाती है।

3. यदि **'क्रीं चक्र'** को व्यक्ति के सिर पर से 21 बार घुमा कर शिवालय में अर्पित कर दिया जाय, तो बुरे योगों का नाश होता है और व्यक्ति उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

4. यदि रोग जाता ही न हो, शरीर दुर्बल होता जा रहा हो, तो **'क्रीं चक्र'** पर उपरोक्त मंत्र 31 बार पढ़कर उसे रोगी के सिर के ऊपर पांच बार घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देना चाहिए। ऐसा करने से रोगी ठीक होने लग जाता है।

5. यदि शिशु बुरी नजर से पीड़ित हो तो, **'क्रीं चक्र'** को 24 घंटे तक उसके गले में धारण करा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देना चाहिए।

6. यदि किसी भी माह की अमावस्या को उपरोक्त मंत्र का क्रीं चक्र के सामने 100 बार उच्चारण किया जाय और फिर इसी मंत्र से गुटिका को अग्नि में समर्पित कर दिया जाय, तो दरिद्रता, रोग तथा निर्धनता का नाश होता है और व्यक्ति की इच्छाएं पूर्ण होती है।

क्रीं चक्र - 100/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

परम पूज्य गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

की ओजस्वी तेजस्वी दिव्य वाणी

ऑडियो - सीडी

ऑडियो - सीडी में उपलब्ध

यह प्रत्येक प्रवचन अपने आप में ही ज्ञान का सागर है...

नित्य प्रवचन सुनें, अपने घर परिवार को चेतना युक्त बनायें ...

- षोडश गुरु पूजन
- हनुमान साधना
- बगलामुखी प्रयोग
- सिद्धि और सफलता
- विशेष गुरु पूजन
- अमोघ साबर साधनाएं
- पुष्पदेहा अप्सरा साधना
- महाकाल प्रयोग
- शिवरात्रि पूजन विधान
- निखिल स्तवन भाग 1-2
- षोडशोपचार गुरु पूजन
- विश्व की श्रेष्ठ साधनाएं
- शक्तिपात दीक्षा
- ऐं बीज साधना
- दुर्लभोपनिषद्
- गुरु साधना का मूल रहस्य
- साबर धनदा प्रयोग
- राज्याभिषेक दीक्षा भाग 1-5
- दुर्गाचन (नवरात्रि) पूजन
- पारदेशवर शिवलिंग पूजन
- महालक्ष्मी स्वरूप साधना
- महाकाली स्वरूप साधना
- तारामहाविद्या सिद्धि साधना
- स्वर्णदेहा अप्सरा साधना भाग 1-2
- कुबेर पति शिवशक्ति साधना
- गुरु मुखी स्तोत्र
- श्री लक्ष्मी साधना

न्यौछावर प्रति ऑडियो - सीडी 40/-

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

भगवान वेदव्यास ने श्रीमद्भागवत में लिखा है कि

ग्लों चण्डि विनायको

कलियुग में गणपति और शक्ति की साधना शीघ्र सफलता देती है
आप शक्ति की साधना करें और वह असफल हो जाए ऐसा संभव नहीं है क्योंकि भगवान वेदव्यास ने स्वयं गहन अध्ययन के पश्चात् यह 'अमृत वचन' दिया है। कहीं न कहीं आपकी साधना में, एकाग्रता में, ध्यान में, समर्पण में, समय में अवश्य ही कमी रही होगी इसलिये इस बार प्रस्तुत है

तीव्र भद्रकाली साधना

ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप भद्रकाली प्रयोग करें और आपका कार्य उसी क्षण ही सम्पन्न न हो... एक गोपनीय और अत्यन्त दुर्लभ प्रयोग...

काली साधना अपने आप में अद्वितीय एवं दुर्लभ साधना है, सभी साधक इसे सम्पन्न करने के लिए सतत् प्रयासरत रहते हैं। यदि साधक संन्यासी है, तो वह अपने आभ्यान्तरिक उत्थान, साधनात्मक श्रेष्ठता को प्राप्त कर पाता है, यदि वह गृहस्थ साधक है, तो इसे सम्पन्न कर वह अपने भौतिक जीवन की समस्त आपदाओं को समाप्त कर, पूर्ण समृद्धिमय, ऐश्वर्यमय, शत्रु रहित हो बाधाओं का निवारण कर, कष्ट, पीड़ा, दुःख, तनावों से मुक्ति पाता है। अतः स्पष्ट है, कि यह साधना जितनी संन्यासियों के लिए महत्वपूर्ण है, उतनी ही महत्वपूर्ण गृहस्थ साधकों के लिये भी है।

'मार्कण्डेय पुराण' में काली की उत्पत्ति भगवती जगदम्बा के ललाट पर मानी गई है। यद्यपि काली के असंख्य रूप हैं, फिर भी साधकों द्वारा प्रमुख रूप से काली के तीन स्वरूप **'भद्रकाली', 'शमशान काली' तथा 'महाकाली'** की साधना की जाती है। वेदों में भी काली की स्तुति भद्रकाली के नाम से की गई है।

काली अत्यन्त तीक्ष्ण साधना मानी गई है, जबकि ऐसा नहीं है; काली की स्तुति, साधना तीक्ष्ण व सौम्य दोनों रूपों में की जाती है, संन्यासी इसे शीघ्र सम्पन्न करने के लिये इसकी तीक्ष्ण प्रक्रिया अपनाते हैं, जबकि गृहस्थ साधकों के लिये सौम्य प्रक्रिया विख्यात है, जिसे अपनाकर वे आसानी से मनोवांछित प्राप्त कर सकते हैं।

काली की महाकाल की शक्ति के रूप में भी प्रार्थना करते हैं; काल के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न करने से साधक में शक्ति का संचार होता है। काली अपने दोनों हाथों में अभय और वर मुद्रा धारण की हुई है अर्थात् वे अपने शुद्ध-सात्विक साधक को निर्भयता और वर प्रदान कर उसकी अभिलाषाओं को पूर्ण करती हैं। काली से वर प्राप्त कर साधक में दृढ़ता, निर्भयता तथा साहस और संकल्प शक्ति का उद्भव होता है।

समाज में व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं को सामना करना पड़ता ही है, वह हर क्षण आकस्मिक संकट, बाधाओं और तनावों से जूझता रहता है; कभी-कभी असफल होने पर वह इन सबसे अत्यधिक दुःखी और तनावग्रस्त होकर जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है, वह इन सबसे बच निकलने के लिए अनेकों प्रयास करता है, लेकिन दिन-प्रतिदिन तनाव में फंसता ही जाता है। **यदि साधक विभिन्न उपायों के साथ ही साथ भद्रकाली प्रयोग का सहारा लेता है, तो इन विषम परिस्थितियों से मुक्ति आसानी से प्राप्त कर सकता है। भद्रकाली अपने सौम्य स्वरूप में विद्यमान रहकर साधकों की मनोकामनाओं की पूर्ति करती हैं।**

काली के करुणामय स्वरूप की रामकृष्ण परमहंस स्तुति करते थे। काली अपने भक्तों पर अत्यन्त करुणा और कृपा करती हुई विराजमान रहती हैं; अतः काली के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न कर साधक सभी आपदाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है।

यह एक भ्रांति है, कि साधना में यदि न्यूनता रह जाती है, तो साधक को विपरीत परिणाम भोगने को मिलते हैं। लेकिन गृहस्थ साधकों के लिए साधनाओं की सौम्य प्रक्रिया को ही प्रकाशित किया जाता है, जिससे साधक का किसी प्रकार का कोई अनिष्ट नहीं होता, वह अत्यन्त निर्भयता से यह साधना सम्पन्न कर सकता है। पूर्ण श्रद्धा से करने पर किसी प्रकार का कोई विपरीत फल उसे नहीं भोगना पड़ता है, वैसे भी मां काली के ममतामयी स्वरूप की साधना से साधक को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं उठानी पड़ती है।

भद्रकाली प्रयोग सम्पन्न करने का प्रभाव तत्क्षण दिखाई देता है। कभी-कभी तो साधना काल में, साधक जिस कार्य हेतु साधना सम्पन्न करने बैठता है, पूर्ण होता दिखाई देता हैं, लेकिन यह ध्यान रखना होगा, कि वह साधना बीच में ही न समाप्त करे, वरन् उसे पूर्णता के साथ सम्पन्न करें।

साधना विधि

✧ प्रयोग हेतु आवश्यक सामग्री - **'भद्रकाली यंत्र' एवं 'काली माला'।**

✧ यह तीन दिवसीय साधना है।

✧ इसे दिनांक 28.12.05 एकादशी से प्रारम्भ कर, दिनांक 31.12.05 अमावस्या को समाप्त करें या **किसी भी एकादशी को प्रारम्भ करें।**

✧ साधक सफेद वस्त्र धारण कर साधना में बैठें।

✧ **भद्रकाली यंत्र** को स्वच्छ श्वेत वस्त्र पर स्थापित करें।

✧ संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न कर **भद्रकाली यंत्र** का पूजन सम्पन्न करें तथा जिस कार्य के लिये साधना कर रहे हों, उसे पूर्ण करने की प्रार्थना करें।

ध्यान

भीमां भीमोग्रदंष्ट्राञ्जन गिरि विलसत्तुल्य कान्तिं दशास्यं।
त्रिंशल्लोलाक्षि मालां दशललित भुजां पंक्ति पादांस्तथैव।
शूलं बाणं गदां वै धनुरथदधतीं शंख चक्रे भुशुण्डीं।
वन्दे कालीं कराग्रे परिधमसि युतं तामसीं शीर्षकं च॥

✧ काली की प्रमुख नवशक्तियों का पूजन करें। यंत्र पर चारों ओर नौ कुंकुम की बिन्दियां लगाते हुए निम्न क्रम

उच्चारण करें -

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। ॐ मंगलायै नमः।

✧ निम्न भद्रकाली मंत्र का नित्य 1 माला मंत्र जप **काली माला** से करें।

मंत्र

॥ॐ भं भद्रायै नमः आगच्छ भं ॐ॥

✧ खीर का भोग लगायें तथा स्वयं वह भोग ग्रहण करें।

✧ तीसरे दिन साधना समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

✧ जब भी किसी विशेष कार्य के लिये जाना हो तो काली माला को धारण कर उपरोक्त मंत्र का सात बार उच्चारण कर, उस कार्य के लिये जायें, सफलता अवश्य मिलेगी। कार्य की पूर्णता के पश्चात् माला उतार कर अपने पूजा स्थान में रख दें। इस माला से केवल काली साधना ही सम्पन्न करें।

साधना सामग्री - 360/-

गुरु वाणी

☆ अन्दर उतरने की क्रिया या मन के परे पहुंचने की क्रिया को ध्यान कहते है।

☆ जहां ध्यान है, वहां और कोई चीज नहीं रह सकती। ध्यान के लिए न निराकार की आवश्यकता है, न साकार की आवश्यकता है... जहां आकार है ही नहीं वहीं ध्यान है। आकार तो हमने बनाया है, हमने राम को देखा नहीं है, पोथी में जो लिखा है उसके अनुसार चित्र बनाया और उसी को राम की संज्ञा दे दी गई। आकार के माध्यम से ध्यान की स्थिति नहीं हो सकती।

☆ जो निराकार को मानते हैं वे कहते हैं कि एक ज्योति है, एक दीपक की लौ है, वह आंख बंद करता है तो चारों ओर लाली सी दिखाई देती है वह उसी को ध्यान समझ बैठता है, पर ये भी ध्यान नहीं है।

☆ ध्यान तो बुद्धि से परे हटने की क्रिया है। बुद्धि ही सगुण और निर्गुण में भेद करती है। जहां बुद्धि है, वहीं निराकार या साकार का प्रश्न है, वहीं छल-झूठ, ढोंग-पाखण्ड भी है। ध्यान तो अन्दर उतरने की क्रिया है।

☆ जब व्यक्ति ध्यानावस्था में पहुंच जाता है, तो फिर जीवन में किसी अन्य प्रकार का सुख उसे रास नहीं आता, फिर समस्त सिद्धियां उसके सामने नृत्य करती रहती हैं।

☆ ध्यान के लिए यह आवश्यक नहीं कि आप हिन्दू हों, मुस्लिम हों, सिख हों, या इसाई हों। बस आप मनुष्य हैं, इसलिए अपने अन्दर उतरकर सुदूर गहराइयों में पहुंच सकते हैं, यदि बुद्धि से परे हट सकते हैं तो।

☆ हजारों-लाखों व्यक्तियों में से कोई एक बिरला व्यक्ति ऐसा निकल पाता है, जो सद्गुरु की उंगली पकड़ कर आगे बढ़ने की क्रिया प्रारम्भ करता है। हजारों-लाखों व्यक्तियों में से किसी एक में ही ऐसी चेतना प्राप्त होती है, जो उनकी वाणी को समझ सकता है। हजारों-लाखों व्यक्तियों में से किसी एक में ही ऐसे भाव जाग्रत होते हैं, जब वह सद्गुरु के पास रह सकता है... उनके साथ चलने की क्रिया प्रारम्भ करता है, वह पहिचान लेता है, उसकी आंखें पहिचान लेती है - 'यह व्यक्तित्व साधारण नहीं है।'

☆ जब शिष्य अपने आप को हटाकर पूर्ण रूप से सद्गुरु के प्राणों में लीन करने की क्रिया प्रारम्भ कर लेता है, तो सद्गुरु एक ही छलांग में उसको उस अवस्था तक पहुंचा देते हैं, जो ध्यान की अवस्था है, जो चैतन्यता की अवस्था है।

☆ यह तो एक छलांग है। यदि आप डरपोक हैं तो धीरे-धीरे कदम बढ़ाएंगे, यदि आप साहसी हैं तो एकदम से छलांग लगा देंगे। यदि आप कायर हैं, तो धीरे-धीरे अपना हाथ गुरु के हाथ में सौंपेंगें। यदि आप दृढ़ चित्त हैं, तो एकदम से सर्वस्व गुरु को सौंप देंगे। आप अपने-आप को कितना खोलते हैं, यह आप पर निर्भर है, जितना आप सौंपेंगे उतना ही गहराई में उतर सकेंगे।

☆ ध्यान की इस गहराई में उतरने का अपना ही एक आनन्द है, अपना ही एक आलौकिक सौन्दर्य है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति ध्यान में अभ्यस्त होता जाता है, उसके चेहरे की तेजस्विता बढ़ती जाती है।

☆ शिष्य जितना गुरु को एकाकार होता रहता है, उतना ही गुरु उसको आगे ठेलता रहता है - यह शिष्य पर निर्भर है कि, वह अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित करता है या अधूरा समर्पित करता है।

☆ जिस क्षण गुरु यह निश्चय कर लेता है, कि अब मुझे इसको उठाकर परम अवस्था तक पहुंचा देना है, तो फिर भले ही शिष्य में कितने ही विकार हो, गुरु उसको सीधे उस ध्यान के महासमुद्र में उतार देता है।

☆ उस जगह पर पहुंचने की क्रिया अत्यन्त कठिन है। उस जगह पहुंचने के लिए केवल एक ही प्रयोग है - समर्पण।

☆ समर्पण के पहले गुरु सैकड़ों बार उसकी परीक्षा लेता है, जैसे सोने के मुकुट बनाने से पहले सोने को सैकड़ों बार तपाया जाता है, उसे आग में झोंका जाता है, कूटा जाता है, बार-बार उसको तोड़ा जाता है, खींच कर तार बनाया जाता है, मगर फिर वह सोना उफ नहीं करता है, क्योंकि उसने समर्पण कर दिया है स्वर्णकार के हाथों। फिर स्वर्णकार उसे मुकुट बना देता है, जो मनुष्य नहीं देवताओं के सिर पर शोभायमान होता है। सद्गुरु भी शिष्य को इसी तरह तपा कर कुन्दन बना देते हैं।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

शिष्य धर्म

- गुरु की कृपा से ही सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है, क्योंकि गुरु से बड़ा कोई तत्व नहीं है, अतः मोक्ष मार्ग पर चलने वाले शिष्य को सदैव गुरु का ही चिन्तन, मनन करते रहना चाहिए।
- गुरु कृपा से ही ब्रह्मा सृजन में, विष्णु पालन में तथा रुद्र संहार करने में समर्थ हो पाते हैं, अतः शिष्य को गुरु सेवा परम सौभाग्य समझना चाहिए। समस्त भारतीय ऋषि परम्परा इस बात का जीवन्त प्रमाण है, कि गुरु सेवा द्वारा ही सर्वस्व प्राप्ति सम्भव है।
- यदि शिष्य अपने जीवन में पूर्णता चाहता है, तो उसके लिए गुरु साधना आवश्यक है, क्योंकि गुरु ही परम तत्व है।
- शिष्य यदि गुरु मंत्र का जप नियमित रूप से करता है, तो उस जप के तेज से दुःस्वप्न का प्रभाव नहीं होता, और यदि सुस्वप्न हो तो उसका पूर्ण फल प्राप्त होता है।
- शिष्य को चाहिए कि वह व्रत, दान, तीर्थ, तप आदि में अधिक न उलझ कर गुरु को ही अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान दे। जीवन में गुरु होने से ही यज्ञ, जप, तप आदि क्रियाएं भी फल दे पाने में समर्थ होती हैं।
- गुरु के भीतर स्थित ज्ञान को किसी प्रकार से खरीदा नहीं जा सकता, उसकी प्राप्ति तो मात्र गुरु को प्रसन्न कर ही की जा सकती है, अतः शिष्य को गुरु के सामने सदैव विनीत भाव से ही रहना चाहिए।
- यदि शिष्य के मन में यह अहंकारी भाव है, कि मैं एक श्रेष्ठ जाति में उत्पन्न हुआ हूं, मैं बहुत धनवान हूं, मैं बहुत ऐश्वर्यवान हूं, मेरे परिवार बहुत सुप्रतिष्ठित है, मेरा यश बहुत फैला हुआ है, या मैं बहुत विद्वान हूं आदि, तो उसे गुरु के सम्मुख उपस्थित नहीं होना चाहिए। इन भावों को तिरोहित कर ही गुरु कृपा प्राप्त की जा सकती है।
- नित्य कर्म प्रपंचों का प्रभाव साधक या शिष्य के मन और चित्त पर पड़ता है, अतः चित्त को निर्मल बनाए रखने के लिए शिष्य को निरन्तर साधना मार्ग का अवलम्बन लेते रहना चाहिए।
- शिष्य को चाहिए कि वह गुरु को अपने घर में आमंत्रित करे। यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो भी मन में अवश्य ही यह चिन्तन रखे कि एक न एक दिन गुरुदेव के श्रीचरण उसके घर में पड़ेंगे। यह शिष्य का परम सौभाग्य होता है, कि शिव स्वरूप गुरु उसके घर में अपने श्रीचरणों का अंकन करें।

शंशाक चन्द्र सिद्धि अखण्ड सौभाग्यवती साधना

स्त्रियों के लिए सौभाग्य का स्वरूप है पति का स्वास्थ्य, दीर्घायु, श्रेष्ठ संतान, पति से निरन्तर आनन्द-सुख, घर परिवार में वृद्धि

कुंआरी कन्याओं और युवाओं के लिए सौभाग्य का तात्पर्य है अनुकूल मनपंसद जीवन साथी मिलना, जिसके साथ मिलकर इस संसार में आनन्द प्राप्त किया जा सकें

पुरुषों के लिये सौभाग्य का तात्पर्य है दीर्घायु, श्रेष्ठ स्वास्थ्य, कार्य में निरन्तर वृद्धि, प्रबल भाग्य, समाज में सम्मान, श्री, धन का आगमन इत्यादि।

इस बार एक विशेष मुहूर्त मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष पंचमी 6 दिसम्बर 2005 को उपस्थित हुआ है। जो राम-जानकी विवाह पर्व भी है, चम्पाषष्ठी भी है, देव स्कन्द गुह्य षष्ठी भी है। इस दिन शंशाक चन्द्र सिद्धि अखण्ड सौभाग्य साधना प्रत्येक साधक-सधिका सम्पन्न करें -

नारी को शक्ति रूपा कहा गया है, और यह भी सत्य है, कि नारी जो एक बार निश्चय कर लेती है, उसे पूर्ण करके दिखा देती है।

सदियों पूर्व से ही नारी की इच्छा शक्ति से यह जगत् परिचित होता आया है। नारी के अन्दर इतनी क्षमता होती है, कि वह अपने पति को यमराज से छीन कर वापिस ला सकती है। नारी के दृढ़ निश्चय के आगे तो काल को भी बाध्य होकर अपनी गति रोक देनी पड़ती है।

यह बात कोई कपोलकल्पित नहीं है, अपतु एक सत्य पौराणिक घटना है -

'सती शाण्डिली' अपने पति को अपने कन्धे पर उठाकर ले जा रही थी। उसके पति अत्यन्त ही घृणित रोग से ग्रस्त थे, फिर भी वह पूर्ण मनोयोग से उनकी सेवा करती। पति के द्वारा फटकारे-दुत्कारे जाने के बावजूद भी कभी भी शाण्डिली ने अपने मन में दुःख का भाव आने ही नहीं दिया था। उसके पति कौशिक ने एक रात्रि में कहा - 'मुझे नगर वधु के पास ले चलो' अपने पति को कन्धे पर उठाकर शण्डिली चल पड़ी, मार्ग में चोर के भ्रम में **'माण्डव्य'** नामक ब्राह्मण को वहां के राजा ने सूली पर चढ़ा दिया था, कौशिक के पैर से छूने के कारण सूली हिल गई, दुःख से व्यथित ब्राह्मण ने श्राप दे दिया - **'जिस नराधम के कारण मुझे दुःख हुआ, वह सूर्य उदय होने पर अपने प्राणों से हाथ धो बैठेगा।'** इस दारुण श्राप को सुनकर शाण्डिली बोल उठी -

तस्य भार्या ततः श्रुत्वा तं शपमतिदारुणम्।
ग्रोवाच व्यर्थिता सूर्यो नैवोदयमुपैष्मति॥

'मेरे पति की मृत्यु सूर्योदय होने पर तुम्हारे श्राप के कारण होगी, किन्तु यह एक सती का वचन है, कि अब सूर्योदय ही नहीं होगा।' सूर्योदय नहीं होने से सभी प्राणी, यहां तक कि देवता भी व्यथित हो उठे, किन्तु किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी, कि वह सती शाण्डिली के सामने जाकर यह प्रार्थना कर सके, कि वह अपने वचन को वापिस ले ले, अतः उन्होंने सती अनुसूइया से शण्डिली के पास जाने की विनती की।

अनुसूइया ने शण्डिली को समझाया और कहा - **'विषाद न करो, तुम सूर्योदय होने की अनुमति प्रदान कर दो, मैं वचन देती हूं कि तुम्हारे पति पूर्णतः रोगमुक्त होकर, पूर्ण तरुण बनकर वर्षों तक तुम्हारे साथ आनन्दयुक्त जीवन यापन करेंगे।'**

तदुपरान्त शाण्डिली ने अपने श्राप से सूर्य को मुक्त किया, और अनुसूइया के प्रभाव से शाण्डिली के पति पूर्ण स्वस्थ हो गये।

'मार्कण्डेय पुराण' में वर्णित यह कथ्य यहां प्रस्तुत करने के पीछे एकमात्र कारण इतना ही है, कि वास्तव में नारी शक्ति

स्वरूपा हैं यह बात अलग है, कि **आज नारी अपने इस स्वरूप को बिसरा बैठी है, इसीलिए तो वह तमाम तरह की परेशानियों से घिरी रहती है,किन्तु ऐसा नहीं है, कि आज के युग में भी यदि कोई नारी ठान ले, तो अपने पूर्ण सौभाग्य को प्राप्त न कर सके।**

यह बात और है कि, किसी को मालूम नहीं है कि किन विधियों से उस शक्ति को जाग्रत किया जा सकता है, जिसके माध्यम से पूर्ण सौभाग्य प्राप्त हो सके, उसके परिवार पर से अकाल मृत्यु की छाया का निवारण हो सके, उसका पति दीर्घायु हो, साथ ही अपनी पत्नी को, अपनी अर्द्धांगिनी समझते हुए पूर्ण सुख प्रदान करे।

नारी की इसी शक्ति को जगाने के लिए ही शास्त्रों में वर्णित है - **'पूर्ण सौभाग्य साधना'**, जिसे प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री करना अपना धर्म समझती है, और प्रत्येक पुरुष अपनी स्त्री से यह व्रत करवा कर या स्वयं इस प्रयोग को सम्पन्न करके सभी आधि-व्याधि, अकाल-मृत्यु से छुटकारा पा लेता है, साथ ही यह प्रत्येक कुमारी कन्याओं के लिए योग्य वर प्राप्ति हेतु अद्वितीय साधना है। यह साधना **'अखण्ड सौभाग्यवती पर्व'** पर सम्पन्न की जाती है।

इस दिन सभी सौभाग्यवती स्त्रियां निर्जला उपवास करती हैं, तथा परम्परागत रूप से चली आ रही विधि से ही पूरी रात धूमधाम से पूजन करती हैं।

यदि अखण्ड सौभाग्य पर्व के दिन परम्परागत पूजन के साथ ही सम्पूर्ण शास्त्रोक्त विधान के अनुसार वर्णित सम्पूर्ण सौभाग्य साधना भी करें, तो निश्चित रूप से उनकी मनोकामना पूर्ण होती ही है।

परम्परागत रूप से बताये गये तरीके से हमें सिर्फ इतना ही मालूम है, कि हमें चन्द्रमा का पूजन करना चाहिए, क्यों करना चाहिये, इसका ज्ञान बहुत ही मन लोगों को होगा।

चन्द्र देव महर्षि अत्रि के पुत्र हैं, और वे सर्वमय अर्थात् सोलह कलाओं से युक्त हैं। इनकी सोलह कलाओं का अनुभव तो हमें नित्य इनकी घटती-बढ़ती आकृति को देखकर ही होता रहता है। इसके साथ ही साथ ये अमृतमय पुरुष स्वरूप भगवान् हैं। चन्द्रमा के इन्हीं गुणों के कारण ब्रह्मा ने इन्हें बीज, औषधि, जल तथा ब्रह्मणों का राजा घोषित किया है। प्रजापति दक्ष ने अपनी अश्विनी, भरिणी आदि नाम वाली २७ कन्याओं का विवाह चन्द्रमा के साथ किया है, जो नक्षत्रों का बोध कराती हैं। इस तरह चन्द्रदेव अपने नक्षत्रों के साथ पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए सभी प्राणियों का पोषण करते हैं। चन्द्र देवता का वर्ण श्वेत है, इनका वाहन दस घोड़ों वाला रथ है, जो कि शंख के समान उज्ज्वल हैं, 'मत्स्य पुराण' में ऐसा वर्णन आता है।

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्त्तव्यो वरदः शशी॥

अर्थात् **'चन्द्र देवता गौर वर्णीय हैं, इनके वस्त्र, अश्व और रथ तीनों ही श्वेत हैं, चन्द्र देव ने एक हाथ में गदा धारण कर रखा है और दूसरे हाथ से वर प्रदान कर रहे हैं।'**

चन्द्रमा का अमृतमय पुरुष स्वरूप में ही वर्णन प्राप्त होता है, इसीलिए शास्त्रों में उचित मूहूर्त में चन्द्र पूजन विधान रखा गया है, उस दिन चन्द्रमा की जिस कला की रश्मियां पृथ्वी को आप्लावित करती हैं, उनका यह गुण है, कि वे विशेष मंत्रों के माध्यम से साधना करने वाले साधक अथवा साधिका को पूर्ण सौभाग्य एवं पूर्ण आयु प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करती हैं, इसी तथ्य को ध्यान में रखकर अखण्ड सौभाग्य पर्व-पूजन का विधान निर्मित किया गया है।

पूर्वकाल में यह पूजन पुरुष एवं स्त्री अर्थात् पति-पत्नी दोनों ही सम्मिलित रूप से करते थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं रही, कि ये दोनों मिलकर ही एक हैं। समय के प्रवाह में

बहुत सी परम्पराएं लुप्त हो गई, आधुनिकता के प्रवाह के कारण पुरुषों को व्रत, उपवास रखने में बहुत ही हीन भावना महसूस होने लगी, इसीलिए धीरे-धीरे वे अपने दायित्व से दूर होते चले गये, किन्तु ऐसा करके उन्होंने कोई उत्तम कार्य नहीं किया है। यह बात तो सर्वविदित है, कि कोई भी यज्ञ, पूजा आदि पति-पत्नी दोनों को एक साथ मिलकर ही करनी चाहिये, इसीलिए अखण्ड सौभाग्यवती पर्व की सम्पूर्ण सौभाग्य साधना भी पति-पत्नी दोनों को ही मिलकर करनी चाहिये।

साधना विधान

1. इस साधना को सम्पन्न करने के लिए **अमृतोपम चन्देश यंत्र, शशांक माला, सोलह उदधि प्रिया लघु शंखों** की आवश्यकता पड़ती है।
2. इस सौभाग्य प्रदायक साधना को दिनांक 6.12.2005 के दिन सम्पन्न करना चाहिए, और यदि उस दिवस विशेष पर सम्पन्न नहीं कर सकें, तो किसी भी मास में पड़ने वाली कृष्ण पक्ष की तृतीया अथवा पंचमी को यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।
3. यह साधना रात्रि को 8 से 10 बजे के मध्य कभी भी प्रारम्भ कर सकते हैं।
4. यह साधना पूर्व दिशा की ओर मुख करके करनी चाहिये।
5. साधना प्रारम्भ करने से पूर्व स्नान करने वाले जल में आठ-दस दाने सरसों के तथा दस चम्मच दूध डालते हुए दस बार - *'ॐ सोमाय नमः वरदाय नमः'* मंत्र का उच्चारण करना चाहिये, फिर इस जल से स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर लें।
6. साधना कक्ष में श्वेत आसन पर बैठ जायें तथा अपने सामने बाजोट पर भी श्वेत वस्त्र बिछाकर, अक्षत से उसी वस्त्र के ऊपर ही अर्द्धचन्द्र की आकृति निर्मित कर **'अमृतोपम चन्द्रेश यंत्र'** को स्थापित करें।
7. यंत्र की दाहिनी और **'शशांक माला'** तथा बाई और सभी उदधि प्रिया शंख स्थापित करें।
8. इन सभी सामग्रियों का श्वेत पुष्प या जो भी सुगन्धित पुष्प उपलब्ध हो (वैसे चन्द्रमा को कदम्ब, कमल, केवड़ा, चम्पा, तथा चमेली के पुष्प चढ़ाने का विधान है) के द्वारा पूजन करें।
9. तत्पश्चात् सोलह उदधि प्रिया लघु शंखों को अपने बाएं हाथ में ले लें, और दाहिने हाथ में एक-एक शंख लेते हुए एक-एक मंत्र का क्रमशः उच्चारण करते हुए शंख को यंत्र पर अर्पित करें -

   सोमाय शान्ताय नमः। अनन्त धान्याय नमः। कामसुख प्रदाय नमः। अमृतोपमाय नमः। शशांकाय नमः। चन्द्राय नमः। द्विजेश्वराय नमः। कौमादवनप्रियाय नमः। आनन्द बीजाय नमः। वनौषधिनामधिनाथाय नमः। इन्दीवरव्यासकराय नमः उदधिप्रियायनमः। सुषुम्नाधिपतये नमः। विश्वेश्वराय नमः। जलोदराय नमः।लक्ष्मी सौभाग्य सौख्यामृत सागराय पद्श्रिये नमः।
10. इस प्रकार पूजन करने के पश्चात् **'शशांक माला'** से निम्न मंत्र का 16 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ श्रीं सौभाग्य सिद्धि देहि देहि नमः।

11. इस प्रकार मंत्र जप पूर्ण करने के पश्चात् एक तांबे के बर्तन में जल, घी, अक्षत, कपूर, श्वेत चंदन तथा श्वेत पुष्प डाल कर चन्द्रमा को पति-पत्नी दोनों मिलकर अर्घ्य प्रदान करें, तथा वहां खड़े-खड़े हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें - **'हे चन्द्र देव! आप ही सबको परम आनन्द और मुक्ति प्रदान करने वाले हैं। आपकी कृपा से हमें भी सम्पूर्ण सौभाग्य, दीर्घायु, सम्पन्नता एवं पूर्ण दाम्पत्य सुख प्राप्त हो।'**
12. इस प्रकार पूर्ण पूजन करने के पश्चात् बाजोट पर बिछे श्वेत वस्त्र में ही यंत्र, माला तथा सभी लघु शंखों को लपेट कर पोटली बना लें एवं उसी रात्रि को अथवा अगले दिन ही नदी में उन्हें विसर्जित कर दें।
13. चन्द्र-पूजन पूर्ण होने के पश्चात् पूरे परिवार के साथ बैठकर आनन्द पूर्वक भोजन ग्रहण करें।
14. मूल मंत्र का जप यदि पति-पत्नी दोनों मिलकर करते हैं, तो 8 माला पति और 8 माला पत्नी को मंत्र-जप करना है, किसी प्रकार की यदि कोई असुविधा हो तो पति या पत्नी दोनों में से कोई एक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।
15. यह तो बताने की आवश्यकता ही नहीं रही, कि प्रत्येक साधना या पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु पूजन तथा गुरु मंत्र की एक माला जप करना आवश्यक है, अनुष्ठान पूर्ण होने के पश्चात् गुरु चित्र के सम्मुख भक्ति भाव से नमन कर गुरु आरती सम्पन्न करना तो प्रत्येक साधक का कर्तव्य है ही।

साधना सामग्री पैकेट - 400/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

क्या आप भूत-प्रेत पिशाच से डरते हैं?

ऐसा क्यों?

यह भी तो एक विशिष्ट योनि के प्राणी हैं,
जो आपको सहयोग देने के लिये सृष्टि में भ्रमण कर रहे हैं।

सिद्ध कीजिये

भूत-प्रेत-पिशाच

को मंत्र साधना से

मानव जीवन के अलावा पृथ्वी पर तो, आकाश, पाताल, समुद्र में लाखों प्रकार की योनियां विचरण करती रहती हैं। यह सब योनियां मनुष्य से निम्न स्तर की योनियां कही गई हैं क्योंकि इसमें जानवर, पशु-पक्षी, कीट-पंतगें सभी सम्मिलित हैं और कीटाणु-विषाणु से लेकर महाकाय हाथी जैसे प्राणी है लेकिन इन सभी को हम अपने नेत्रों से देख सकते हैं इसलिये इनके प्रति जो भय है उससे जीतने का मार्ग मनुष्य ने खोज निकाला है। लेकिन सृष्टि में आकाश लोक से ऊपर अन्य लोक भी है और उनमें इतर योनियों का निवास बताया गया है। इन छः प्रकार की इतर योनियों में देवता, पितर, अप्सरा, भूत-प्रेत-पिशाच, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर।

इनका तात्पर्य यह है, कि ये सभी मनुष्य के अलावा इतर योनियां कही जाती हैं, जिन्हें सिद्ध कर मानव उनसे सहायता ले सकता है, और अपने जीवन को अनुकूल बना सकता है। यदि वह देवताओं की साधना कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने की आकांक्षी है, तो भूत-प्रेत साधना सम्पन्न कर उनको भी पूर्णतः अनुकूल बना कर जीवन को सुविधा सम्पन्न बनाया जा सकता है।

जिस प्रकार वर्ष में नवरात्रि, गणेश चतुर्थी, अन्नत चतुदर्शी की तरह, उसी प्रकार माघ शीर्ष शुक्ल चतुर्दशी भूत-पिशाच सिद्धि दिवस है। इस दिन भूत-पिशाच से सम्बन्धित विशेष साधनाएं सम्पन्न की जा सकती है। इसके अलावा और दिनों में भी यह साधनाऐं सम्पन्न की जा सकती है।

मनुष्य देवताओं की, पित्तरों की, अप्सराओं की साधना आराध्य रूप में सम्पन्न करता है। उसी प्रकार भूत-प्रेत-पिशाच इत्यादि की साधना मित्र रूप में अथवा सेवक रूप में सम्पन्न करनी चाहिये। जिस प्रकार हम, जिस प्राणी के बारे में पूर्णतः जान लेते है और उसे वश में करने की विद्या भी सीख लेते है। उसी प्रकार भूत-प्रेत-पिशाच को सिद्ध करने की विद्या है यह इतर योनियां भटकी हुई मानवीय आत्माऐं ही है जो अपने उद्धार के लिये, मनुष्य को सहयोग देने के लिये ब्रह्माण्ड में विचरण करती रहती है। अतः किसी भी आवश्यकता में इन इतर योनियों से डरने की आवश्यकता नहीं है। निश्चिंत होकर साधना करने से शीघ्र अनुकूलता प्राप्त होती है और आप यहां तक देखेंगे कि सिद्ध प्राप्त होने पर सुरक्षा का अभय

चक्र प्राप्त होता है।

यदि सत्य बात कही जाय तो मनुष्य, मनुष्य को धोखा दे सकता है, मनुष्य मनुष्य को विश्वासघात कर सकता है, मनुष्य मनुष्य की हत्या कर सकता है, या उसे पीड़ा पहुंचा सकता है, या उसके लिए परेशानियां पैदा कर सकता है।

पर मनुष्य के अलावा इतर योनियां न तो विश्वासघात करती है, न धोखा देती है, न उनके लिए किसी प्रकार की परेशानियां पैदा करती है, वे तो उल्टे मनुष्य के लिए सहायक और उपयोगी है।

जिस प्रकार से हम अपने घर के दरवाजे पर गेटमेन या चौकीदार रखते समय इस बात का ध्यान रखते है, कि वह लम्बा चौड़ा कद्दावर और बलिष्ठ हो, उसका चेहरा रोबीला और प्रभाव वाला हो, जिससे कि बाहरी व्यक्ति खौफ खाये और नुकसान पहुंचाने की चेष्टा न करें, ठीक इसी प्रकार से भूत-प्रेत भी बलिष्ठ कद्दावर और रोबीले होते है, जिस प्रकार हमारा चौकीदार या अंग रक्षक हमें हानि नहीं पहुंचा सकता, उलटे बाहरी विपरीत तत्वों से रक्षा करता है, उसी प्रकार से ये भूत, प्रेत, पिशाच आदि भी चौबीस घण्टे हमारी रक्षा करने को तत्पर रहते हैं और बाहरी दुश्मनों से हमें सुरक्षा प्रदान करते हैं।

भूत-प्रेत-पिशाच अपने विशेष रूप और इनके बारे में कहीं गई कथाओं के कारण से विचित्र डरावने लग सकते हैं लेकिन उनका स्वरूप तो यक्ष, गन्धर्व, किन्नर की भांति मनुष्य जैसा ही है। यह तथ्य है कि भूत-प्रेत-पिशाच की योनि में गये हुए प्राणी मुक्त होकर अपने से ऊपर के लोक में ही जाते है वह पुनः मनुष्य लोक में जन्म नहीं लेते। लेकिन यक्ष, गन्धर्व और किन्नर आत्मा की मुक्ति नहीं मिलने पर पुनः जन्म ले सकते हैं और जब यह पुर्नजन्म लेते है तो भगवान् शिव के वरदान स्वरूप इनकी न तो पुरुष जाति होती है और न ही स्त्री जाति।

और यह धारणा तो बिल्कुल गलत है, कि भूत-प्रेत डरावने होते है, या भयानक होते है, अथवा उनके सिर पर सींग और लम्बे दांत होते है, ये सारी बातें मनगढ़ंत है, हमारी यह प्रवृति रही है, कि हम अपने शत्रु का विवरण इसी प्रकार के शब्दों से करते है। हकीकत में देखा जाय तो भूत-प्रेत भी हमारी तरह सीधे-सादे सरल है, यह अलग बात है, कि हम मनुष्य योनि में है, और वे भूत प्रेत योनि में। यह अलग बात है, कि हम एक दूसरे को देख पाते है, और वे हमें दिखाई नहीं देते, पर वास्तविकता तो यह है, कि वे अदृश्य रह कर हमें ज्यादा सुरक्षा, ज्यादा सहायता, और ज्यादा अनुकूलता प्रदान कर सकते है, मनुष्य तो विश्वासघाती और धोखा देने वाला हो सकता है, परन्तु भूत-प्रेत जिसके नियंत्रण में होते है, न वे तो उसे धोखा देते है, न विश्वास घात और न किसी प्रकार का छल करते हैं।

इस तंत्र दिवस या दूसरे शब्दों में भूत-प्रेत पिशाच दिवस के अवसर पर मैं तीन प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं, जो सर्वथा प्रमाणिक है और अनुभूत है। मेरे पिताजी की मृत्यु बहुत पहले हो गई थी, और मैं पन्द्रह सोलह साल का था, तभी घर से निकल पड़ा था, मेरे जीवन का अधिकांश भाग औघड़ साधुओं के बीच बीता है, मेरे गुरु हबुआ स्वामी अपने समय के विख्यात औघड़ रहे हैं, भारतवर्ष में जिन साधकों ने औघड़ साधनाएं की हैं, या जो औघड़ साधना के बारे में रूचि रखते है, उनको हबुआ स्वामी के बारे में जरूर ज्ञान होगा, उनका शिष्य बनना गौरव की बात मानी जाती थी, मैं उनके सम्पर्क, साहचर्य में कई वर्ष रहा, और कई औघड़ साधनाएं सीखी जो कि हमेशा सत्य सिद्ध हुई।

पत्रिका के अनुरोध पर मैं मेरे जीवन की गम्य तीन महत्वपूर्ण साधनाएं पत्रिका साधकों को स्पष्ट कर रहा हूं, और वे बिना भय और बिना किसी हिचकिचाहट के इन साधनाओं को सम्पन्न करे, तब उन्हें पता चलेगा कि ये साधनाएं कितनी महत्वपूर्ण और जीवन के लिए आवश्यक है।

ये साधनाएं अपने घर में सम्पन्न की जा सकती है, श्मशान में जाने की या श्मशान की राख बिछाने की कोई जरूरत नहीं है, गृहस्थ व्यक्ति भी इस प्रकार की साधनाएं अपने घर में सम्पन्न कर सकता है, गायत्री उपासक या शिव अथवा विष्णु उपासक भी इस प्रकार की साधनाओं को सम्पन्न कर सकता है। इस साधना में किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है, यदि किसी वजह से साधना असफल भी हो जाय तब भी इसका कोई विपरीत प्रभाव देखने को नहीं मिलता।

अगर सिद्धाश्रम जैसे उच्च कोटि के आश्रम ने भूत, प्रेत, पिशाच महत्व को समझा है, तो जो पाठक इसमें रुचि रखते हैं, वे इन साधनाओं को अवश्य ही सम्पन्न करें और हाथों हाथ इसका लाभ अनुभव करें।

यहां पर मैं यह बात स्पष्ट कर दूं कि मार्ग शीर्ष शुक्ल 14 तो इस कार्य के लिए नियुक्त है ही, जो कि इस वर्ष 14-12-2005 को स्पष्ट हो रही है, पर यों भी किसी भी शुक्रवार को पूरे वर्ष में कभी भी इन साधनाओं को सम्पन्न किया जा सकता है।

1. हिडिम्बा साधना

हिडिम्बा को हमने राक्षसी माना है, और यह महाभारत काल के भीम की पत्नी थी, पर पूरे हिमाचल प्रदेश में हिडिम्बा को फूल देवी माना जाता है, वहां इसकी पूजा होती है, हिमाचल प्रदेश में हिडिम्बा की पूजा और साधना उसी प्रकार से होती है जिस प्रकार से हम जगदम्बा, शिव या विष्णु की करते हैं अगर वह राक्षसी ही होती तो हिमाचल प्रदेश के लोग उसे फूल देवी कैसे मानते? मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूं कि यह तो हमारे सोचने का अन्तर है, राक्षसी भी हमारी तरह से सौम्य, सरल, सात्विक देवी होती है।

हिडिम्बा साधना जीवन की महत्वपूर्ण साधना है, इस साधना को सम्पन्न करने पर निश्चय ही पांच लाभ होते है।

1. इससे घर में सुरक्षा रहती है, और घर पर या दुकान पर कोई तांत्रिक प्रयोग हो तो वह दूर हो जाता है।
2. यदि किसी प्रकार की भूत-प्रेत बाधा हो तो हिडिम्बा मंत्र सिद्ध होने पर वह इस समस्या का समाधान कर सकता है।
3. हिडिम्बा सिद्ध होने पर वह साधक की निरन्तर रक्षा करती है, और विविध उपद्रवों से बचाती है।
4. हिडिम्बा सिद्ध होने पर साधक को निरन्तर धन, द्रव्य, आभूषण आदि अनायास प्राप्त होते रहते हैं।
5. हिडिम्बा सिद्ध होने पर वह साधक की प्रत्येक मनोकामना पूरी करती है।

साधना प्रयोग

रात्रि को साधक काली धोती पहिन कर **दक्षिण दिशा** की ओर मुंह कर काले आसन पर बैठ जाय, सामने एक स्टील की थाली लेकर उसके मध्य में त्रिकोण बनावे और त्रिकोण के बीच में एक छोटी सी सिन्दूर की बिन्दी लगावे। इसके बाद त्रिकोण के तीनों कोनों पर **रक्तचक्र गुटिका** को रख दें। फिर मध्य में जो सिन्दूर की बिन्दी लगाई है, उस पर **'सिद्धि फल'** रखे और इस त्रिकोण को हिडिम्बा मान कर उसकी सामान्य पूजा करें। सामने तेल का दीपक लगावे और **नीली हकीक माला** से मंत्र जप करें। मंत्र जप करते समय कमरे में दूसरा कोई नहीं होना चाहिए इसमें इस रात्रि को केवल 11 माला मंत्र जप करें।

हिडिम्बा सिद्धि मंत्र

ॐ ईं चिल क्रीं क्रीं फ्लूं फ्लूं हिडिम्बायैं हिलि हिलि फट् ॥

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब वह **माला** उस यंत्र पर ही रख दें, और रात्रि को ही वह माला तथा तीनों **रक्तचक्र गुटिकाओं** को घर के बाहर रास्ते पर रख दें। पानी का लोटा साथ में ले जावे और उसके चारों ओर पानी से घेरा बना दें और वह खाली लौटा लेकर घर पर आ जाय।

घर आने के बाद स्नान करके साधक सो जाय, ऐसा करने पर हिडिम्बा सिद्ध होती है, जब कभी उपरोक्त हिडिम्बा मंत्र का 11 बार उच्चारण किया जाता है, तो हिडिम्बा अदृश्य रूप से ही सही, पर साधक की आंखों के सामने प्रत्यक्ष दिखाई देती है और उसे जो भी कार्य कहा जाता है, वह कार्य सम्पन्न करती है।

इसके अलावा भी यदि उसे कोई भी कार्य नहीं सौंपा जाता तो भी वे ऊपर बताये हुए रक्षा आदि कार्यों को तो साधक के लिए करती ही रहती है।

यह साधना भूत-प्रेत दिवस अथवा किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न की जा सकती है।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. भूत सिद्धि

यह मेरा अनुभूत प्रयोग है, और मैंने अपने जीवन में इससे बहुत लाभ उठाया है, मैं ऊपर भी बता चुका हूं कि भूत-प्रेत भी हमारी तरह ही सामान्य सरल सात्विक व्यक्ति होते है और हमें बराबर सहयोग प्रदान करते रहते है। भूत साधना के निम्न पांच लाभ तो तुरन्त प्राप्त होने लग जाते हैं।

1. भूत सिद्ध होने पर वह हर क्षण साधक के साथ रहेगा और जब साधक उसे आवाज दे कर मंत्र पढ़ेगा तो उसकी आंखों के सामने स्पष्ट होगा। साधक तो उसे देख सकेगा परन्तु यदि पास में कोई दूसरे व्यक्ति बैठे हुए है, तो उन्हें वह भूत दिखाई नहीं देगा।
2. साधक अपने जीवन में भूत को जो भी कार्य सौंपता है, वह आज्ञाकारी सेवक की तरह तुरन्त पूरा करता है, कभी कभी तो वह कठिन और असाध्य कार्य भी साधक के लिए कर बैठता है।
3. भूत सिद्ध होने पर वह घर में नौकर की तरह बना रहता है, और साधक की आज्ञा पर वह घर के छोटे बड़े कार्य भी करने को तैयार रहता है।
4. साधक की आज्ञा होने पर वह अदृश्य रूप में रह कर साधक के शुत्रओं से लड़ाई लड़ लेता है और उन्हें बहुत अधिक हानि पहुंचा देता है, ऐसे साधक के दुश्मन हर क्षण भय से थरथराते रहते हैं।
5. भूत वश में होने पर साधक उससे जो भी, द्रव्य, धन, या पदार्थ मंगाना चाहता है, वह लाकर प्रदान करता है और कभी भी कार्य में शिथिलता नहीं बरतता।

साधना प्रयोग

देखा जाय तो अन्य देवी देवताओं की अपेक्षा यह साधना सरल है और साधक आसानी से इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, हिडिम्बा साधना या भूत साधना कोई भी पुरुष या स्त्री सम्पन्न कर सकता है। इस साधना को भी इस दिवस पर अथवा किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है।

साधक स्नान कर तहमद की तरह की एक धोती कमर के नीचे बांध ले, जिस प्रकार से मुसलमान तहमद बांधते हैं, उसी प्रकार से धोती को बांधे अर्थात पीछे लांग न लगावे, ओर फिर जिस प्रकार मुसलमान नमाज पढ़ते समय बैठते हैं, उसी प्रकार से साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने एक स्टील की थाली ले और पूरी थाली काजल से रंग दें। फिर किसी तिनके की सहायता से उस थाली में पुरुष की आकृति बनावे और उस आकृति के सिर पर **कालक्षी चक्र** तथा दोनों पैरों पर भी एक-एक **कालक्षी चक्र** रखें, इस प्रकार इस प्रयोग में तीन **कालक्षी चक्र** का प्रयोग होता है। उस आकृति के मध्य में या सीने पर **कलिभूत गुटिका** रख दें। फिर इसके सामने तीन तेल के दीपक लगावें, और उसी प्रकार बैठे-बैठे, **रक्त हकीक माला** से मंत्र जप करें -

भूत सिद्धि मंत्र

॥ ॐ भ्रं भ्रूं भूतनाथाय फट् ॥

इस रात्रि को 21 माला मंत्र जप करने का विधान है, जब मंत्र जप पूरा हो जाय तो सामने पुरुष की आकृति दिखाई देगी जो सामान्य मनुष्य की तरह होगी, उससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। साधक मंत्र जप पूरा होने पर उससे प्रश्न पूछे कि तुम्हारा नाम क्या है, तब वह अपना नाम बतायेगा।

फिर साधक उसके ऊपर जल छिड़कता हुआ कहे कि तू मेरे वश में रहेगा और मैं अपने जीवन में तुम्हारा नाम लेकर मंत्र पढ़कर आवाज दूं तब तुम आओगे और मेरा कार्य करोगे। ऐसा होने के बाद जब भूत अदृश्य हो जाय तब थाली में रखी हुई, तीनों **कालक्षी चक्र** तथा **कलिभूत गुटिका** एक लाल पोटली में बांध दे और उसे अपने घर में रख दें। घर में रखने पर किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

इसके बाद जब भी उस भूत को उसका नाम बोल कर 11 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करेंगे तो वह भूत अदृश्य रूप में साधक के सामने होगा। साधक उसे देख सकेगा, पर पास में बैठे हुए अन्य लोग उसे नहीं देख सकेंगे।

तब साधक मन ही मन अथवा धीरे से जो भी आज्ञा देगा, वह भूत अवश्य ही उस कार्य को सम्पन्न करेगा।

यह मेरा अनुभूत प्रयोग है, और मैंने जितनी बार भी आजमाया है, मुझे इसमें पूरी सफलता मिली है।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

3. पिशाच सिद्धि

यह भी भूत की तरह ही एक योनि होती है, पर अत्यन्त बलिष्ठ, अत्यन्त मजबूत और दृढ़ निश्चय युक्त। यदि साधक इसे सिद्ध कर ले और इसे आज्ञा दे दे तो सामने चाहें, पचास शत्रु, बन्दूक या पिस्तोल लाठी या भालें लिए हुए खड़े हो तो उसे पांच मिनट में ही मटियामेट कर देता है।

यह पिशाच साधक के साथ चौबीस घण्टे अदृश्य रूप में रहता है और साधक की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। बहुत दूर से कोई पदार्थ मंगवा लेना, किसी के घर से कोई सामान निकाल कर लाना, साधक को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचा देना, किसी अन्य व्यक्ति को सैकड़ों मील दूर से उठा कर ले आना, आदि कार्य पिशाच के द्वारा सहज संभव है।

इसके बावजूद भी यह अत्यन्त सौम्य और सरल होते है, तथा साधक की प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है।

साधना प्रयोग

इस साधना को इस दिवस या किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है, साधक काली धोती पहिन कर काले आसन पर **दक्षिण दिशा की ओर मुंह** कर खड़ा हो जाय, अपने सामने एक लोहे या स्टील की थाली में सिन्दूर से पुरुष आकृति बनावे और उस आकृति के सिर पर तीन **'तांत्रिक नारियल'** रखे, पैरों के पास **तीन हकीक** नग रखें, मध्य में **अंगारक गुटिका** रखे और थाली में पांच तेल के दीपक लगा दें और फिर दो रंगों की **हकीक माला** अथवा **दो रंगों की स्फटीक माला** से 21 माला मंत्र जप करें।

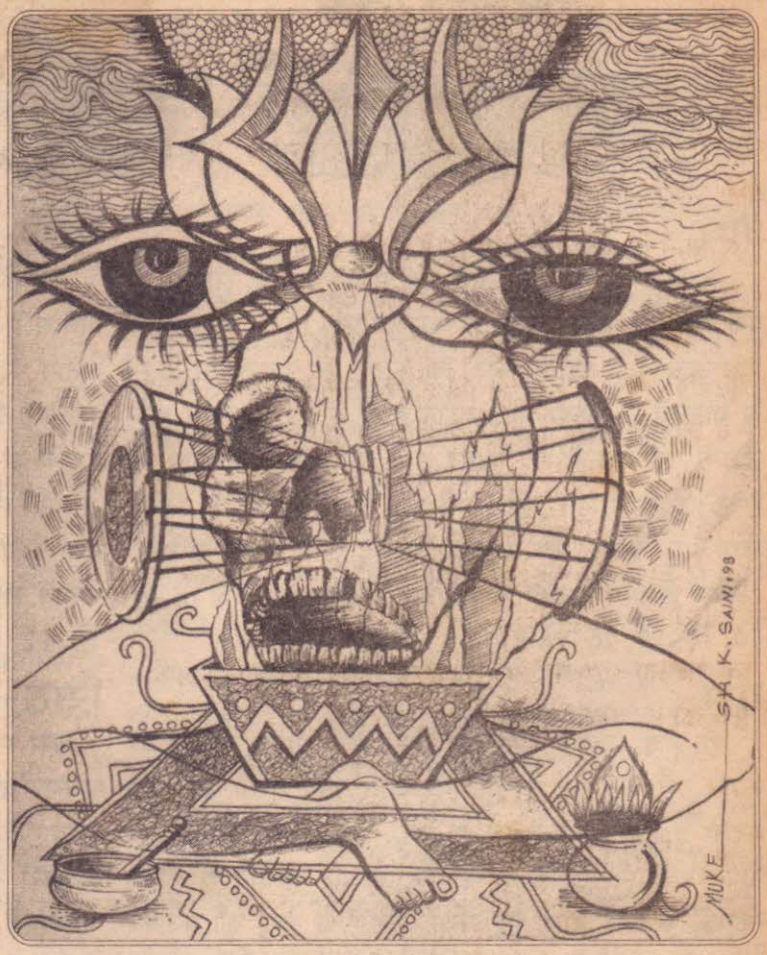

पिशाच सिद्धि मंत्र

॥ ऐं क्रीं क्रीं स्त्रिं स्त्रिं खिचि खिचि पिशाच स्त्रिं स्त्रिं फट् ॥

जब 21 माला मंत्र जप पूरा हो जाय तब थाली में रखी हुई सारी सामग्री तथा वह माला लेकर घर के बाहर किसी स्थान पर रास्ते पर रख दें और उसके चारों और पानी के लोटे में भरे हुए जल से एक घेरा बना ले और थाली तथा लोटा लेकर वापिस घर आ जाय। दोनों बर्तन मांज ले फिर साधक स्नान कर ले ऐसा होने पर पिशाच सिद्ध होता है।

इसके बाद जब भी उपरोक्त मंत्र का पांच बार साधक उच्चारण करेगा तब वह अदृश्य रूप में साधक के सामने हाथ जोड़े खड़ा होगा, उसे जो भी आज्ञा दी जायेगी वह तत्क्षण निश्चय ही पूरी होगी।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ये सभी साधनाएं महत्वपूर्ण है, साधक इनको सम्पन्न करे और सिद्धि मिलने पर किसी को बतावे नहीं, वे इस प्रकार की साधनाओं का समाजोपयोगी सदुपयोग करें।

नक्षत्रों की वाणी

मेष -

आपके रूके हुए कार्य मित्रों एवं सम्बन्धियों के सहयोग से पूर्ण होंगे तथा जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही आर्थिक व्यय का कारण बन सकती है। किसी के बहकावे में आकर कोई गलत कार्य न करें, अन्यथा हानि उठानी पड़ सकती है। श्रमिक वर्ग दो लाभ तीन खर्च की स्थितियों से पीड़ित रहेंगे। इस माह यात्रा से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। पूर्ण अनुकूलता हेतु आप '**तारा साधना**' (अप्रैल 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 2, 5, 6, 10, 14, 17, 19, 26, 28 हैं।

वृष-

यह माह आपको बहुत कुछ प्रदान कर जाएगा, लेकिन यह ध्यान रखें, कि हवा में उड़ने पर कभी-कभी धरती पर आना पड़ता है, अतः धरती पर ही रहें, उच्च अवसर मिलने पर अपनी पहचान ना खो दें, क्योंकि आपकी पहचान के कारण आपको अवसर मिला है। जोश और होश दोनों को बनाकर रखें, तो आप बहुत कुछ कर सकने में समर्थ होंगे। नौकरी पेशा वर्ग के व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा है, धन का आगमन होगा। विद्यार्थी एवं बेरोजगारों के लिए समय बहुत ही लाभकारी है। आप '**जया दुर्गा साधना**' (मार्च 2005) अवश्य करें। तिथियां - 2, 3, 9, 14, 19, 21, 22, 24, 27, 29, 30 हैं।

मिथुन-

समय आपके लिए सामान्य चल रहा है जो भी कार्य करना चाहें वह स्वयं की मौलिक सूझबूझ के आधार पर ही सम्पन्न करें। किसी भी मामले को लेकर जल्दबाजी न करें। पारिवारिक प्रसंगों को लेकर खिन्नता रहेगी। कारोबारी मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों को लेकर उत्साह एवं व्यस्तता रहेगी। श्रमिक वर्ग के व्यक्ति व्यर्थ की धन की बर्बादी से बचें। किसी को हानि पहुंचाने वाला कोई कार्य न करें। अधिकारियों से मधुर सम्बन्ध एवं तालमेल बनाकर चलें। आप '**अहं ब्रह्मास्मि साधना**' (सित. 2005) अवश्य करें। तिथियां - 2, 4, 5, 7, 12, 16, 19, 20, 24, 27 हैं।

कर्क-

परिवार में मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे, परन्तु आपको विभिन्न प्रकार की अड़चनों का सामना करना पड़ सकता है। संतान पक्ष को लेकर चिंता की स्थिति बनेगी। नौकरी पेशा व्यक्तियों की अपने अधिकारियों के साथ अनबन हो सकती है। माह के अन्त में बहुत अनुकूल स्थिति आने से रूके हुए धन का आगमन होगा। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी तथा बेरोजगारों तथा विद्यार्थियों को शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आप '**काल बन्धन साधना**' (जुलाई 2005) अवश्य करें। तिथियां - 1, 10, 12, 13, 17, 18, 23, 26, 27, 29 हैं।

सिंह-

इस माह आपको आपनी योग्यता सिद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। नये सुअवसरों में आपको अपने मित्रों एवं परिवार के सदस्यों का भी भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। आपको अवसरों के लाभ के लिये अपने व्यक्तित्व को उभारने की जरूरत है, परन्तु ध्यान रखें कि विनम्रता भी रखें। जिससे हर व्यक्ति आपके लिए सहायक होगा। आपके द्वारा उठाया गया हर कदम सफलता की ओर ही होगा। महिलाएं अपनी वाणी पर संयम रखें अन्यथा पारिवारिक वाद-विवाद बढ़ सकता है। आप '**षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना**' (अगस्त 2005) अवश्य करें। तिथियां - 3, 4, 8, 11, 17, 20, 22, 27, 28 हैं।

कन्या-

समय चक्र मनुष्य को हर क्षण नये-नये अनुभवों का स्वादन कराता है। यह समय आपके लिए अग्निपरीक्षा समान सिद्ध हो सकता है। अपने इष्ट पर पूर्ण विश्वास रखते हुए, अधिक से अधिक समय अपने कार्य में व्यतीत करें। जमीन-जायदाद सम्बन्धित मामलों में धीरे-धीरे सुधार होगा। जल्दबाजी में लिये गये निर्णय हानिप्रद हो सकते हैं। माह के अंत में मित्रों एवं परिवारजनों के सहयोग से मन में उत्साह होगा। इसके बावजूद किसी पर भी विश्वास बिना सोचे-समझे ना करें। आप '**क्लीं साधना**' (अगस्त 2005) करें। तिथियां - 2, 8, 13, 15, 16, 17, 23, 25, 30 हैं।

सर्वार्थ, अमृत, त्रिपुष्कर, सिद्धि योग	सिद्ध योग 5, 19, 23, 29 नवम्बर/1, 2, 7, 13 दिसम्बर ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग 6, 10, 27 नवम्बर/20, 28 दिसम्बर ☆ अमृत सिद्ध योग 27 नवम्बर/12, 28 दिसम्बर ☆ द्विपुष्कर योग 8 नवम्बर ☆

इस मास ज्योतिष की दृष्टि से : केन्द्रीय मंत्रिमंडल में अगले महीने फेर बदल होगा, बिहार के चुनावों में त्रिशंकु विधान सभा की स्थिति बनेगी, लेकिन केन्द्रिय दलों की सरकार बनेगी। तीन केन्द्रिय मंत्रियों को निकाला जायेगा। उ.प्र. में राजनीति और धर्म का संघर्ष रहेगा। खाड़ी देशों में अशान्ति की एक और लहर उठेगी, युद्ध जैसी स्थिति बन सकती है। अर्थव्यवस्था में सुधार होगा।

तुला –

यह माह सामान्य तौर पर आपके लिए अनुकूल रहेगा, फिर भी किसी भी कार्य में उतावली एवं जल्दबाजी न करें। नये कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास ही आपको हर कार्य में पूर्णता प्रदान करेगी। प्रेम प्रसंगों को लेकर संयम बरतें, इससे समाज में मान-सम्मान की क्षति होगी। संतान की ओर से अनुकूलता प्राप्त होगी तथा दाम्पत्य सुखों में वृद्धि से मन प्रफुल्लित होगा। महिलाएं अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आप **'लक्ष्मी वर-वरद् माल्य'** (मई 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 3, 5, 9, 11, 13, 14, 18, 20, 23, 27 हैं।

वृश्चिक –

जो भी कार्य करें, विवेक से करें। समय आपके लिए अनुकूल एंव सफलतापूर्वक रहेगा। अदालती मामलों को लेकर उत्साह रहेगा तथा जमीन-जायदाद के विस्तार के योग बनेंगे। अधिकारियों से तालमेल बनाकर चलें। शत्रु बाधा से आप विचलित हो सकते हैं, अतः उनसे आप संभल कर रहें। रुका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी तथा धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। साधनात्मक दृष्टि से यह माह विशेष सफलता प्रदान करने वाला रहेगा। आप **'मांतगी त्रैलोक्य मंगल कवच'** (अप्रैल 2005) धारण करें। शुभ तिथियां - 3, 6, 7, 11, 12, 14, 18, 21, 23, 26, 28, 29 हैं।

धनु –

आपके लिये यह समय कुछ अच्छा नहीं है। कला-जगत के व्यक्ति आर्थिक लाभ की स्थिति तथा मानसिक परेशानियों के दौर से गुजरेंगे। प्रेम प्रसंग सामान्य रहेगा। किसी अन्य व्यक्ति के कार्यों में हस्तक्षेप न करें, विवाद की स्थिति बन सकती है। नया व्यापार प्रारम्भ करने के लिए समय उचित है। जमीन जायदाद के मामलों को लेकर तनाव रहेगा, पर तनाव की स्थिति में शांत बने रहें। स्त्रियां स्वास्थ्य के मामलें में सावधानी बरतें। कारोबार सम्बन्धी की गई यात्राएं लाभप्रद सिद्ध होगी। आप **'धनदा यक्षिणी साधना'** (सितम्बर 2005) करें। शुभ तिथियां - 2, 5, 7, 8, 15, 16, 18, 20, 22, 27 हैं।

मकर –

यह माह आपके लिये सभी दृष्टियों से सामान्य रहेगा, लेकिन आपको जीवन से सम्बन्धित विभिन्न आयामों का ज्ञान प्राप्त होगा। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग सामान्य ही रहेगा। आपके स्वयं की सूझबूझ एवं चतुराई से ही आपको सफलता प्राप्त होगी। इस माह आप अनेक धार्मिक आयोजनों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवारिक प्रसंगों को लेकर शिथिलता न बरतें यथाशीघ्र विवादों का समाधान आपके स्वयं के हित में ही होगा। आप **'कुबेर साधना'** (अक्टूबर 2005) अवश्य करें। तिथियां - 2, 3, 6, 7, 11, 16, 19, 24, 25, 29 हैं।

कुंभ –

समय मूल्य को पहचानते हुए कार्य करें, नये कार्यों के लिए समय अनुकूल तथा सफलता देने वाला चल रहा है। इस माह कारोबारी यात्रा भी आपके लिये श्रेष्ठ सिद्ध होगी। भवन, भूमि, जायदाद इत्यादि की खरीद के लिये समय श्रेष्ठ है। धार्मिक प्रसंगों में व्यस्ता से गृहस्थ जीवन में कुछ बाधाऐं आ सकती है। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतना ही आपके लिए लाभकारी होगा। आप पूर्ण अनुकूलता हेतु **'लक्ष्मी वर-वरद् माल्य साधना'** (मई 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 2, 8, 11, 15, 18, 21, 24, 27, 30 हैं।

मीन –

व्यापारी वर्ग के लिये उत्साहपूर्ण रहेगा। व्यापार वृद्धि के अनेक सुअवसर प्राप्त होंगे। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता का अनुभव होगा। व्यर्थ धन व्यय एवं फिजूल खर्ची से बचने का प्रयास करें। अन्यथा आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है। संतान पक्ष की ओर से चिंता रहेगी। दाम्पत्य जीवन में भी निराशा का वातावरण ही रहेगा। निराशा व बौखलाहट से बनते कार्य भी बिगड़ जाने की सम्भावना है। आप **'पारद गणपति साधना'** (जनवरी 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 3, 6, 7, 11, 14, 17, 19, 21, 27 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

12	नवम्बर	कार्तिक शुक्ल -11	शनिवार	देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत
13	नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण -12	रविवार	प्रदोष व्रत
14	नवम्बर	कार्तिक शुक्ल -13	सोमवार	वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत
15	नवम्बर	कार्तिक शुक्ल -14	मंगलवार	कार्तिक पूर्णिमा व्रत
23	नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण -07	बुधवार	काल भैरवाष्टमी
27	नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण -11	रविवार	उत्पत्ति एकादशी व्रत
29	नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण -13	मंगलवार	प्रदोष व्रत
1	दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण -30	गुरुवार	अमावस्या व्रत

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है – जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99-9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ट समय
रविवार (नवम्बर 20, 27) (दिसम्बर 4, 11)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (नवम्बर 21, 28) (दिसम्बर 5, 12)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (नवम्बर 22, 29) (दिसम्बर 6, 13)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (नवम्बर 16, 23, 30) (दिसम्बर 7, 14)	दिन 06:48 से 11:36 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (नवम्बर 17, 24) (दिसम्बर 1, 8, 15)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (नवम्बर 18, 25) (दिसम्बर 2, 9)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (नवम्बर 19, 26) (दिसम्बर 3, 10)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत है जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित है, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

दिसम्बर

1. प्रातः *'ॐ नारायणाय नमः'* की 1 माला मंत्र जप करें।
2. **'हेमांगना'** (न्यौछावर 65/-) का पूजन कर दिन भर अपने पास रखें, अगले दिन किसी मंदिर में चढ़ा दें।
3. कार्य हेतु बाहर जाते समय काले सरसों के दाने चारों दिशाओं में फेकतें हुए निम्न मंत्र का जप करें।
   // ॐ क्लीं कामरुपिण्यै क्लीं ॐ //
4. पीपल के पत्ते पर दूध की मिठाई का सूर्य को नैवेद्य दें।
5. चावल, दूध, दही, आदि सफेद वस्तुओं का दान करें, बाधा समाप्त होगी।
6. आज प्रातः **हनुमान चालीसा** का पाठ अवश्य करें।
7. पीले कागज पर कुंकुम से षट्कोण बनाकर उसमें *'ह्रीं'* लिखकर पूरे दिन अपने पास रखें, रात्रि को जला दें।
8. **गुरु पादुका** पूजन सम्पन्न कर, गुरु सेवा का प्रण करें।
9. तांबे के पात्र में जल लेकर *'ॐ नमः दुर्गे दुर्गे रक्षाणि स्वाहा'* मंत्र से अभिमंत्रित कर पूरे घर आंगन में छिड़क दें।
10. काली सरसों को पांच बार अपने सिर पर घुमा कर दक्षिण दिशा में फेंक दें। बाधा समाप्त होगी।
11. प्रातः सूर्य का पूजन कुंकुम, पुष्प, और अक्षत से करें।
12. शिवलिंग पर पांच सफेद पुष्प *'ॐ ह्रीं शिवाय नमः'* मंत्र का जप करते हुए चढ़ायें।
13. **'महातपा'** (न्यौछावर 65/-) को हनुमान मन्दिर में चढ़ा दें, मनोकामना पूर्ण होगी।
14. **'सिद्धि-फल'** (न्यौछावर 21/-) को लाल वस्त्र में बांध कर दक्षिण सहित गणेश मंदिर में चढ़ा दें, कार्य सम्पन्न होंगे।
15. **'गुरु पूजन'** सम्पन्न कर गुरु मंत्र का 1 घंटा जप करें।
16. बाहर जाने से पूर्व *'ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ'* का सात बार उच्चारण करें।
17. **शनि स्तोत्र** का पाठ करके ही दिन का प्रारम्भ करें।
18. प्रातः एक पात्र में तीन कन्नेर के पुष्प रख कर, *'ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा'* का 21 बार जप करें।
19. शिव मन्दिर में 3 **'लघु नारियल'** (न्यौछावर 21/-) अर्पित करें, विजय होगी।
20. **हनुमान विग्रह** पर सिन्दूर का लेपन कर, बेसन से बनी वस्तु का भोग लगायें।
21. गुरु जन्म दिवस पर **'निखिलेश्वरानंद स्तवन'** का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें।
22. पीले पुष्प गुरु चित्र पर अर्पित करते हुए 11 बार गुरु मंत्र का जप करें।
23. चुटकी भर हींग अपने सिर से तीन बार घुमा कर दक्षिण दिशा में फेंक दें, बाधा समाप्त होगी।
24. सरसों के तेल का दीपक अपने कार्य स्थल अथवा घर में प्रज्ज्वलित करें।
25. सफेद चावल, शक्कर-घी मिश्रित काले कुत्ते को खिलाएं।
26. प्रातः पंचामृत से शिव का अभिषेक करें।
27. हनुमान विग्रह पर तुलसी के 108 पत्तों की माला प्रातः 5.45 से पूर्व अर्पित करें, मनोकामना पूर्ण होगी।
28. बाहर जाने से पूर्व चुटकी भर नमक लेकर उसे अपने दाहिने पैर के नीचे लगाते हुए चले जायें।
29. गुरु चित्र के समक्ष *'ह्रीं श्रियै नमः'* मंत्र का 15 मिनट जप करें।
30. **नर्वाण मंत्र** का 21 बार जप करें।
30. बाहर जाने से पूर्व *'ॐ श्रीं अं के शवाय कीर्त्यै नमः'* का 11 बार उच्चारण करें।

जीवन सरिता

यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अनेकों उपाय हैं। परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं। उसी प्रकार मन को सुदृढ़ करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

1. अपने सहयोगी और अपने मध्य बेहतर सम्बन्ध निर्मित करें

आप और आपके सहयोगी के मध्य स्थापित होने वाली सम्बन्धों की नींव आप दोनों पर ही समान रूप से निर्भर हैं। दोनों के मध्य का परस्पर स्नेह, सौहार्द और समझदारी इस नाजुक, कोमल सम्बन्धों के सफर को नित नूतनता का एहसास दिलाती है। दोनों को ही अपनी-अपनी जिम्मेदारियों पर गर्व होता है, कि वे इसका बखूबी निर्वाह कर रहे हैं। परन्तु इन सम्बन्धों में जरा सा भी टकराव इस सफर को बेमजा कर सकते हैं, नीरस बना सकते हैं। वह आप दोनों पर ही निर्भर करता है, कि आप इस कोमल सम्बन्ध-सेतु की किस प्रकार से सुरक्षा करते हैं और अपने जीवन के दैनिक क्रम का संचालन किस माधुर्यता से करते हैं।

कभी-कभी आप प्रयास करते भी हैं तो आपका साथी उसे अस्वीकार कर देता है और आपकी इच्छा मात्र इच्छा ही रह जाती है या कभी सामने वाला आपकी मनुहार करता है, तो आप अपने अहं को प्रधान कर देते हैं। परन्तु सम्बन्धों की दृढ़ता अहं या अस्वीकारोक्ति पर आधारित नहीं हो सकती। अतः आपको चाहिए, कि आप अपने मध्य के सम्बन्ध को एक ऐसा दृढ़ आधार दें, जिससे वह शाश्वत बन जाये। ऐसा सम्बन्ध यदि आपका नहीं बन पाया है, तो यह प्रयोग आपके लिए ही है -

शुक्रवार की रात्रि को अपने सामने एक अगरबत्ती जला कर, जिस प्रकार से नमाज पढ़ी जाती है, उस मुद्रा में बैठ जायें तथा बायें हाथ में **'श्रिया'** लेकर, उसके साथ दो पुष्प रख कर दाहिने हाथ से ढक दें। फिर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें -

मंत्र

॥ हंसी हंस हां नें हीं॥

यह प्रयोग तीन दिन का है। तीन दिन बाद **'श्रिया'** को किसी चौराहे पर रख दें।

साधना सामग्री - 80/-

+ + + + + + + + + +

2. आप स्वयं रोगों को समाप्त कर सकते हैं इस प्रकार से...

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन-मस्तिष्क का निवास होता है। परन्तु अब किसी रोग के होने पर आपको तनावग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप चाहें तो इस अद्वितीय प्रयोग के माध्यम से अपना स्वयं का या किसी अन्य का रोग स्वयं ही समाप्त कर सकते हैं।

इस पांच दिवसीय प्रयोग को किसी भी सोमवार से प्रारम्भ

करें। सोमवार के दिन विधिवत् रूप से गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु चित्र के समक्ष ही निम्न मंत्र का नित्य 101 बार जप करें-

मंत्र

// ॐ क्लीं वं क्लीं रोग निवारणाय फट् //

प्रयोग समाप्ति पर आप तो रोगमुक्त होंगे ही, साथ ही दूसरों को भी रोग मुक्त कर सकते हैं। आपको मात्र इतना ही करना है, कि किसी गिलास में जल लेकर उसके सामने पहले गुरु मंत्र का पांच बार जप करें, फिर ग्यारह बार उपरोक्त मंत्र का जप कर पुनः पांच बार गुरु मंत्र का जप कर जल में तीन बार फूंक मारें, फिर वह जल रोगी व्यक्ति को पिला दें। यदि वह जल न ग्रहण कर सके, तो उसके ऊपर या उसके आस-पास छिड़क दें, उसके रोग में न्यूनता आयेगी। इस प्रकार जल अभिमंत्रित कर आप स्वयं भी ले सकते हैं।

+ + + + + + + + +

3. अपने विरोधियों को आप यूं स्तब्ध कर दीजिए...

यदि आपका कोई विरोधी है, जो निरन्तर आपकी आलोचना करता रहता है और हर समय आपको नीचा दिखाने की कोशिश करता रहता है, आपके द्वारा सम्पादित कार्यों की पूर्णता में बाधा उत्पन्न करता है और इस कारण आप दुःखी और सन्तप्त रहते हैं, तो अब आपको इस प्रकार से दुःखी रहने की आवश्यकता नहीं है।

आप निम्न प्रयोग सम्पन्न करें, आपके विरोधी स्वतः ही शांत होकर बैठ जायेंगे।

जब भी आपके ऊपर आपके विरोधी हावी होते हुए दिखाई दें, उस समय ही पांच बार गुरु मंत्र जप कर निम्न मंत्र का पांच मिनट तक मन ही मन जप कर लें। पांच मिनट पश्चात् जप समाप्त कर पुनः गुरु मंत्र का पांच बार जप करें -

मंत्र

// ॐ क्लीं सकल शत्रु स्तंभनाय क्लीं ॐ फट् //

यह प्रयोग आप कहीं भी कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं।

+ + + + + + + + +

4. क्या आपके कर्मचारी आपको सहयोग नहीं दे रहे हैं ...

बिना सहयोग के कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता, यदि आप किसी दफ्तर या संस्थान के मालिक या प्रबन्धक हैं, तो कर्मचारियों के असहयोग का सीधा प्रभाव आपकी उन्नति और उत्पादन पर पड़ता है और आपको तनावों और परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः आपकी उन्नति और सफलता के लिए आवश्यक है, कि आपके कर्मचारी आपके प्रति सहयोग की भावना रखें और आपके आदेश का पालन करें। यदि आपके सामने ऐसी कोई विपरीत परिस्थिति आ गई हो, तो निम्न प्रयोग सम्पन्न करें, आपके सहयोगी विरोध त्याग कर स्वयं आपको सहयोग के लिए आगे आयेंगे -

शनिवार के दिन '**सम्रधा**' को किसी पात्र में स्थापित करें और उसका पूजन करें। पूजन के पश्चात् '**सम्रधा**' के समक्ष निम्न मंत्र का 51 बार जप करें, ऐसा तीन दिन तक करें -

मंत्र

// ॐ ह्रीं ऐं श्रीं फ्रें स्वत्वं सिद्धये ॐ //

तीन दिन पश्चात् '**सम्रधा**' को नदी में प्रवाहित कर दें या निर्जन स्थान पर फेंक दें।

साधना सामग्री - 80/-

+ + + + + + + + +

5. क्या आप स्वयं को हर समय अस्वस्थ अनुभव करते हैं।

आप अपने दिन का आरम्भ प्रसन्नता, प्रफुल्ता और उमंग के साथ करते हैं, परन्तु दिनों बाद नियमित दिनचर्या होने पर उन्हीं कार्यों को निरन्तर करते रहने के कारण आप स्वयं में उत्साह का अनुभव नहीं कर पाते, अपितु हर क्षण स्वयं में थकावट, उदासी का ही एहसास करते हैं। यह अवस्था आपके सौन्दर्य को भी प्रभावित करती है, आपका व्यक्तित्व उदास लगने लगता है और आप किसी कार्य को उत्साह पूर्वक नहीं कर पाते हैं। यदि आपके साथ ऐसा हो रहा है, तो आप इस प्रयोग को सम्पन्न करें। आप अवश्य ही अपने में हुए परिवर्तन का अनुभव करेंगे।

लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर केसर '*ॐ*' लिखें, उस पर '**आर्जुनी**' को स्थापित करें। '**आर्जुनी**' के समक्ष घी का दीपक लगा कर, निम्न मंत्र 18 बार उच्चारण करें -

मंत्र

// ॐ ह्रीं ऐं ब्लूं ॐ फट् //

यह प्रयोग 6 दिन तक करें। छठें दिन ही किसी दुर्गा मन्दिर में सिन्दूर तथा नैवेद्य के साथ 'आर्जुनी' चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 60/-

+ + + + + + + + +

संकट तो संघर्षशील मनुष्यों पर ही आते हैं

परन्तु जो

संकटों का सामना करता है वही वीर कहलाता है

जीवन में पग-पग पर संकट, बाधाएं, परेशानियां हैं, लेकिन इनसे घबराकर जीवन पथ पर हताश होने की आवश्यकता नहीं है, संकटों के निवारण हेतु हमारे ऋषियों ने मंत्र अनुसंधान कर एक ऐसी विशिष्ट साधना का अविष्कार किया, जो कहलाती है

संकष्ट निवारण साधना

जिसे सम्पन्न करने से कपूर की तरह उड़ जाते है संकट, भय, बाधा, कष्ट, पीड़ा, अभाव और दारिद्र्य

सद्गुरुदेव की डायरी से प्राप्त एक विशिष्ट अध्याय

जिस प्रकार दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आता है,उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी सुख-दुःख, आनन्द-विषाद, जन्म-मृत्यु के चक्रव्यूह में बंधा है, जहां पल में प्रसन्नता का आवेग है, तो रुदन के क्षण भी, पर जो इन क्षणों को पूर्णता के साथ जी लेता है, जो अपने कष्टों का, पीड़ा का अभावों का और दारिद्र्य का मुकाबला बड़े ही हिम्मत, जोश और मस्ती के साथ कर लेता है, वही पूर्ण मानव कहलाता है।

मनुष्य होना कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है, पर मनुष्य बनना, मुसीबतों से जूझते हुए, बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ जाना, अपने जीवन को अधोगामी से ऊर्ध्वगामी बना देना, नर से नारायण बना देना ही जीवन की श्रेष्ठता है।

प्रत्येक के जीवन में दुःख आते हैं, संकट आते हैं, क्योंकि संकट दस्तक देकर मनुष्य के जीवन में नहीं आता, वह तो अचानक ही आ जाता है, ऐसी स्थिति में मनुष्य दुविधाग्रस्त हो जाता है। जीवन तो पल-प्रतिपल संकटों से घिरा हुआ है ही, परन्तु इन संकटों का निवारण कर लेने की क्षमता प्रत्येक में नहीं होती, ये संकट तो मनुष्य को स्वयं ही झेलने पड़ते हैं, क्योंकि संकट के समय सभी रिश्तेदार, बन्धु-बांधव यहां तक कि पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री भी काम नहीं आते, ये सब तो सुख के साथी हैं और दुःख में तो अपने भी पराये ही हो जाते हैं; वस्तुतः मनुष्य को स्वयं ही जूझना पड़ता है।

हमारे ऋषि, हमारे पूर्वज इस तथ्य को पहले से ही जानते थे, कि आने वाली पीढ़ी, आने वाला युग ऐसा होगा, इसीलिए उन्होंने अपने अजस्र ज्ञान के प्रवाह से कुछ ऐसे तथ्य स्पष्ट किये, जिससे लाभ उठाकर मनुष्य अपने जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है, अद्वितीयता प्राप्त कर सकता है, दिव्यता प्राप्त कर सकता है।

जीवन में तो बाधाएं आयेंगी ही और यह तो जीवन का एक सौभाग्य ही है, कि तुम्हें बार-बार अपने आपको परखने का मौका मिल जाता है, इस प्रकार की स्थिति आने पर तुम अपने आपको तोल सकते हो, कि तुम में विपत्तियों का सामना करने का कितना दखमख है अथवा आकस्मिक घटित घटनाओं को झेलने की कितनी अधिक क्षमता है।

तुम्हें तो पलायन की अपेक्षा मुस्कराकर खड़े होना है, विपत्तियों से घबराकर विचलित होने की अपेक्षा अपने आप को जीवन्त और सजग बनाये रखना है, यही तुम्हारी कसौटी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

है और यही तुम्हारी कर्मशाला का पहला अभ्यास होगा, जब तुम कुछ कर सकने में सक्षम हो सकोगे।

पर कभी-कभी ऐसा लगता है, कि तुम मानसिक रूप से कुंद होते जा रहे हो और तुम्हारी मानसिकता पर ये समस्याएं हावी होती जा रही हैं, इसीलिए तुम अपने आपको अशक्त और अक्षम पाते हो, तुम्हें तो अपनी मानसिक वृत्तियों को समेट कर वीर बनना है और मन में यह विश्वास पैदा करना है, कि मैं जो चाहूं कर सकता हूं, यहां तक कि अपने प्रारब्ध को भी बदल सकता हूं, मैं साधना सम्पन्न कर जीवन को पूर्णता दे सकता हूं।

तुम्हें पुरुषार्थी बनना है और पुरुषार्थ के द्वारा ही अपने रास्ते का निर्माण करना हैं। विपत्तियों का सामना कर निर्विकार भाव से आगे बढ़ते चले जाना है। इस प्रकार का रास्ता सौभाग्यशाली ही प्राप्त कर सकते हैं... जब तुम साधना के मार्ग पर बढ़ोगे, तो तुम्हारे जीवन का अंधकार पक्ष उजाले पक्ष में परिवर्तित हो जायेगा, मानो काले बादल छंट जाने के बाद भोर का स्वर्णिम प्रभात विजय माला लिये तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हो।

घोर संक्रमण के इस काल में मानव दिग्भ्रमित हो जाता है, जिनमें संघर्ष करने की क्षमता नहीं होती, जो चुनौतियों से विचलित हो जाते हैं, वे ही हारते हैं और जब ऐसा होता है, तो उनमें जीने की ललक, लालसा नहीं रह जाती... परन्तु तुम्हें तो अपने परिवार और समाज को त्याज्य नहीं करना है, क्योंकि पलायन करना कायरता है, तुम्हें तो उनके बीच रहकर प्रसन्नता और मस्ती के साथ उन चुनौतियों, उन संकटों का सामना करना है और अपनी हार को विजय में बदल देना है।

–सद्गुरुदेव

जीवन में तीन प्रकार के संकट ही मानव को संत्रस्त एवं विक्षिप्त कर देते हैं -

1. भौतिक, 2. दैहिक, 3. दैविक।

भौतिक संकट - जो मनुष्य को मानसिक संताप से पीड़ित कर देते हैं, जैसे -

1. सुयोग्य पति या पत्नी का न मिलना
2. योग्य पुत्र या पुत्री का न होना
3. धन का अभाव
4. नौकरी न मिलना
5. अशांत वातावरण होना
6. व्यापार में वृद्धि न होना
7. शत्रु बाधा

दैहिक संकट - दैहिक का अर्थ है, देह से सम्बन्धित दुःख जैसे -

1. सर्प दंश, 2. एक्सिडेंट हो जाना, 3. रोग ग्रस्त हो जाना, 4. अंग-भंग हो जाना, 5. पागलपन, 6. जर्जरता आना, 7. पशुभय।

दैविक संकट - दैविक का अर्थ है, पराजगत से सम्बन्धित बाधाएं, जिनके पीछे बहुत ही सूक्ष्म कारण छिपे होते है, जैसे -

1. भूत प्रेत बाधा, 2. पितृ दोष, 3. गुह्य बाधा, 4. ग्रह दोष, 5. अकाल मृत्यु, 6. आकस्मिक दुर्घटना, 7. तंत्र बाधा दोष, 8. देव रुष्टता।

अब प्रश्न उठता यह है, कि क्या इसका कोई विकल्प है? क्या ऐसा कोई उपाय है, जिसके द्वारा इन संकटों से बचा जा सके और पूर्ण आनन्दमय, रसमय जीवन जी सकें।

इन बाधाओं, विपत्तियों से मनुष्य को आगाह किया जा सकता है और इन पर विजय भी प्राप्त की जा सकती है; मनुष्य में यदि धैर्य, दृढ़ता, उत्साह, चेतना और बल है तो। उच्चकोटि के ऋषियों और संन्यासियों ने इन संकटों के आघात से बचने के लिए ही **'संकष्टी साधना'** को अपने जीवन में विशेष महत्व दिया। इन भौतिक, दैहिक और दैविक प्रकोपों से निजात पाने का एकमात्र क्षण है, **'संकष्टी निवारण अष्टमी दिवस'**। जब व्यक्ति उस क्षण की महत्ता को पहिचान कर, अपने जीवन में आये संकट को दूर कर नीरसता के जीवन का त्याग कर सकता है।

यदि अष्टमी पर साधक **'संकष्टी साधना'** को सम्पन्न कर ले, तो वह उसके लिए एक सौभाग्यदायक क्षण होगा, क्योंकि संकष्टी साधना एक ऐसा सशक्त और सक्षम माध्यम है, जिसके द्वारा जीवन में आई रुकावटों को, आपदाओं और विपदाओं को दूर किया जा सकता है, प्रत्येक शुभ कार्य को सफलता प्रदान की जा सकती है और एक सफल गृहस्थ जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

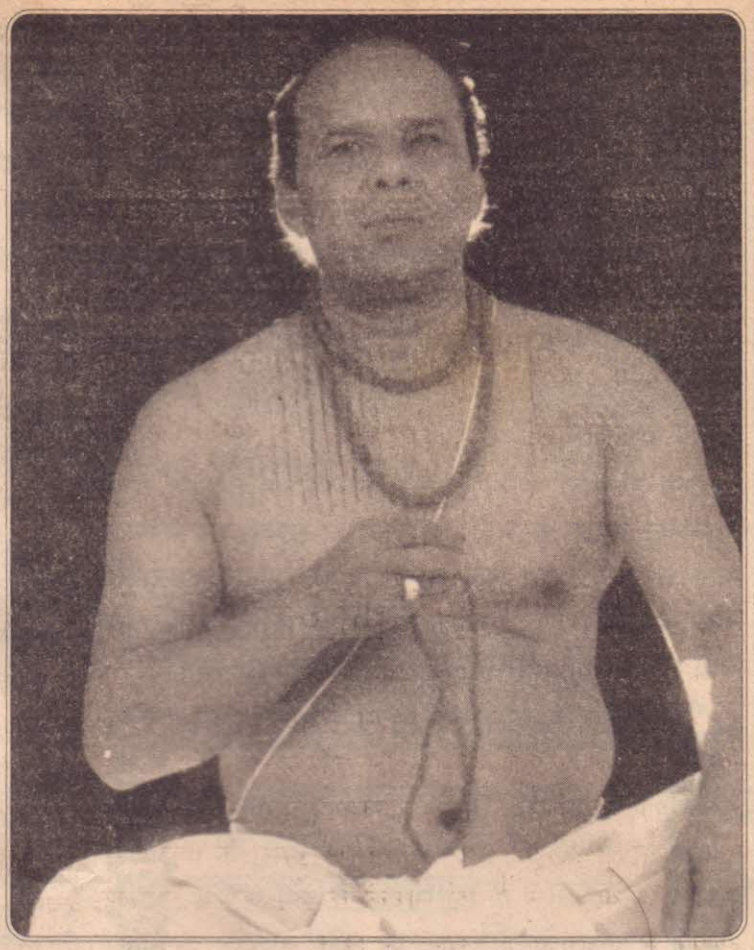

साधना विधिः

1. जीवन में उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त होने तथा संकटों का हरण करने वाला है मंत्र सिद्ध चैतन्य **'संकष्टी यंत्र'** और बाधा निवारण हेतु **'पूर्णा माला'**।
2. यह एक दिवसीय साधना **किसी भी शुक्ल पक्ष की अष्टमी** अथवा **किसी भी बुधवार** को इसे सम्पन्न कर सकते हैं।
3. यह साधना प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में 5 से 8 बजे के मध्य सम्पन्न करें।
4. इसमें पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें।
5. स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें व पीले आसन का ही प्रयोग करें।
6. सबसे पहले बाजोट पर नया सफेद आसन बिछा कर गुरु चित्र को स्थापित करें तथा गुरु पूजन सम्पन्न करें, फिर भगवान गणपति का स्मरण करें।
7. फिर एक तांबे की प्लेट पर 'स्वस्तिक' का चिन्ह बना दें तथा यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराकर स्थापित कर दें।
8. फिर यंत्र का कुंकुम, अक्षत, व पुष्प से पूर्ण भक्ति भावना से पूजन करें।
9. **'पूर्णा माला'** से निम्न मंत्र का 21 माला जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ऐं क्लीं सर्व संकटनाशाय क्लीं ऐं फट् ॥

10. मंत्र जप के पश्चात् उपरोक्त मंत्र से 29 बार आहुति दे कर छोटा सा हवन करें और हवन सामग्री के साथ काली मिर्च, काली सरसों और लौंग को मिला लें, जिससे कि साधक के जीवन में आने वाले भौतिक, दैहिक व दैविक संकटों की निवृत्ति हो सके।
11. फिर यंत्र के आगे हाथ जोड़कर श्रद्धापूर्वक नमन करें और हो सके, तो गुरुदेव से फोन पर या अन्य किसी भी माध्यम से सम्पर्क स्थापित कर आशीर्वाद प्राप्त करें।
12. पूजन सामग्री यंत्र एंव माला को बाजोट पर बिछे कपड़े में ही लपेट कर एक माह के पश्चात् किसी नदी या कुंए में प्रवाहित कर दें।
13. पूरे साधना काल में दीपक प्रज्ज्वलित रहना चाहिए। यह साधना वास्तव में समस्त विघ्नों की नाशक है, जो मानव जीवन के भौतिक, दैहिक व दैविक सभी प्रकार के परितापों से मुक्ति प्रदान करने वाली साधना है।

अतः विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं **6** पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर **490**/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

संन्यास धर्म में भी साधना आवश्यक है

इसीलिए संन्यासी सम्पन्न करते हैं

चातुर्मास प्रव्रत तप

संन्यास की व्याख्या सहित संन्यास कर्त्तव्य आलेख

प्रत्येक आश्रम कुछ विशेष धर्म, नियम और कर्तव्य होते हैं। संन्यासियों के लिये हिन्दू धर्म में यह विशेष रूप से दिखाया है कि उन्हें एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रहना चाहिये। संन्यासी तो परिव्राजक घूमता हुआ योगी है, एक स्थान से दूसरे स्थान पर निरन्तर भ्रमण के पीछे यही भाव है कि वह अपने शिष्यों साधकों के जन-जन के निरन्तर सम्पर्क में अलग-अलग स्थानों पर आता रहे और जनमानस की आध्यात्मिक साधनात्मक गतिविधियों का निरीक्षण करते हुए उन्हें ज्ञान प्रदान करता रहे। जिस प्रकार राजनिति में जनमानस से जुड़ना कहा जाता है, उसी प्रकार संन्यास धर्म में भी मूल रूप से संन्यासी का कार्य जन-जन से जुड़ना है। यदि कोई संन्यासी एक स्थान पर अधिक समय तक रहता है तो यह चिन्ता रहती है कि वह स्थानीय व्यक्तियों अथवा स्थान के प्रति एक लगाव उत्पन्न हो सकता है। इसके अलावा हर स्थान के आपसी द्वेष-प्रेम रहते हैं और उनमें आपसी तनातनी चलती ही रहती है। संन्यासी को, गुरु को इन सब बातों से ऊपर रहना चाहिये, इस कारण एक स्थान पर अधिक समय तक रुकना संन्यासी के लिये प्रतिबन्धित है। इसके अलावा यह कहावत है कि 'अति प्रेम, अति घृणा को जन्म देता है' इस कारण भी संन्यासी को एक स्थान पर अधिक समय तक रहना नहीं चाहिये।

इसके अलावा यह कथन भी सत्य है कि निरन्तर भ्रमण करने से संन्यासी को स्वयं योग साधना, आत्म ज्ञान के लिये अधिक समय नहीं मिल पाता है, हर गुरु के लिये भी यह आवश्यक है कि वह दूसरों को साधनात्मक उपदेश देने के साथ-साथ स्वयं की साधना भी सम्पन्न करता रहे। इस कारण शास्त्रों में चातुर्मास जिसे '**प्रव्रत समय**' कहा गया है। उस समय साधु संन्यासी को, एक स्थान पर रहना चाहिये।

संन्यास आश्रम का मूल सिद्धांत है अहिंसा। अहिंसा का तात्पर्य है अपने द्वारा किसी को भी मानसिक, शारीरिक और वैचारिक हिंसा नहीं पहुंचानी। वर्षा ऋतु के समय प्रमुख बात तो यात्रा की परेशानी के साथ-साथ उस समय उत्पन्न होने वाले विभिन्न कीड़े-मकोड़ों से बचाव तो है ही, इसके अलावा अन्य समय में गुरु, संन्यासी के समक्ष अधिक से अधिक गृहस्थ व्यक्ति आ सकते हैं जबकि चातुर्मास के समय गृहस्थ व्यक्तियों के लिये भी यात्रा करना सम्भव नहीं होता है इस कारण गुरु एक स्थान पर ठहर जाते हैं और अपनी स्वयं की विशेष साधना के साथ-साथ कम से कम व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर उन्हें विशेष ज्ञान प्रदान करते हैं। गुरु वर्षभर में चल रही दिनचर्या को भी नियमित करते हैं और प्रकृति से तारतम्य जोड़ते हुए संसार में जीने वाले व्यक्तियों और कीट-पंतगों की तरह अनुभव करते हुए यह आत्मज्ञान प्राप्त करते हैं कि इस जगत में प्राणी अपनी-अपनी क्रियाओं में ही व्यस्त है और जीवन कीट पंतगों की भांति ही नष्ट होता रहता है, नया उत्पन्न होता रहता है।

संन्यासी अहिंसा के धर्म का कठोरता के साथ पालन करता है। इस कारण उन्हें अपना स्वयं का भोजन पकाने से निषिद्ध किया गया है। जिससे की जीव हत्या न हो। भगवान महावीर और बुद्ध के समय से साधुओं द्वारा भिक्षा, नित्य भ्रमण करना संन्यासी के जीवन का प्रमुख नियम माना गया है। इसके पीछे

यह भाव नहीं है कि साधु और संन्यासी के पास धन, शक्ति और क्रिया की कमी है, अपितु यह भाव है कि गृहस्थ व्यक्तियों से भिक्षा में जो भी प्रदान हो जाये उसे ग्रहण करना है। उसे स्वाद वगैरह कि भावना नहीं रखनी है। संन्यास जीवन का एक मूल उद्देश्य मनुष्य जीवन में आये मिथ्या अभिमान को समाप्त करना है इसलिये भी भिक्षा वृत्ति द्वारा अथवा दूसरों द्वारा दिये गये भोजन, वस्त्र आदि को धारण करना है, जिससे निरन्तर अंहकार रूपी दुर्ग समाप्त होता रहे।

इसके अलावा संन्यास धर्म में तो यह भी व्यवस्था है कि साधु को हरी पत्तियां भी नहीं तोड़नी है, पुष्प भी पेड़ से नहीं तोड़ने, वास्तव में साधुओं के लिये तो अग्नि भी वर्जित है। इस कारण संन्यासी कभी यज्ञ, इत्यादि नहीं करते। वे अपनी आत्मा में निरन्तर यज्ञ कर अपनी आत्मअग्नि, आत्मबल को निरन्तर जाग्रत करते हैं।

चातुर्मास के सिद्धान्त

हिन्दू धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म, जैन धर्म इत्यादि सभी धर्मों में विस्तार से आया है। पहले चातुर्मास अपने नाम के अनुसार चार महीने का होता था। धीरे-धीरे यह चातुर्मास दो माह अथवा चार पक्ष में परिणित हो गया। दो महीने भ्रमण हीनता का नियम संन्यासियों के लिये रखा गया।

चातुर्मास का विवेचन श्रीमद्भागवत में भी आया है कि 'एक बार महर्षि नारद से किसी ने पूछा कि आपमें इतना ज्ञान कहां से आया - तब नारद ने कहा कि "उनके बचपन में वह जिस स्थान पर अपनी माता के पास रहते थे, उस स्थान पर बहुत से साधु-संत चातुर्मास सम्पन्न करने के लिये आते थे और उन साधु संन्यासियों का बचा हुआ भोजन मैं प्रसाद रूप में ग्रहण करता था। उससे उनका जप और ज्ञान मुझे प्राप्त होता था और उनकी सेवा करने से मुझे आत्म साक्षात्कार प्राप्त हुआ," यह संन्यासियों की तपस्या का श्रेष्ठ उदाहरण है।

संन्यासी चातुर्मास सम्पन्न करने का संकल्प गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु का, इष्ट का, पूजन कर ही लेते है। यह व्यास पूजा उपक्रम संन्यासियों के लिये भी उतनी ही अधिक आवश्यक है जितनी गृहस्थ व्यक्तियों के लिये गुरु पूर्णिमा पर गुरु पूजा, व्यास पूजा आवश्यक है।

वेदों के रक्षक होने के कारण संन्यासी अपने हाथ में सदैव दण्ड रखते हैं। जिससे उन्हें निरन्तर याद रहे कि उनका मूल कार्य वैदिक ज्ञान की रक्षा करना है। इसके अलावा संन्यासी के लिये आवश्यक है कि वह उपक्रम करता रहे जिससे उसकी आध्यात्मिक शक्ति में तो वृद्धि हो ही, साथ ही साथ निरन्तर मंत्र उच्चारण से मानसिक शुद्धता आती रहती है, निरन्तर मंत्र-जप, पूजा, ध्यान इत्यादि से ही संन्यासियों का चातुर्मास सम्पन्न होता है और कार्तिक मास में पुनः संन्यासी अपना भ्रमण प्रारम्भ कर देते हैं।

गृहस्थ व्यक्ति भी चाहे तो चातुर्मास के मूल सिद्धांत को समझ कर विशेष व्रत, तपस्या आदि सम्पन्न कर सकते हैं। याद रखें कि जीवन का सिद्धान्त अहिंसा है और अहिंसा का तात्पर्य स्वयं में बलवान होकर किसी को हानि नहीं पहुंचाना है।

संन्यासी तो जीवन का जाग्रत कर्मयोगी होता है, वह भाग्य को प्रधानता न देते हुए गीता के कर्म सिद्धान्त पर विश्वास करता है। इसीलिये वह अपने गुरु से प्राप्त ज्ञान को सिर्फ अपने लिये प्रयोग न करके स्थान-स्थान पर भ्रमण कर उसे जनसाधारण को प्रदान करता है। इसीलिये संन्यासी को समाज में रहते हुए, जो व्यक्ति भोगमय जीवन में निरन्तर उलझे हुए हैं, उनकी समस्याओं का निराकरण करते हुए, आध्यात्मिक ज्ञान भी देना चाहिये। यही भारतवर्ष की परम्परा रही है। आज देश में श्रेष्ठ गुरु आश्रम और धर्म के प्रति विशेष जुड़ाव की जो लहर चल रही है। वह प्रत्येक ग्रहस्थ को कर्म की ओर प्रवृत्त करती है। संन्यास और गृहस्थ तो एक ही जीवन के दो पक्ष है। गृहस्थ में रहते हुए भी मानसिक संन्यास द्वारा अपने कार्य में तीव्र प्रगति की जा सकती है और इसी सिद्धान्त को आधार रूप रखते हुए सम्पन्न होता है कर्मसिद्धि वर्चस्व युक्त संन्यास दिवस शिविर।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नववर्ष शुभ हो

1 जनवरी 2006

राजयोग दीक्षा
राज्याभिषेक दीक्षा
सम्राटाभिषेक दीक्षा
ब्रह्म वर्चस्व शिष्याभिषेक दीक्षा
गुरु तत्व पूर्णाभिषेक दीक्षा

निखिल रसेश्वर दीक्षा
शिव शक्ति दिव्याभिषेक दीक्षा
निखिल शाक्त तत्वाभिषेक महादीक्षा
श्रीयोग गुरु कृपातत्वाभिषेक महादीक्षा
पारमेष्ठीगुरु तत्वाभिषेक महादीक्षा

गुरु कृपा प्रदत्त

पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा

यह दीक्षा नववर्ष के शुभ अवसर पर गुरु के सन्निध्य में गुरु द्वारा अपने शिष्यों का अभिषेक कर शक्तिपात माध्यम से दी जाएगी।

गुरु की महिमा के सम्बन्ध में वैदिक काल से ही शास्त्रों में महत्वपूर्ण विवेचन है, वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन गुरु के बिना अधूरा है। गुरु का सहारा प्राप्त कर जीवन यात्रा में तीव्रता से आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होता है।

प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करने पर भी यही प्रतीत होता है कि जीवन शक्ति, ज्ञान और भाव के सम्बन्ध में स्वावलम्बी नहीं है, परावलम्बी है। उसे बाह्य शक्तियों के सहयोग की अपेक्षा रहती है। इसके बिना वह पंगु ही बना रहता है। जब उसी आन्तरिक शक्ति और बौद्धिक विकास में पर्याप्त बुद्धि हो जाती है, तब उसे बाह्य शक्तियों की अपेक्षा भले ही न हो, परन्तु फिर भी उसे अन्तर की अचिन्त्य शक्ति का आलम्बन स्वीकार करना ही होगा तभी वह पूर्ण विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

भौतिक शिक्षाओं के शिक्षक अपने विषय की जानकारी देकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर लेते हैं, पर अध्यात्म मार्ग में इतने से ही काम नहीं चल सकता। वहां शिक्षा ही पर्याप्त नहीं वरन गुरु द्वारा दिया हुआ आत्मबल भी दान या प्रसाद रूप में उपलब्ध करना पड़ता है। जिस प्रकार कि कोई रोगी चिकित्सक की शिक्षा मात्र से अच्छा नहीं हो सकता, उसे चिकित्सक से औषधि भी प्राप्त करनी पड़ती है, उसी प्रकार सच्चे गुरु न केवल आत्मकल्याण का मार्ग बताते हैं, वरन उस पर चल सकने योग्य साहस, बल और उत्साह भी देते हैं। यह देन तभी सम्भव है जब गुरु के पास अपनी संचित आत्म-सम्पदा पर्याप्त मात्रा में हो। इसलिए गुरु का चयन और वरण करते समय उसकी विद्या ही नहीं, आत्मिक स्तर और तप की संग्रहीत पूंजी को भी देखना पड़ता है। यदि वह सभी गुण न हों तो कोई व्यक्ति अध्यात्म मार्ग का उपदेष्टा भले ही कहा जा सके, पर गुरु नहीं बन सकता। गुरु के पास साधना, तपस्या, विद्या एवं आत्मबल की पूंजी पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए। साधक को ऐसा ही गुरु तलाश करना पड़ता है।

गुरु वरण करने का तात्पर्य उस व्यक्ति की आत्मा के साथ अपनी आत्मा को जोड़ देना है। जिस प्रकार किसी बड़े तालाब के साथ तालाब के साथ छोटे तालाब की एक नाली के द्वारा जोड़ दिया जाए, तो बड़े तालाब का पानी छोटे में आने लगता है और वह तब तक नहीं सूखता, जब तक कि बड़ा तालाब सूख न जाय।

तस्मै स विद्वनुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्त चित्ताय शमन्विताय।
येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्वतो ब्रह्म विद्याम्॥

वह ज्ञानी गुरु उस श्रद्धापूर्ण, शान्तिचित्त एवं तितिक्षा और साधनानिष्ठ शिष्य को ब्रह्मा विद्या का उपदेश करे, जिससे वह अविनाशी, सत्यस्वरूप आत्मा को जान ले।

गुरु की महत्ता एवं योग्यता, शिष्य की पवित्रता एवं सुपात्रता, गुरु के प्रति भक्ति भावना रखना, गुरु के प्रति भक्ति भावना रखना, उनके आदर्श का अनुसरण करना आदि आवश्यक तथ्यों पर शास्त्रों में अनेक प्रसंग मिलते हैं। वे सभी मानवीय एवं विचारणीय हैं। देखिये -

वेद सम्पन्न आचार्य, ईश्वर भक्त, मत्सरता रहित, योग ज्ञाता, योग-निष्ठा वाला, योगात्मा, पवित्रतायुक्त, गुरुभक्त, परमात्मा में विशेष रूप से लीन इन लक्षणों से युक्त गुरु कहा जाता है। 'गु' शब्द का अर्थ हैं - अंधकार और 'रु' शब्द का अर्थ हैं - रोकने वाला। अंधकार को दूर करने वाला गुरु होता है।

गुरु ही परब्रह्म है। गुरु ही परम गति है गुरु ही विद्या है। गुरु ही परायण योग्य है। गुरु ही पराकाष्ठा है। गुरु ही परम धन है। वह उपदेष्टा होने के कारण श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ है।

-अद्वयतारक उपनिषद्

गुरु की परम धर्म है। गुरु ही परम गति है। जो उनका सम्मान नहीं करता, उसकी विद्या, तपस्या सभी धीरे-धीरे ऐसे क्षीण हो जाती है, जैसे कच्चे घड़े में जल। जैसी भक्ति देव में, वैसी ही गुरु में होने से ब्रह्मज्ञानी परम पद को प्राप्त करता है, ऐसा वेदानुशासन हैं, ऐसा ही वेद विधान है।

-शठायायनोयोपनिषद्

गुरु जो आदेश दे, उसका पालन शिष्य को बिना विचारे, सन्तोषयुक्त भाव से करना चाहिए। इस विद्या को गुरु से प्राप्त करें। गुरु की सदा सुश्रुषा करें, इसी में मनुष्य का सच्चा कल्याण होता है... श्रुति में कहा गया है कि गुरु ही साक्षात हरि हैं, कोई अन्य नहीं।

- ब्रह्मविद्या उपनिषद्

माता पिता से भी गुरु का स्थान ऊंचा है।

क्योंकि -

माता पितरौ शरीरमेव काष्ठ कुंडयादि समं जनयतः।
आचार्यस्तु सर्व पुरुषार्थ क्षम रूपं जनयति॥

माता पिता तो लकड़ी के ढोल सरीखे इस देह को ही जन्म देते हैं, पर आचार्य सब पुरुषार्थ भरे अध्यात्म रूप को ही जन्म देता है।

दृष्टोन्तो नैव दृष्टास्त्रिभुवन जठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातुः
स्पर्शश्चेत्तत्र कल्प्यः सनयातिदहो स्वर्णतामश्य सारम्।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरणयुगे सद्गुरुः स्वीयशिष्ये
स्वीयं सम्यं विधते भवति निरुपसस्तेन व लौकिकोऽपि॥

(शंकराचार्य कृत शतश्लोकी)

इस त्रिभुवन में ज्ञानदाता सद्गुरु के लिए देने योग्य कोई दृष्टान्त ही दिखाई नहीं देता। उन्हें पारस मणि की उपमा दें तो भी यह ठीक नहीं जंचती, कारण पारस लोहे को सोना बना देता है पर पारस नहीं बनाता। पर सद्गुरु के चरण कमल का आश्रय लेने वाले शिष्य को सद्गुरु अपने सामन ही बना देते हैं इसलिए सद्गुरु की कोई उपमा नहीं हो सकती।

चिन्तामणिलोके सुखं सुरद्रुः स्वर्गसम्पदम्।
प्रयच्छति गुरुः प्रीतो बैकुण्ठ योगि दुर्लभम्॥

भागवत माहात्म्य

गुरु की कृपा से संसार के समस्त सुख और स्वर्ग की सम्पदा प्राप्त हो सकती है जो कि योगियों के लिए भी दुर्लभ हैं।

गुरु ब्रह्मा गुरु र्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
न गुरोरधिकः कश्चित् त्रिषुलोकेषु विद्यते॥

योगशिखापनिषद्

गुरु की ब्रह्मा, विष्णु और शिव के समान है, तीनों लोकों में गुरु के समान अन्य कुछ भी नहीं।

गुरु उन व्यक्तियों पर विशेष ध्यान देते हैं जो अपने भीतर भक्ति और शक्ति का तत्व लिए होते हैं उन्हें बहुत अधिक प्रक्रियाओं से, परीक्षाओं से गुजारते हैं। उन परीक्षाओं में गुरु के मन में हर बार यही भावना रहती है कि मैं शिष्य को और अधिक दृढ तथा योग्य बनाऊं। हम इस कर्म संसार में रहते हैं इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करना, कर्तव्य करना आवश्यक है। केवल ज्ञान प्राप्त करना ही अधिक नहीं है। उस ज्ञान को कर्म भूमि पर लागू भी करना पड़ता है जो व्यक्ति यह कहते हैं कि मैं कोई प्रकार का कर्म नहीं करना चाहता वे वास्तव में आलसी व्यक्ति हैं जो जीवन में ऊंचाईयों को प्राप्त करने में असफल रहते हैं। वे असफलता छिपाने के लिए कर्महीनता का आश्रय लेते हैं।

जब तक हम ज्ञान का विकास करते रहते हैं तब वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है जिस प्रकार व्यक्ति किसी रोगी का ईलाज करने से पहले कई प्रकार की परीक्षाएं करता है इसी प्रकार गुरु भी ज्ञान और शक्ति देने से पहले उसे कई प्रकार की कड़ी परीक्षाओं से गुजारता है उसे अपने कर्मों से और कर्मों की

वास्तविकताओं से परिचित कराता है और जब एक भाव भूमि तैयार हो जाती है तो गुरु से, पुर्णत्व से और शक्ति तत्व से भर देते हैं अन्यथा व्यक्ति की स्थिति **'त्रिशंकु'** के समान हो जाती है।

'त्रिशंकु' गुरु वशिष्ठ के पास गया और साधना करने के पश्चात सदेह स्वर्ग जाने की इच्छा प्रगट की इस पर वशिष्ठ ने कहा कि तुम्हें अपने जीवन में कर्म तो करने ही पड़ेंगे जबकि 'त्रिशंकु' जीवन के आवश्यक कर्मों को नहीं करना चाहता था इस पर नाराज होकर वह ऋषि, विश्वामित्र के पास गया और विश्वामित्र ने कहा कि मैं अपनी साधना के बल पर उसे सदेह स्वर्ग भेज दुंगा लेकिन कर्म गति पूर्ण नहीं करने के कारण वह स्वर्ग तथा पृथ्वी लोक के बीच अधर में ही लटक गया और गुरु शिष्य को कभी भी त्रिशंकु नहीं बनाना चाहते हैं। पृथ्वी पर ही उसे पूर्ण रूप से योग्य बना देते हैं जिससे वह अपने जीवन पर स्वयं विजय प्राप्त कर सके। अपने जीवन को स्वयं भली भांति समझ सके और इसी स्थिति को पूर्ण करने के पश्चात् ही गुरु शिष्य को 'पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा' प्रदान करते हैं, यह पूर्णता केवल गुरुकृपा से ही प्राप्त हो सकती है।

गुरोः कृपा यस्य भवेत् प्रभूता,
श्री देवतायाश्च महान् प्रसादः।
तस्यैव पुंसः दीक्षार्थ लाभः,
तस्यात्र भक्तिर्न खलोपनोद्या॥

गुरु कृपा से ही साधक निर्द्वन्द्व होकर अपने लक्ष्य को अपने पूर्णता को प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो जाता है और उसे निरंतर शक्ति प्राप्त होती रहती है।

शिष्य की यात्रा

शिष्य की यात्रा गुरु चरणों तक ही तो होती है और यह समस्त यात्रा पूर्ण हो जाने के उद्देश्य से ही तो होती है। मनुष्य यदि अपूर्ण न होता तो उसमें एक छटपटाहट क्यों होती, क्यों होता एक प्रवाह जीवन में कुछ कर गुजरने का, कुछ प्राप्त कर लेने का, उसे प्राप्त कर लेने का जिसे वह अपना लक्ष्य, अपना प्रिय स्वप्न, और अपना एकमात्र ध्येय मान चुका है और वह प्राप्त नहीं कर सका है, इसीलिए तो उसके अन्दर प्राप्त करने की इच्छा शेष है, इसीलिए वह अपने को अपूर्ण अनुभव कर रहा है। परंतु शास्त्र तो कुछ और ही कहते हैं, वे तो उद्घोष करते हैं- **अहं ब्रह्मास्मि!**

इसी तथ्य को उजागर करते हुए पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने **जनवरी-98** में शिष्यों को आशीवर्चन के रूप में कहा था- 'मुझ पर यह दायित्व है, कि अपने शुभाशीर्वाद के माध्यम से तुम्हारे जीवन को पूर्णता से सिक्त करूं, जिससे तुम्हारा जीवन प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण हो। तुम सभी शिष्य मेरे मानस पुत्र हो और मुझ पूर्ण से उद्भव प्रापत करने के कारण स्वयं भी पूर्ण हो। अंतर केवल इतना है, कि तुम्हें अपना पूर्णत्व का बोध नहीं रह गया है, जिसका अब जाग्रत होना आवश्यक हो गया है। तुम सभी शिष्य मेरी प्राणश्चेतना के साथ-साथ स्वयं मेरी मनश्चेतना के अविभाज्य अंग भी हो, यदि तुम इस बात का स्मरण रखो, तो तुम में यह बोध स्वतः जागृति की अवस्था में आ जाएगा।....और यही सन्देश लेकर केवल आज नहीं मैं तो सदा-सर्वदा से तुम्हारे मध्य उपस्थित रहा हूं।'

और यही तो **ईशावास्योपनिषद** का यह श्लोक भी कह रहा है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते॥

अर्थात् संसार में **सब कुछ पूर्ण ही है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की ही उत्पत्ति होती है एवं पूर्ण से पूर्णत्व प्राप्त कर लेने पर भी पूर्ण पूर्ण ही रहता है।**

दिव्य शक्ति किसी एक स्वरूप अथवा विचार और क्रिया में बांधी नहीं जा सकती। यह तो संसार में सभी प्राणियों में विचरण करती है और शक्ति के संबंध में यह कहा जाता है कि शक्ति उसी की हो सकती है जो शक्ति को जानना चाहता है, पहचानना चाहता है उसे अपने भीतर जाग्रत करना चाहता है। और इसीलिए संसार में व्यक्तियों में भेद हैं लेकिन गुरु अपने किसी शिष्य को निर्बल नहीं रखना चाहते हैं वे प्रत्येक शिष्य को शक्ति तत्व से पूर्ण करना चाहते हैं जिससे वह स्वयं शक्तिमान होकर कर्मयोगी का जीवन जी सके। इस नववर्ष का उपहार नवीनता का संचार करना और जीवन में नवीन शक्ति भरना गुरु का कार्य है। शिष्य का कार्य तो विशुद्ध मन से अहंकार रहित होकर गुरु के समीप बैठ जाना है। तब उसे निखिल ज्ञान और निखिल शक्ति प्राप्त होती है। इसी से जीवन में पूर्णता प्राप्त हो सकेगी।

इस नववर्ष के प्रारम्भ में ऐसी ही महान् क्रिया आपके जीवन में सम्पन्न हो सकें। इसके लिये आवश्यकता है गुरु के प्रति पूर्ण सत्य निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास की आपको दिनांक 01.01.2006 को नारायण शक्ति स्थल आरोग्य धाम दिल्ली में सम्पन्न होने जा रहे। एक दिवसीय **''गुरु कृपा प्रदत्त पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा महोत्सव''** में सम्मलित होना है। इस हेतु आपको संलग्न प्रपत्र भर कर भेजना है। आपका हृदय से स्वागत है।

गुरु कृपा प्रदत्त पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा

पांच मित्रों के नाम :-

1. नाम .....

पूरापता .....

.....

2. नाम .....

पूरापता .....

.....

3. नाम .....

पूरापता .....

.....

4. नाम .....

पूरापता .....

.....

5. नाम .....

पूरापता .....

.....

उस यशस्वी साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है।

नाम .....

पूरापता .....

.....

विशेष - जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही यह गुरु कृपा प्रदत्त पूर्णमदः पूर्णमिदं दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मित्रों के पूर्ण प्रामाणिक पत्ते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पत्ते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये 1200/- ((195+45)=240*5=1200) का बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-14,
फोन: 011-27182248, टेली फैक्स:27196700

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

भगवती तारा महाविद्या स्तोत्र

हम अपने मुंह से जो शब्द निकालते हैं, वह वायुमंडल में गुंजरित रहता है, क्योंकि इस वायुमण्डल से उत्पन्न ध्वनि कभी भी समाप्त नहीं होती। इसीलिये आज वैज्ञानिक इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि यदि ध्वनि समाप्त नहीं होती, वह शाश्वत रहती है तो श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद तथा वह ध्वनि भी वायुमंडल में ही गतिशील होगी। यदि ध्वनि की उस वेव को पकड़ा जा सके तो उस संवाद को भी सुना जा सकता है।

स्तोत्र भी एक प्रकार से विशेष शब्दों का संयोजन है जिसके माध्यम से एक विशेष प्रकार की ध्वनि संयोजन तैयार होकर प्रवाहित होता है और सामने वाले व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

इसीलिये जब हम किसी विशेष देवता को प्रसन्न करने के लिए तथा मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिए स्तोत्र का पाठ करते हैं तो उस शब्द संयोजन से एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है जो इस जगत में स्थित सम्बन्धित देवताओं की भावनाओं को उद्वेलित या आन्दोलित करता है और देवता उस प्रभाव से हमारे अनुकूल होकर हमें मनोवांछित फल देने में सहायक हो जाते हैं।

आगम शास्त्र के अनुसार महातम के केन्द्र में उत्पन्न होने वाले सूर्य को 'नक्षत्र' कहा गया है, अतः उनकी शक्ति 'तारा' नाम से जानी गयी। ओंकार (प्रणव) को 'तारक' कहा गया है और प्रणवस्वरूपा होने के कारण ही भगवती 'तारा' हैं। तारा शब्द का सरलार्थ है - उबारने वाली, तारने वाली। इस प्रकार दैहिक, दैविक और भौतिक - इन तीनों प्रकार के तापों से तारने के कारण ही भगवती 'तारा' कही गयीं।

तारा साधना करना अत्यधिक फलदायी है, अतः वर्तमान समय में अपने जीवन को परिपूर्ण बनाये रखने के लिए, जीवन को प्रत्येक विपत्तियों से सुरक्षित रखने के लिए तथा घर में सम्पन्नता बनाये रखने के लिए, इन तीनों तत्त्वों की प्राप्ति के लिए अत्यधिक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं, भगवती तारा की साधना।

मुण्डमाल तंत्र में तारिणीशतनामस्तोत्र है। इसमें तारा के विभिन्न रूपों की चर्चा है। उपासना के प्रसंग में उनकी महिमा का गायन है। स्तोत्र इस प्रकार है-

श्री शिव उवाच।

तारिणी तरला तन्वी तारा तरुण वल्लरी।
तीर रूपा तरश्यामा तनुक्षीणा पयोधरा॥
तुरीया तरला तीव्र गमना नीलवाहिनी।
उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेक जटाशिवा॥
तरुणी शाम्भवी छिन्नमाला च भद्रतारिणी।
उग्रा चोग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती॥
द्वितीया शोभिनी नित्य नवीना नित्य नूतना।
चण्डिका विजयाराध्या देवी गगन वाहिनी॥
अट्टहास्या करालास्या चरास्या दितिपूजिता।
सगुणा सगुणाराध्या हरीन्द्र देव पूजिता॥
रक्त प्रिया च रक्ताक्षी रूधिरासवभूषिता।
बलिप्रिया बलिरता दुर्गा बलवती बला॥
बलप्रिया बलरता बलराम प्रपूजिता।
अर्द्धकेशेश्वरी केशा केशवेश विभूषिता॥
पद्ममाला व पद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिता।
दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणेतरा॥
वज्रपुरुष प्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता।
माहेश्वरी महादेवप्रिया पद्मविभूषिता॥
इड़ा च पिंड़ला चैव सुषुम्ना प्राणरूपिणी।
गांधारी पंचमी पंचाननादि वरि पूजिता॥
इत्येतत् कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम।
श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति तारादेव्याः प्रसादतः॥
यः इदं पठति स्तोत्रं तारा स्तुति रहस्यकम्।
सर्वसिद्धि युतो भूत्वा विहरेत क्षितिमंडले॥
तस्मैवं मंत्रसिद्धिः स्यान्मम सिद्धिरनुत्तमा।
भवत्येवं महाभागे सत्यं सत्यं न संशयः॥
मन्दे मङ्गलवारे च यः पठेन्निशि संयतः।
तस्मैवं मंत्रसिद्धिः स्याद आस्य ज्ञानं लभेत्तुराः॥
श्रद्धयाअश्रद्धया वापि पठेन्तारारहस्यकम।

सोहचिरनैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत॥
सहस्रावर्त्तनाद्देवी पुरश्चर्या फलं लभेत।

एवं सतत युक्ता ये ध्यायन्तस्त्वामुपासते।
तेशिवो भवेत सहस्रावर्त्तनाद्देवि पुरश्चर्याफलं लभेत।

अर्थ

भगवती तारा अपने भक्तों को भवसागर से पार करने वाली है, चंचला, सुन्द अंगों वाली यौवन से भरपूर सब की सहारा देने वाली, अत्यन्त सौख्यमयी, सुन्दर और सुखद स्तनों से युक्त है।

मोक्ष स्वरूपा गतिमयी सर्वत्र गमनशीला नील अंगों वाली आकाशीय तारा की तरह चमकने वाली, विजय प्रदान करने वाली क्रोध स्वरूपा सुन्दर एक वेणी से युक्त कल्याणदायिनी है।

भरपूर योवन से युक्त, शिव स्वरूपा, शत्रुओं के मस्तक को काटने वाली, सुगम मार्ग से भक्तों को पार करने वाली, अत्यन्त दीप्त युक्त, नील और कृष्ण रंगों से युक्त होने के कारण नील सरस्वती कही जाती है।

अत्यन्त शोभामयी, नित्य नवीन, नित्य नये रूप में दर्शन देने वाली, शत्रुओं के लिए भय स्वरूपा विजयी देने वाली, वह आकाश मंडल में विचरण करने वाली है।

भयंकर गर्जन करने वाली, भयावह मुख वाली, समस्त प्राणियों से तथा देवताओं से पूजित अत्यन्त गुणवती सभी प्राणियों के आराध्या स्वरूपा तथा विष्णु, इन्द्र आदि देवताओं द्वारा पूजित है।

शत्रुओं के रक्त को पीने वाली लाल नेत्रों वाली रुधिर मज्जा आदि से लिप्त बलि चाहने वाली शत्रुओं की बलि देने वाली और दुर्गास्वरूपा बल और अनेक कलाओं से युक्त है।

अत्यन्त बलवती, बल कार्य करने वाली, बलराम से सुपूजित, सुन्दर केशों वाली, तथा सुन्दर वेश भूषा से युक्त है।

कमल पुष्प की माला पहनी हुई, कमल के समान नेत्रों वाली, कामाख्या नाम वाली, पर्वतों पर विचरण करने वाली, साधकों को धन देने वाली, अत्यन्त चतुर दक्ष प्रजापति से उत्पन्न अत्यन्त चतुर भगवती तारा है।

वजरूपी पुष्प को चाहने वाली, शत्रुओं के खून से प्यास को बुझाने वाली, फुलों से सुशोभित, शिव स्वरूपा भगवान शंकर की प्रिया तथा लक्ष्मी स्वरूपा है।

इड़ा पिंगला तथा सुषमना नाड़ियों को प्राण देने वाली, अष्टगंध से भरपूर पांच स्वरूपों वाली, सिंहों से युक्त भगवती तारा दस महाविद्याओं में अत्यन्त उग्र और तेजस्विनी है।

हे देवि पार्वती भगवती तारा के इस रहस्यमयी चरित्र को मैंने आपके सामने वर्णन किया जिसे सुन कर भगवती तारा की कृपा से मोक्ष प्राप्त होता है।

भगवती तारा के इस रहस्य पूर्ण स्तोत्र को जो सुनता है। सभी सिद्धियों से युक्त होकर पृथ्वी तल पर विचरण करता है।

हे महामाये पार्वती ये श्रेष्ठतम सिद्धियां उसी पुरुष को प्राप्त होती है जिनमें कोई संशय नहीं है।

जो साधक शनि और मंगलवार की रात्रि को संयमित होकर स्तोत्र का पाठ करता है उसको शीघ्र ही मंत्र सिद्धि प्राप्त होती है।

जो भक्तगण श्रद्धा या अश्रद्धा से इस रहस्यमय स्तोत्र का पाठ करता है वह शीघ्र ही जीवन मुक्त शिव स्वरूप हो जाता है।

जो साधक इस स्तोत्र का पुरुश्चरण करता है, वह शिव स्वरूप को प्राप्त करके जीवन मुक्त हो जाता है।

तारा शक्ति पूजा की परम्परा में सर्वपूज्य है। तारा के शतनाम स्तोत्र में प्रत्येक नाम की व्याख्या के मूल में ऐतिहासिक सन्दर्भ की सत्ता विद्यमान है। तारा शक्ति पूजा की लोकप्रिय देवी है। इसका पाठ शक्ति साधक को अवश्य ही करना चाहिए।

इस स्तोत्र को सिद्ध करने की विधि अत्यंत सरल है। इसे आप **किसी भी मंगलवार अथवा अष्टमी** से 11 दिन तक नित्य 5 बार लय पूर्वक पाठ करें।

प्रत्येक स्तोत्र अपने आप में कुछ न कुछ तीक्ष्ण प्रभाव छिपाए ही रहता है। मां तारा का यह स्तोत्र सभी के लिए आवश्यक है और गृहस्थ व्यक्ति को इसका नियमित पाठ करना ही चाहिए। जिसका जीवन दुर्भाग्य एवं परिस्थितियों के कारण असहाय, दीन और जर्जर बन गया है। जीवन में विजय इस तीव्र स्तोत्र द्वारा संभव हो जाती है। कई साधकों ने मात्र इसी स्तोत्र के पूर्ण श्रद्धा पूर्वक पाठ द्वारा मां तारा के बिम्बवत एवं साकार दर्शन भी किए हैं।

भवगती तारा महाविद्या कवच

विनियोग

ॐ अस्य श्रीतारा - कवचस्य श्री अक्षोभ्य ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीतारा छन्दः, श्रीतारा देवता, सर्व कामार्थ-साधने पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

श्रीअक्षोभ्य-ऋषये नमः शिरसि, बृहती-छन्दसे नमः मुखे, श्रीतारा-देवतायै नमः हृदि, सर्व-कामार्थ-साधने पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कवच

संसार - तारिणी तारा, पूर्वस्यां पातु मां सदा।
प्रत्यालीढ़ पदा घोरा, तथाग्नेय्यां जगन्मयी॥१॥
उग्र-तारा पातु याम्यां, यम-भीति-विनाशिनी।
नैऋत्यां चण्डिका पातु, मुण्ड-माला-विभूषिता॥२॥
खर्वा लम्बोदरी भामा, व्याघ्र-चर्मावृता कटौ।
एक-जटा सदा पातु, पश्चिमे च हर-प्रिया॥३॥
नव-यौवन-सम्पन्ना, पञ्च-मुद्रा-विभूषिता।
नील-सरस्वती पातु, वायव्ये पुत्रिणी सदा॥४॥
बालार्क -मण्डलाकार-लोचन-त्रय-भूषिता।
कौबेर्यां च महा-तारा, पातु नित्यं सुर-प्रिया॥५॥
चतुर्भुजा ललज्जिह्वा, भीम-रूपा महा-बला।
भैरवी च तथा पातु, ऐशान्यां दिशि मां सदा॥६॥
खड्ग-कर्तृ-धरा सव्ये, वामे योत्पल-खर्परा।
ऊर्ध्वे वागीश्वरी पातु, द्रुत-बुद्धि३-करी सदा॥७॥

पिङ्गलोर्द्ध-जटा-मध्ये, वासुकीषु नियोजिता।
सावेश-स्मेर-वदना, वस्त्रालंकार-भूषिता॥८॥
मस्तकं पातु मे पद्मा, श्वेत-पद्मान्तर-स्थिता।
भालं मे पातु पद्मा च, नासिकां रूप-धरिणी॥९॥
सुन्दरी पातु नेत्रे च, सर्वानन्द-स्वरूपिणी।
श्रवणे सर्वदा पातु, कालिका मुण्ड-मालिनी॥१०॥
श्मशान-भैरवी पातु, स्कन्धं मे सर्वदैव हि।
आनन्द-भैरवी बाहू, पातु नित्यं सुर-प्रिया॥११॥
हस्तौ रक्षतु शर्वाणी, हृदयं पातु सर्वदा।
मध्यं रक्षतु मातङ्गी, नाभिं पातु सुरेश्वरी॥१२॥
कटिं कामेश्वरी पातु, भक्त-काम-प्रपूरिणी।
भुवनेश्वरी सदा पातु, उरू मे सर्व-मङ्गला॥१३॥
महा-त्रिपुर-सुन्दरी च, जानुनी पातु सर्वदा।
अश्वारूढ़ा तथा जंघे, प्रचण्डासुर-घातिनी॥१४॥
भद्र-काली तथा पादौ, पायाच्चाभद्र-हारिणी।
सर्वत्र त्वरिता पातु, सर्वत्र हित-कारिणी॥१५॥
अग्रतः षोडशी पातु, देवी-त्रिपुर-सुन्दरी।
पृष्ठतो मे गुह्य-काली, नित्यं रक्षतु शोभना॥१६॥
कृष्ण-देहा दक्ष-पार्श्वे, नित्यं पातु सु-शोभना।
वाम-पार्श्वे सदा पातु, रक्त-बीज-विनाशिनी॥१७॥

॥फल-श्रुति॥

इत्येतत् कवचं प्रोक्तं, सर्व-कामार्थ-सिद्धिदम्।
गोपनीयं सदा देवि! न कस्मैचित् प्रदर्शयेत्॥१॥

कवच धारण विधान

किसी भी बुधवार की रात्रि को साधक स्नान कर पीले शुद्ध वस्त्र धारण कर लें। उसके पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुख कर पीले आसन पर स्थान ग्रहण करें। अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर प्राणप्रतिष्ठायुक्त तारा कवच को एक तांबे के पात्र में रख दें। इस बाजोट पर गुरु चित्र एवं तारा महाविद्या का चित्र स्थापित कर दें। सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर सद्गुरुदेव से साधना में सफलता हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें।

इसके पश्चात् दायें हाथ में जल लेकर साधना को पूर्ण करने का संकल्प लें। तत्पश्चात् विनियोग एवं तारा महाविद्या ध्यान करें। सुगंधित धूप बत्ती जलाकर तीन बार तारा महाविद्या कवच का पाठ करें।

कवच का पाठ सम्पन्न होने पर प्राण प्रतिष्ठायुक्त कवच को लाल धांगे में पिरोकर अपनी भुजा पर बांध लें।

तारा कवच - 600/-

तारा साधना वर्ष में दो बार अवश्य सम्पन्न करें, साथ ही नियमित रूप से प्रत्येक बुधवार तारा कवच धारण कर, तारा स्तोत्र का पाठ पूरे परिवार को शीघ्र फल प्रदान करता है। तारा जाग्रत देवी है और स्तोत्र के पाठ के समय ही शरीर में विशेष क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

निःशुल्क उपहार

सर्व सिद्धि छिन्नमस्ता यंत्र

वैदिक काल से आज तक सभी ऋषियों, मुनियों, उच्चकोटि के साधकों ने एकमत स्वर से यह स्वीकार किया है, कि महाविद्याएं संसार की सर्वोत्कृष्ट साधनाएं हैं। एक महाविद्या की साधना को सिद्ध करने में साधक का लगभग पूरा जीवन व्यतीत हो जाता है तब कहीं जाकर वह साधना सिद्ध कर पाता है। यदि महाविद्या सिद्ध यंत्र प्राप्त हो जाय, तो फिर जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता अनुभव हो ही नहीं सकती है। सर्वसिद्धिदा छिन्नमस्ता यंत्र आपके जीवन के समस्त शत्रुओं को परास्त करने में समक्ष होगा, वहीं इस यंत्र के माध्यम से आप भगवती छिन्नमस्ता की समस्त सिद्धियों को भी प्राप्त करने में समक्ष होंगे, निश्चय ही यह यंत्र आपके जीवन के लिए अत्यन्त अनुकूलता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा, इसे पूजन स्थान में स्थापित करने के बाद नित्य यंत्र का सिर्फ संक्षिप्त पूजन करना है और तीन माह पश्चात इसे नदी में प्रवाहित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान-'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं। एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'सर्व सिद्धिदा छिन्नमस्ता यंत्र' 390/-(20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/-+ डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें, आपका पत्र आने पर हम 300/-+ डाक व्यय 90/-=390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'सर्व सिद्धिदा छिन्नमस्ता यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - **342001,** (राजस्थान)

फोन - **0291 - 2432209, 2433623** टेलीफैक्स - **0291 - 2432010**

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती है, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

गुरुवार, 29-12-05 — **व्यापार वृद्धि, कार्य सिद्धि प्रयोग**

क्या आप व्यापारी हैं और आपके अथक प्रयासों के उपरान्त भी आपके व्यापार में मनचाही वृद्धि नहीं हो पा रही है या किसी व्यापारिक कार्य में बाधा आ रही है और कार्य सिद्ध नहीं हो रहा है अथवा आप व्यापार करना चाहते हैं, परन्तु अनुकूल स्थितियां नहीं बन पा रही हैं, तो आपको निश्चय ही इस साधना में भाग लेना चाहिए, जिससे कि आपका मनोवांछित कार्य सिद्ध हो सके ... आप व्यापार करते हैं लेकिन आपको फायदा नहीं होता है बल्कि आपको घाटा हो जाता है तथा आपके व्यापार को किसी ने बांध दिया है इसलिए आप एक बार अवश्य ही इस प्रयोग को सम्पन्न करें फिर देखें कि आपके व्यापार में वृद्धि होती है या नहीं। साधना के द्वारा ही आप अपने व्यापार में उन्नति कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए आप कार्य सिद्धि प्रयोग को एक बार अवश्य ही करें।

शुक्रवार, 30-12-05 — **बगलामुखी महाविद्या प्रयोग**

बगलामुखी साधना का शास्त्रों में ही नहीं इतिहास के पृष्ठों में भी वर्णन मिलता है। चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, राज राजेन्द्र चोल ने अनेकों बार शत्रुओं पर अद्वितीय सफलता इसी साधना के माध्यम से पाई थी। जीवन में शांति सहज नहीं है, अनायास ही कई शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं, जो जीवन में असन्तुलन पैदा कर देते हैं। शत्रुओं के ऐसे सभी प्रयास असफल हो सकें, शत्रु निस्तेज हो सकें, इसके लिए बगलामुखी साधना का सदा से प्रचलन रहा है। शत्रु कोई व्यक्ति नहीं, जीवन की कोई विकट स्थिति भी हो सकती है, जो आपके लिये शत्रु से कम नहीं है,जैसे- मुकदमे में सन्दिग्धता, अधिकारियों से अनबन, लोगों के उलाहने, समाज के कटाक्ष और कई आत्मगत न्यूनताएं। इन सबके ऊपर विजय भी बगलामुखी साधना से सम्भव है और इस महाविद्या साधना का प्राप्त होना ही अपने आप में सौभाग्य है।

शनिवार, 31-12-05 — **भगवती दुर्गावरदायक प्रयोग**

भगवती दुर्गा मां, शक्ति के विभिन्न स्वरूपों में सबसे अधिक क्षमतावान, दयावान एवं शक्तिशाली है। उनकी साधना का अर्थ है जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना जो कि आपका अभीष्ट है। उनकी साधना के पश्चात यह संभव ही नहीं कि कोई इच्छा अपूर्ण रह जाए। भगवती दुर्गा तो साधक की कामनाओं की पूर्ति के लिए अपने वरदानों की झोली खोल देती है, प्राप्त करना न करना तो फिर साधक की अपनी क्षमता पर निर्भर है। परंतु अगर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ इस प्रयोग को गुरु के सान्निध्य में संपन्न कर लिया जाए तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है। इस श्रेष्ठतम प्रयोग द्वारा आप किसी एक इच्छा की पूर्ति कर सकते हैं। जो साधक नवरात्रि में दुर्गा साधना से वंचित रह गये है वे अवश्य ही इस साधना में भाग लें।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्ही दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं है, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन दिवसों को साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन **3** दिनों के लिये **29-30-31** दिसम्बर

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- **जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।**

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात युक्त दीक्षा

त्रिपुर भैरवी दीक्षा

भूत-प्रेत एवं इतर योनियों द्वारा बाधा आने पर जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। ग्रामीण अंचलों में तथा पिछड़े क्षेत्रों के साथ ही सभ्य समाज में भी इस प्रकार के कई हादसे सामने आते हैं, जब कि पूरा का पूरा परिवार ही इन बाधाओं के कारण बरबादी की कगार पर आकर खड़ा हो गया। त्रिपुर भैरवी दीक्षा से जहां प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है, वहीं शारीरिक दुर्बलता भी समाप्त होती है, व्यक्ति का स्वास्थ्य निखरने लगता है। इस दीक्षा को प्राप्त करने के बाद साधक में आत्म शक्ति त्वरित रूप से जाग्रत होने लगती है और बड़ी से बड़ी परिस्थितियों में भी साधक आसानी से विजय प्राप्त कर लेता है, असाध्य और दुष्कर से दुष्कर कार्यों को भी पूर्ण कर लेता है। दीक्षा प्राप्त होने पर साधक किसी भी स्थान पर निश्चिंत, निर्भय आ जा सकता है, ये इत्तर योनियां स्वयं ही ऐसे साधक से भय रखती है।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का . .
* गुरु प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है . . .
* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों का जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सांय ७ बजे प्रदान की जाएगी।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700

Magnetise yourself!

Once Lord Krishna, then a disciple under the great Sadguru Sandeepan, was seated at the feet of the Guru and massaging his feet. He took great pleasure in serving the Master and did so with love and devotion. The Master lay reclining peacefully.

Suddenly there was a commotion and turning his eyes Krishna saw a deer jump over the hedge around the Ashram closely followed by a tiger. Lord Krishna realised the peril in which the deer was and knew that in another moment the tiger would be upon its prey. But then something quite unexpected happened.

As soon as the tiger too jumped over the hedge and entered the Ashram precincts it underwent a remarkable change and it approached the deer like a harmless lamb and started to lick it playfully. Soon the two were playing and gamboling about like old friends.

Lord Krishna sat their unmoving, completely hypnotised by the scene. His fingers no longer moved over the feet of his Master. The Guru opened his eyes and took in the remarkable scene. Then he laughed lightly seeing Krishna sitting there completely dumbstruck.

"Gurudev what's this?" Krishna could not help asking.

The great Guru replied, "This whole Ashram is under the powerful sway of Surya Sammohan Sadhana (Hypnotic Sadhana of the Sun). No being who enters this Ashram can remain unaffected by this mesmerising charm. That's why even the tiger has forgotten its inherent cruel streak and become so docile."

Continuing further the Guru said, "I later life you shall have to face a lot of opposition Krishna. You shall have many powerful and dangerous adversaries. You should accomplish this Sadhana so that they could become harmless in your presence."

And Lord Krishna did accomplish this Sadhana and through its power he was able to enchant even the staunchest of his foes.

Presented here is this very Sadhana which is a must for everyone today who desires to achieve success and fame in life or who faces virtually invincible adversaries in his or her field of work. For those in areas like politics this ritual is a real boon for through it one could even influence the masses in one's favour. However a word of caution. No Sadhana or the power of hypnotism can be used for harming others. Any such attempt would earn Divine wrath and lead to one's own downfall.

This amazing Sadhana can be started on any Sunday after 10 pm. Have a bath and wear pure white clothes and sit facing the east on a white mat. Cover a wooden seat with a white cloth and on it in a copper plate place a **Sammohan Yantra**. Offer vermilion, rice grains, flower petals on the Yantra. Then light a ghee lamp.

Then offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Next with a **Mannik rosary** chant 11 rounds of the following Mantra.

Om Hreem Surya Sammohay Hreem Om

Do this daily for 11 days. After the completion of the Sadhana drop all the articles in a river or pond.

This is a very wonderful boon from our Rishis who devised such rituals for the good of the common man. Through it one could bring about a favourable change in the attitude of one's adversaries and thus make the path to success and fame more smooth.

Sadhana Articles – 300/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

Significance of wealth in life

I had reached an age where soon I had to burden the responsibilities of life. It is a sacred tradition in our family to seek the guidance and blessings of our revered Sadgurudev before starting anything. I too thought of doing so before launching my career. But a call to Jodhpur and I came to know that Sadgurudev was engaged in some Sadhana of his own and would not meet anybody for at least a few months.

Hence I had to begin my business without his blessings. I started off with great enthusiasm and courage. I had just about settled in business when problems started coming up. First I dealt them with courage but soon the onslaughts became so frequent that I started feeling helpless before them. Within a few months my business collapsed and I was filled with great disappointment so much so that I felt like giving up everything and running away.

One day without informing anybody I left for Jodhpur and reached Sadgurudev's Ashram. But there I was told that he would emerge from Sadhana only after two months. I decided to stay there and share the work in the Ashram. The in-charge of the Ashram knew me well and he allowed me to do so. I even started wearing ochre robes meant for ascetics.

After two months Sadgurudev came out of his Sadhana room finally. He looked a bit lean. When his eyes fell on me a look of disappointment came on his features. But he did not say anything. The next day he called me and asked me why I was there. I was unable to relate my misadventures to him so he asked me to write them on a paper and give it to him. This I did and having read it he said," I did not expect such cowardly behaviour from you. You are deceiving yourself. Do you think by wearing ochre robes you shall be free from your family responsibilities? True, ascetic life is wonderful but it is not for escapists. You have to go back."

He fell silent and then continued, "I know you are facing problems but there are solutions for them in Tantra. You shall have to accomplish Lakshmi Sadhana. Maybe you do not know but even the great Guru Shankaracharya had to accomplish Lakshmi Sadhana. Otherwise how would he have been able to establish four divine spiritual seats all over India? A real man never bows down before adversities. He attains victory over them through Sadhanas if need be."

Later he made me accomplish a very special Mahalakshmi Sadhana. I returned home and restarted my business and within a year I had achieved amazing success. If today I am so wealthy, prosperous and happy it is due to that powerful ritual. With Sadgurudev's permission I am revealing it here for benefit of others.

Start this ritual on a **Wednesday.** At night after 10 pm have a bath and wear clean red clothes. Make a mark with vermilion on the forehead. Sit on a red mat facing South. Cover a wooden seat with red cloth. In a plate draw a Swastik with saffron. On it place some rose petals. On them place a **Mahalakshmi Yantra**. Light a ghee lamp. Offer vermilion, rice grains, rose petals on the Yantra. Offer prayers to Lord Ganpati chanting **Om Gam Ganpataye Namah** five times. Thereafter chant one round of Guru Mantra and pray to Guru for success. Then with a **Kamalgatta rosary** chant 51 rounds of following divine Mantra –

Om Shreem Hreem Kleem Shreem Om Phat

Do this for two days. After that drop the rosary in a river or pond and place the Yantra in your worship place or your shop or business centre. Briefly worship it daily by lighting incense and chanting the above Mantra just 11 times.

Sadhana Articles – 360/-

Most powerful divine shield

Om Ishaanah Sarvavidyanaamishwarah Sarvabhutaanaam Brahmaadhipatir Brahmannodhipatir Brahmaa Shivo Me Astu Sadaa Shivoham.

May Lord Shiva who is the Master of all divine sciences, Lord of all spirits, master of the Universe, possessor of Divine Powers and who is the Supreme known as Sachidanand always reside in my heart.

The Vedic Mantras call Lord Shiva as the Master of all beings. He is also called Adi Jagadguru or the First Spiritual Master. He is the only divine entity who is worshipped by everyone be it humans, gods, demons, Gandharvas or Kinnars or any other class of beings.

In each age all great men have worshipped Lord Shiva. Even Lord Krishna who is called Jagadguru or the Guru of the whole world worshipped Lord Shiva and acquired the Brahmastra from him which is an amazing divine shield that protects one and one's family from all dangers and perils. Lord Krishna even said in Gita, "It is due to the blessings of Lord Shiva that I go about enchanting the world with my powers."

In the age of Dwapar when Lord Krishna incarnated on the earth, sins and bad actions ruled the roost everywhere. All the Rishis, Yogis and humans prayed to Lord Krishna to save them from the demons. Heeding their fervent pleas Lord Krishna performed the Sadhana of Lord Shiva and acquired the most powerful weapons from him with which he was able to destroy the evil ones.

One of the most powerful Sadhanas of Lord Shiva performed by Lord Krishna was Brahmastra Sadhana. Yogi Veishravyanand, who is an ascetic disciple of revered Sadgurudev Paramhans Swami Nikhileshwaranand, is in possession of a very ancient text on Tantra which also contains the same Brahmastra Sadhana once performed by Lord Krishna. He very kindly let us note down the Sadhana from the fragile pages and we are producing the same here for the Sadhaks. By performing this Sadhana one could overcome the most staunch enemy and adverse situations and emerge victorious in all challenges of life. What more the powerful Mantra of this Sadhana is like an invincible shield that protects one from all dangers.

This Sadhana can be tried on **any Monday.** It should be tried in Brahma Muhurat (4 am to 6 am). Have a bath and wear yellow clothes. Cover yourself with Guru Chadar (a special protective shawl).

Sit on a yellow mat facing the East. On the floor make a square platform with sand. Place eleven mustard oil lamps around the platform. The wicks of all lamps must face the platform. With vermilion write **Om Namah Shivaay** on the platform. On it place the **Brahmastra Yantra**. Offer rice grains, vermilion and a sweet made from milk on the Yantra.

Pray to Lord Shiva, " O Lord Trayambak! Please protect me from all dangers and perils." Worship the **Siddhi Pradayak rosary** with flowers, rice grains and vermilion and wear it around your neck. Chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana. Then chant this Mantra for fifteen minutes keeping your eyes constantly fixed on the Yantra.

Om Hloum Gloum Hoom
Brahmaastraay Phat

After the Mantra chanting close your eyes and meditate for ten minutes without moving. Then again chant the above Mantra for 15 minutes keeping your eyes on the Yantra. Then chant one round of Guru Mantra. After the Sadhana tie the Yantra and rosary in a cloth and drop the bundle in a river or pond chanting the above Mantra 11 times. If tried with full faith and devotion the Sadhana helps one overcome all problems and saves one from all dangers and enemies.

Sadhana Articles – 330/-
Guru Chadar – 150/-

Laugh and dance through adversities

Can you remember when you last laughed freely or felt yourself enjoy the moments of life?

Most probably you do not recall any such moment. Modern life with its trials and travails has so crushed our spirits that we have even forgotten how to laugh, have fun and enjoy oneself.

When we talk of Sadhanas we do not mean becoming serious and not allowing even a trace of amusement on one's features. Our Rishis sure knew how to live life to the full and this is why they also devised Sadhanas that could add beauty, art, music and dance to our life. Even our Gods are not beings whose only business is to punish the evil, rather their own lives are good examples of how life ought to be lived.

And the God who is an epitome of totality is Lord Shiva whom we call not Dev (God) but Mahaadev (the greatest god). His numerous forms touch upon the various aspects of life. As Rudra he destroys the evil and as Vaidyanath he banishes ailments. He appears in so many forms that it would take many pages to write about all of them.

One of his forms is that of Natraaj – the Divine Dancer performing Taandav dance. This dance has two forms. Pralay Taandav is performed by the Lord when he destroys evil, while he breaks into Aanand Taandav when he is in a joyous mood.

Dance along with music in fact are the greatest means of expressing the joy of one's heart and soul. They uplift the spirit and make one feel light, worryless and happy. They are wonderful means of banishing the poison of worries and stress and making spring the elixir of joy and peace from within.

Aanand Taandav Sadhana of Lord Shiva is a wonderful ritual through which a Sadhak can banish boredom, laziness, indolence, worries and tensions from his life and instil into it a divine freshness. It is also an amazing ritual though which professional dancers and musicians could become skilled in their arts. I have myself seen a danseuse attain to world fame and recognition through this Sadhana which revered Sadgurudev revealed to her.

This Sadhana if you ask me is a must for every Sadhak for through it one could remain fresh, joyous and unsullied even in the poisonous atmosphere of today like a lotus that remains untainted by the mud in which it grows. Whatever one's field one could use this Sadhana to instil with oneself new enthusiasm and the drive to achieve in spite of all odds.

This Sadhana must be tried on a **Monday**.

After 9 pm in the night have a bath and wear white clothes. Sit on a white mat facing North or North East. Cover a wooden seat with white cloth. On some white flowers place **Natraj Yantra** in a copper plate. Offer on it rice grains and vermilion. Then make sixteen marks with vermilion on it chanting **Om Namah Shivaay**. Each time you make a mark contemplate that one by one the divine sixteen virtues are being instilled into your form so that you could live life to the full with joy and happiness. Light a ghee lamp. Then chant one round of Guru Mantra. Thereafter chant five rounds of this Mantra. by **Rudaksh Rosary**

Om Aanaand Taandavaay Namah

The next morning go and offer the rosary and Yantra in a temple of Lord Shiva or drop them in a river or pond. This is a Sadhana that could bring about a wonderful transformation in your life and make you dance through the problems and adversities of life. It is a ritual of offering all the poison of one's troubles in the feet of Lord Shiva and gaining from Him divine elixir that makes one capable of smiling even in the face of life's various anxieties.

Sadhana Articles – 330/-

04-05 दिसम्बर 2005

शिवत्व-लक्ष्मी साधना शिविर, मधुबनी

शिविर स्थलः उच्च विद्यालय, लौकहा, मधुबनी (बिहार)
(नेपाल-भारत सीमा पर)

आयोजकः लौकहाः गगनदेव - 062277-287280/287232 ○सरोज कुमार सिंह - 287355 ○मदन किशोर झा - 287301 ○प्रमोद जयसवाल - 287212 ○देव नारायण - 287364 ○भगवान प्रताप यादव ○हरि नारायण यादव ○बैद्यनाथ झा ○गंगाराम ○उमाशंकर प्रसाद ○बिन्देश्वर कामत ○रामनाथ झा ○**दरभंगाः** उपनंद यादव - 93349-11276 ○संजय कुमार पंकज - 93490-0619 ○देव नारायण कुमार - 93342-74326 ○बैद्यनाथ यादव - 94314-14942 ○रामनाथ महासेठ ○अभय कुमार सिंह ○डॉ. अशोक कुमार सिंह ○दीपक ठाकुर ○अरुण गुप्ता ○राम नरेश महासेठ ○कृष्णकांत शर्मा ○नन्द किशोर महतो ○मनोज कुमार साह ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

11 दिसम्बर 2005

महाविद्या धूमावती साधना शिविर, उमरगांव

शिविर स्थलः एम.एम.हाई स्कूल ग्राउण्ड, सी-बीच, उमरगांव टॉउन (गुजरात)

आयोजकः देवेन्द्र पंचाल - 094267-70084 ○मोहन भाई पटेल - 93770-00243 ○संजय शर्मा - 98241-31909 ○अखिलेश सिंह - 98251-16105 ○ईश्वर आर्ट- 98252-62272 ○जया बेन भंडारी - 93279-51341 ○सुमन भाई/प्रवीण भाई भंडारी - 0264-2340013 ○ईश्वर भाई भंडारी - 93770-06512 ○पी.जे.पटेल - 98247-33420 ○चंद्रप्रभा बेन कापड़ी - 0260-2643074 ○शंकर भाई प्रजापति - 2564244 ○माधुरी बेन - 2565007 ○राम नारायण मार्या- 2565055 ○नथ्थुलाल मालपानी - 2565054 ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

17-18 दिसम्बर 2005

दस महाविद्या साधना शिविर, झारसूगौड़ा

शिविर स्थलः मनमोहन एम.ई. स्कूल, झारसूगौडा (उड़ीसा)

आयोजकः सदानन्द पांडा - 94371-58514 ○मनोज कुमार पात्रा - 94371-66775 ○श्रीकृष्णा अग्रवाल - 93374-07571 ○अचुट्टा घुसी - 94374-20052 ○पी.के.पटनायक - 06729-220493 ○प्रमोद कुमार दास - 94373-12225 ○बिजय कुमार दास - 94373-12226 ○सत्यबेदी - 0680-2216444 ○रामपाल सेनापति - 06655-220457 ○गंगाधर महापात्रे - 94370-47584 ○मोहन लाल रिखवाणी - 94370-83282 ○पी.के.सामंतराय- 94371-84122 ○विश्वनाथ राय - 94373-06740 ○शुभांशु दास - 94371-46388 ○प्रहलाद दर्जी - 98610-94673 ○हनुमान जी ओसवाल ○राजेश कुमार - 94370-97577 ○धर्णीधर दास - 94372-61997 ○रविन्द्र पुरसेठ - 0663-2000654 ○ललित परमार - 94371-21270 ○इन्द्रजीत सिंहदेवो- 94371-26545 ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

25 दिसम्बर 2005

सौभाग्य सिद्धि साधना शिविर, उल्हासनगर

शिविर स्थलः जय बाबा लांस, नेताजी स्कूल के नजदीक, उल्हासनगर (महाराष्ट्र)

आयोजकः शीतल महाराज - 093246-78679 ○डॉ. नरेन्द्र आर. पाठक - 94233-69984 ○राजा चैनानी - 02512585813 ○श्रीमति सरोज कपूर - 02512534339 ○एस. के. मालवीय - 9423087589 ○दिनेश आर. यादव - 9423367211 ○पोपट राव चौहान - 9422078089 ○वसंत ठोसर - 9324793403 ○सविता राठौड़ - 9881441719 ○धीरेन्द्र भंडारी - 025125413607 ○विनोद टी. - 9326031296 ○आश्विन वासवानी - 9822442345 ○मितल डोंबिवली ○मनोहर पिंगले - 022256889628 (थाना) ○कृष्ण मुरारी राय ○एस.एल.ओझा - 935164356 ○ओ.पी. शर्मा - 9324563978 ○बुद्धिराम पाण्डेय (थाना) - 9819000414 ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

नववर्ष 1 जनवरी 2006

गुरु कृपा प्रदत्त पूर्णमिदः पूर्णमिदं दीक्षा

शिविर स्थल : आरोग्यधाम, गुजरात अपार्टमेंन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34,

फोनः 011-27182248, 27029044-45

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

14-15 जनवरी 2006

कायाकल्प सिद्धि सूर्य साधना शिविर

शिविर स्थलः फैक्ट्री रामलीला मैदान, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

आयोजकः सुनील कुमार टण्डन - 94507-43701 ○प्रमोद कुमार मिश्र - 05842-261732 ○अजय शुक्ला - 226451 ○माताप्रसाद श्रीवास्तव - 221512 ○रामबाबू सक्सेना - 230671 ○रामकृष्ण निखिल - 228381 ○शक्तिप्रताप सिंह - 98397-35529 ○राकेश कुमार पाण्डेय - 9839580058 ○राजेन्द्र प्रसाद - 222138 ○संजय श्रीवास्तव - 240001 ○रागिनी टण्डन - 227217 ○एम.एल.गुप्ता - 9450414380 ○

✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

इसके अतिरिक्त देह सिद्धि गुटिका के निम्न लाभ भी हैं-

- ✧ देह सिद्धि गुटिका के बारे में 'देव रत्न' में बताया गया है कि इस गुटिका के द्वारा व्यक्ति सर्वथा सुरक्षित रहता है और यह गुटिका जेब में रहती है, तो आने वाले खतरे का पूर्वानुमान लग जाता है।
- ✧ यह भी बताया है, कि इस गुटिका को अपने सिरहाने रख कर रात्रि में सो जाये और सोने से पूर्व आप जिस प्रश्न का का उत्तर जानना चाहते है उस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है।
- ✧ यदि इस गुटिका को दुकान में किसी कपड़े में बांध कर लटका दिया जाय तो दुकान की बिक्री आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है, और इस प्रकार लगातार लक्ष्मी आती ही रहती है।
- ✧ किसी तांबे के गिलास में इस गुटिका को रख दिया जाय, और उस गिलास में पानी भर दिया जाय सुबह उठने पर गिलास में से गुटिका को तो बाहर निकाल दिया जाय और पानी यदि रोगियों को पिलाया जाय तो उनके रोग समाप्त हो जाते है।
- ✧ यदि किसी को भूत प्रेत लगा हो, और उसे इस जल को पिलाया जाय तो शरीर स्थित भूत प्रेतों का उपद्रव समाप्त हो जाता है, यदि इस प्रकार के जल को घर में छिड़का जाय तो घर में किसी ने यदि कोई क्रिया या तांत्रिक प्रयोग सम्पन्न करवाया हो तो वह तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है।
- ✧ देह सिद्धि गुटिका धारण करने से शरीर की शक्ति में वृद्धि होने के साथ गृहस्थ सुख में भी वृद्धि होती है। जीवन के आनन्द में नवीनता आती है। पुरुष अथवा स्त्री जो भी इसे धारण करता है। उसे एक महीने के भीतर-भीतर अपने अन्दर अद्भुत परिवर्तन का प्रभाव देखने को मिल जाता है। मानसिक और शारीरिक तरंगों की गति तीव्र हो जाती है।

देह सिद्धि गुटिका का सिद्ध को स्वयं के लिये सिद्ध करने हेतु निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप 11 दिन तक करें।

॥ ॐ ह्रीं हूं फट् चक्रेश्वरी परत पादुका साधनं स्वर्ण देहि वज्र देहि फट्॥

देह सिद्धि गुटिका - 150/-

सम्पर्क -

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001, (राजस्थान)
फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2003-05
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2003-05

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 29-30 every Month

माह : दिसम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
9-10-11 दिसम्बर

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक
29-30-31 दिसम्बर

वर्ष - 25

अंक - 11

:: संपर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209,2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010

सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेली फैक्स 11-27196700